इसके अन्तर्गत छः मचकियां हैं—

प्रथम मचकी— इसमें उपदेश, विनय और ज्ञानरसात्मक भजन दियेगये हैं ।

द्वितीय मचकी— इसमें प्रेम, शृंगार और बिरहरसात्मक भजन दियेगये हैं ।

तृतीय मचकी— इसमें प्रेमपीयूष अर्थात् प्रेमके भेद और उनके लक्षण, एवं रसोंके व्याख्यान सहित दोहा और कवित्तोंमें कथन कियेगये हैं जिनके पढ़नेसे भगवच्चरणानुरागियोंके हृदयमें प्रेमकी वृद्धि अवश्य होवेगी ।

चतुर्थ मचकी— इसमें भगवान्‌की नख-शिख शोभाका वर्णन सवैयामें कियागया है ।

पंचम मचकी— इसमें फारसी और उर्दूके पद्य अंकित कियेगये हैं । जिसे मुसलमान भी अपने हाल कालके समय कव्वालीमें गान करसकते हैं ।

षष्ठम मचकी— इसमें अंग्रेजी काव्य (Poetical Composition) हैं जो भजनके स्वरूपमें दियेगये हैं ।

श्री १०८ स्वामी हंसस्वरूपजी महाराज।

॥ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ॥

हंसहिंडोल।

पहिली मचकी।

(उपदेश, विनय और ज्ञान)

इन्द्रवंशा

तस्यैव भासा सुविभाति भास्कर-
स्तस्यैव भासा हुतभुग्विभासते।
तस्यैव भासा निशि राजते शशी
तस्यैव भासा चपलाश्चकासति ॥ १ ॥

वसंततिलका

मन्दारमल्लिमकरन्दसुलुब्धभृङ्गः
प्रोत्कण्ठिताः सुमुदिरध्वनिभिर्मयूराः।
वीणारवेण विगतक्रियगन्धवाहा
माद्यन्ति वेणुरणितेन + वलेन भक्ताः ॥ २ ॥

+ वलदेवेन। कृष्णाग्रजेन। वलवीरेण। हलधरेण।

केयूर चुम्बितमनोहरबाहुयुग्मं
अङ्कार्पितं भवति कण्ठतटे स्वमातुः ।
दुःखं विनाशयति संयतशृङ्खलायाः
जाने कदा तदिह माल्यति हंसकण्ठे ॥ ३ ॥

रेखां ललाटपटले हरिचन्दनीया-
मालोक्य भानुकिरणा लघुतां प्रयाताः ।
तिष्ठन्ति नैव धरणौ निवसन्ति दूरे
गच्छन्ति रात्रिसमये वितले तले ते ॥ ४ ॥

शिखरणी

विराजन्ते केशा जगदधिपतेर्बाहुयुगले
यथा भृङ्गा अम्भोरुहसुभगनालेषु लसिताः ।
कपोलस्वेदांस्तानतिनिपुणमास्वाद्य च निजाम्
प्रतीहासस्यैकावलय इति शंसन्ति नियतिम् ॥ ५

वसन्ततिलका

हे ! हे ! सखे मदनमोहन चारुलीला
वृन्दावने रविसुतापुलिने सुरम्ये ।
गोपीसमूहकलिता ललिताविशाखा
वादित्रवृन्दलसिता मुदमातनोतु ॥ ६ ॥

मुक्तो येन गजेन्द्र आशु जलधौ ग्राहाननाद्भीषणाद्
येनाधारि कनिष्ठिकां गिरिवरो गोवर्द्धनो गोकुले ।
नद्धो येन करालदंष्ट्रभुजगः सूर्य्यात्मजाया जले
तेनैवातकरेण नाथ ! कृपया हंसस्य दोर्गृह्यताम् ॥ ७

हिंडोले नामके तुम झूलहु सन्त सुजान ॥ ध्रुव०

धर्ममोक्षके खम्भ दाहिने बाँयें अर्थ अरु काम ।
रत्नजटित ये चारों खम्भे झूलत अतिहि ललाम ॥
हिंडोले० ॥ १ ॥

र. अ. म. त्रिविध समीर वह शीतल मन्द सुगन्ध ।
झूलत ही *त्रय-ताप नशावत मेटत संसृतिबन्ध ॥
हिंडोले० ॥ २ ॥

×परा,प्रेमाकी पडति मचकियां पटली भक्ति लगी ।
उमडत नेह मेह अति सुन्दर स्वाती प्रीति पगी ॥
हिंडोले० ॥ ३ ॥

+त्रिविधमन्त्रजप भक्तनसुख जनु सारँग *सारँग बोल
श्री बलवीरचरणरज शिर धरि विरचत हंसहिंडोल ॥
हिंडोले० ॥ ४ ॥

---

* आध्यात्मिक । आधिभौतिक । आधिदैविक ।

× भक्तिके दो भेद हैं परा और प्रेमा। प्रमाण— सा परानुरक्तिरीश्वरे ।

सम्यमसृणितस्वान्तो ममत्वातिशयांकितः ।
भावः स एव सान्द्रात्मा बुधैः प्रेमा निगद्यते ॥

+ वाचिक, उपांशु और मानस। * मोरे, राग ।

जगतहिंडोलने देखो झूलत सकल जहान। ध्रुव

तैंतिस कोटि तीन तहँ झूलत झूलत रवि अरु चन्द।
योगी जपी तपी सन्न्यासी झूलत मन्दे मन्द॥
जगत०॥ १॥

ब्रह्मलोक ब्रह्मा दे मचकी शेष देत पाताल।
पांच पुरुष मायाकी पटली पकडि झुलावत काल॥
जगत०॥ २॥

चार खानिके चार खम्भ हैं लख-चौरासी झूल।
छिन नीचे छिन ऊपर जावें कर्म शुभाशुभ मूल॥
जगत०॥ ३॥

यह झूला स्थिर नहिं कबहूं उत्पति नाश झकोर।
हंस प्रेमका झूला झूले संगी नन्दकिशोर॥
जगत०॥ ४॥

प्रभु मैं तीन तापते तायो। ध्रुव

आत्मिक दैविक भौतिक मिलि मोहि भूनि कबाब बनायो।
प्रभु मैं०॥ १॥

अहंकार अति तीव्र अनलमहँ ईंधन कर्म लगायो।
चिन्ता तई चढी चित चूल्हे लोभ लहर लहकायो॥
प्रभु मैं०॥ २॥

मोह-घृत ममताकी मिरची काम-कपूर मिलायो।
क्रोधको कोयलो छिन-छिन दै कै अधिक-अधिक डहकायो॥
प्रभु मैं०॥ ३॥
काल कलेवा करण ताहिको मुख फैलाये धायो।
त्राहि-त्राहि प्रभु मोहि बचाओ हंस शरण चलि आयो॥
प्रभु० मैं०॥ ४॥

—०—

माधव! मो समान मतिहीनो। ध्रुव
हुयेउ न कबहूँ होनिहु नाहिन अघसागरको मीनो।
माधव०॥ १॥
पतितनमें सरदार जानिये दीननमें अति दीनो।
परमारथको पन्थ न जानेउँ स्वारथमें नित लीनो॥
माधव०॥ २॥
पर अघ सुनेउँ सहस-दस कानन पर अपयश मुख कीनो।
परकी फुली निरेखि मन हरषेउ निज टेटर नहिं चीन्हों॥
माधव०॥ ३॥
स्थिर ह्वै हरिनाम न लीनो संगत चित्त न दीनो।
निशि-वासर अरु छिन-छिन पल-पल रहेउँ विषयरस-भीनो॥ माधव०॥ ४॥

कलिमल-ग्रसित +धर्मध्वज ❀धन्धक अन्तर महामलीनो।
हंसस्वरूप तरै तो जानिय तारनहार प्रवीनो॥
माधव० ॥ ५ ॥

—❀—

भवसिन्धुके खेवैया मेरी नैया लगा किनारे ॥ ध्रुव
मस्तूल कटगयो है अरु पाल फटगयो है।
करवार करसे छुटेउ पतवार वीच टुटेउ ॥ भव० ॥ १ ॥
है रैन यह अँधारी उमडी घटा है कारी।
तूफान देखूँ भारी अब जानो तुम मुरारि ॥ भव० ॥ २॥
भयके भँवरमें पटकी मझ धार नाव अटकी।
केवट न दूजा कोई तुम विन हमारा होई ॥ भव० ॥ ३ ॥
अब तीर तुम लगादो भव-भीरको भगादो।
सब मेटदो झमेला यह हंस है अकेला ॥ भव० ॥४ ॥

—❀—

कृपासिन्धु सुखनिधान दीननदुख-हरण जान शरण आयउ तेरी। ध्रुव
बूडत भवनिधि गँभीर देखि दया लागि दियो मानुष-शरीर पार उतरनकी बेरी ॥ कृपा० ॥ १ ॥

+ धर्मध्वज=पाखण्डी।

❀ धन्धक= गाडी वा उसकी धुरी।

सूझत नहिं वार पार तुमहि एक कर्णधार नैया लगाओ
पार करहु नाहिं देरी॥ कृपा० ॥ २ ॥
हंसस्वरूप रंक तोहि एक भूप जानै, लीजिये समय विचारि
राखि लाज मेरी॥ ⊛ कृपा० ॥ ३ ॥

—⊛—

माधवपद-कंज मधुप हो रहिये ॥ ध्रु० ॥
मधुर-मधुर रस पीजे छिन-छिन हियते दृढ करि
गहिये ॥ माधव० १ ॥
जेहि परसे मुनि-नारि तरी अरु वही जहांते गंग।
जेहि अवतरे तरे भालु कपि जेहि परसि तरे सरभंग।
माधव० ॥ २ ॥
जो पद पड़ेउ पीठ बलि राजा जेहि ध्यावैं सन्त
सुजान।
जेहिपद परसे अवधनिवासिन स्वर्गहि किये पयान॥
माधव० ॥ ३ ॥
जेहि पद कहँ निज जटा छुआयो नन्दभवन
शिव आय।

⊛ इस भजनको मालकोशमें गाना चाहिये।

सरभंग=ऋषिका नाम है जिन्होंने वनवासमें श्री रघुकुल-मणिका दर्शन करके उनके मुखारविन्दका रस पान करते-करते अपना शरीर छोड़दिया। (तुलसीकृत रामायण)

जेहि पद धोयन पिये निषादा कुल समेत तरिजाय ॥
माधव० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप ढूँढ सोई पद, कर सोई पद मीत ।
निशि-वासर सेवहु सोई पद, सोइ पद तेरो मीत ॥
माधव० ॥ ५ ॥

माधव हरत न क्यों भवभीरो ॥ ध्रु ॥
भवनिधि अति गँभीर थाह नहिं, सूझत नहिं कहु तीरो ॥
माधव हरत० ॥ १ ॥
औघट घटिया भूलि परेउ नहिं नाव न खेवनहार ।
नदिया उलटी धार वहतु है * भाठा ह्वैगयो सीरो ।
माधव हरत० ॥ २ ॥
झंझट झंखर भूमि झकोरत केहिविधि उतरूं पार ।
आरत पार करैया तुमही वेदन देत लकीरो ॥
माधव हरत० ॥ ३ ॥
गणिका गिद्ध अजामिल शवरी गोपिन पार उतारेउ ।
हंसस्वरूप किनारे छाडेउ काहे भई तकसीरो ।
माधव हरत० ॥ ४ ॥

* भाठा=ठेठ हिन्दीमें सागर वा सरिताके उतारको कहते हैं और सीरा चढावको कहते हैं ।

हरि हरि क्यों न रटत रे मूढ ॥ ध्रुव ॥
हरिहिं रटे तेरो काज सरैगो सुनले वतियां गूढ ॥
हरि हरि० ॥ १ ॥
नारद रटेउ, रटेउ सनकादिक और रटेउ प्रहलाद ।
वाल्मीक उलटी रट लाई सोइ रट अनहद नाद ॥
हरि हरि० ॥ २ ॥
स्वाती हित जस रटत पपीहा मोर रटत घन घोर ।
ऐसी रट जो रटै दिवस-निशि तेहिं रट नन्दकिशोर ॥
हरि हरि० ॥ ३ ॥
चारों वेद रटत जेहिं थाके नेति-नेति कर गान ।
पुनि-पुनि रटत पुराण अष्ट-दश बहुविधि करत बखान ॥
हरि हरि० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप रटहु चितलाई रटि दिन करहु वितीत ।
रोम २ को छूट विकारो रसना होत पुनीत ॥
हरि हरि० ॥ ५ ॥

—॰—

माधव अब थकिगे सब अंग ॥ ध्रुव ॥
चलत २ थाकीं दुहु पैयां करत २ दोउ हाथ ।
चिन्ता करत चित्त अरु देवी देव नवावत माथ ॥
माधव० ॥ १ ॥

पै जबलों हरि रीझै नाहिंन तबलों नाहिं उबार ॥
माया० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप हरि-पद जो डूबै मोती नाम लहे ।
अर्थ धर्म कामादिक पावै छूटैं सकल विकार ॥
माया० ॥ ५ ॥

हरि-हरि कहत बिताओ समैया ॥ ध्रुव ॥
भक्तनको हरि ऐसे पालत बछवा पालत है जस गैया ।
हरि हरि० ॥ १ ॥
हरिपद रस अस मीठो जानो बालक जानत जैसे मिठैया ।
हरि हरि० ॥ २ ॥
एक दिन काल पकडि लै जैहै जस चुहिया लैजात बिलैया ।
हरि हरि० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप चेत करु प्यारे मुखते कहु नित कुंअर कन्हैया ।
हरि हरि० ॥ ४ ॥

तेरा प्यारा तेरे संग तू हेरे क्या बन २ में रे ॥ ध्रुव ॥
ले उठा परदा दुईका देख इक चितवनमें रे ।
तेरा प्यारा० ॥ १ ॥

होवे हिन्दू या मुसलमां होवे ईसाई यहूद ।
रमरहा घट २ में प्यारा तू रमरहा सब तनमें रे ।
तेरा प्यारा० ॥ २ ॥
हर पातमें हर डालमें हर फलमें वह हर फूलमें ।
हर गुञ्चेमें गुञ्चादहन हर खेलमें हर फनमें रे ।
तेरा प्यारा० ॥ ३ ॥
*अब्रमें धमका कहीं और ×बर्कमें चमका कहीं ।
आग कहीं बाग कहीं जीता कहीं है रागमें रे ।
तेरा प्यारा० ॥ ४ ॥
ज़ाहिर औ बातिनको करले एक रंग हंसस्वरूप ।
ले बसा दिलबरको अपने दिलके तू +मसकनमें रे ।
तेरा प्यारा० ॥ ५ ॥

—०—

केशव तुम कितने ÷शव तारे ॥ ध्रुव ॥
गीधाको शव व्याधाको शव शव शबरीहिं उधारे ।
केशव० ॥ १ ॥
तारेउ शव कृकला भयंकर शव गजराज उबारे ।
केशव० ॥ २ ॥

---

* अब्र=बादल × बर्क=बिजली, + मसकन=रहनेकी जगह
÷ शव=लाश

कोटिन शव करि कृपा किये तुम भवनिधि केर किनारे।
केशव० ॥ ३ ॥
रहिगयो एक हंसस्वरूप शव केहिं अपराध विसारे।
केशव० ॥ ४ ॥

—❁—

तू तो काम न आया काहूके ॥ ध्रुव ॥
काहूको चर्म मांस काहूको काहूको हाड कमावे।
तेरो तन कछु काम न आवे चिता मांह जलजावे ॥
तू तो० ॥ १ ॥
मातु पिता ऋषि देवनके ऋण रहिगये तेरे सीस।
और अनेकनका तू ऋणिया साथ नहीं दस बीस ॥
तू तो० ॥ २ ॥
उदर कमाई निश-दिन कीन्हीं स्वारथ पेट भरेउ।
परमारथ पथ चढेउ न कबहूँ कौडी लागि मरेउ ॥
तू तो० ॥ ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप करहु चेत अब सिरपर आयउ काल।
तीन जनाके काममें अइहौ कूकर कागा श्याल ॥
तू तो काम न आया काहूके ॥ ४ ॥

योगिया रे तोहिं योग करत दिन बीते ॥ ध्रुव ॥

राजयोग हठयोग किये तू मंत्रयोग लययोग ।
प्रेमयोग सीखेउ नहिं योगी अन्त चला उठि रीते ॥
योगिया रे० ॥ १ ॥

लख चौरासी आसन साधेउ मुद्रा नाद गँभीर ।
श्वासा लै चढ़िगयेउ गगनपर चित चंचल नहिं जीते ॥
योगिया रे० ॥ २ ॥

दशम द्वार खोलेयउ तुम योगी मुक्ति करी तुम लाभ ।
भक्ति सहेलिन मर्मन जानेउ हरि न गहेउ तुम हीते ॥
योगिया रे० ॥ ३ ॥

लघिमा महिमाके अभिलाषी है चित साधे योग ।
हंसस्वरूपहिं × अष्टसिद्धि सुख बिनु हरि लागत तीते ॥
योगिया रे तोहिं योग करत० ॥ ४ ॥

× अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ।
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्ट सिद्धयः ॥

१. अणिमा, २. महिमा, ३. गरिमा, ४. लघिमा, ५. प्राप्तिः ६. प्राकाम्य, ७. ईशित्व और ८. वशित्व ये आठ प्रकारकी सिद्धियां हैं ।

गठरी बांधो रे मुसाफिर बजता कूंचका नगारा ॥ ध्रुव ॥
पापपुण्यकी गठरी बांधी सब मिल भा मन एक ।
हौली गठरी करले पथुआ गहिले गांठ विवेक ॥
गठरी० ॥ १ ॥
लख चौरासी कोसके थाके सिरेपर बोझा भारी ।
जगत सरामें जागे रहियो है या रैनि अँधारी ॥
गठरी० ॥ २ ॥
बटमारे बहु फिरते या में लूटें सारी रात ।
इनतें बिनती करो हजारों सुनें न तेरी बात ॥
गठरी० ॥ ३ ॥
तीन पहर निद्रा में बीते रहिगइ चौथी पहरी ।
बांधो कमर उठाओ विस्तर त्यागो सेज सुनहरी॥
गठरी० ॥ ४ ॥
अद्भुत नारी बसती यां पै धन सर्वस ठगि लेत ।
हंसस्वरूप बचे जो या तें तेहि हरि दर्शन देत ॥
गठरी० ॥ ५ ॥

—❀—

रह गई कितनी दूर रे बटोही सैयांकी नगरिया ॥ ध्रुव ॥
लख चौरासी कोससे आई बीचे भूलि डगरिया ॥
रे बटोही० ॥ १ ॥

सँगकी सहेलिन छूटगई सब चौरस्ता भुतलान ।
पांव फफोले परिगये सारे कंटक फाटी चुनरिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ २ ॥
घरसे औचक निकलपडी मैं सासु ननद नहिं मान ।
भूषण बसन त्याग मैं दीन्हेउ कर लयी पियाकी पगडिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ ३ ॥
हाथ कमण्डल रेशम डोरी गंगाजल भरलायी ।
धोऊँगी पद पद्म मनोहर देखूंगी एक नजरिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप न जैहो उनपै वे हैं परम कठोर ।
चढत अटरिया धरि झकझोरत नीचे करत रगरिया ॥
॥ रे बटोही० ॥ ५ ॥

—०—

काह भयउ मृगराजहिं मारे जो नहिं मारेउ मन रे मीता ।
॥ धृ० ॥
काहभयो चहुं वेद पढे तोहिं काह भयउ पढि भगद्गीता ।
॥ काह भयउ० ॥ १ ॥
रणमें पैठ वीर बहु मारेउ तोडेउ गढ करि तोप पलीता ।
काबुल कन्दहार कहँ जीतेउ सब मिथ्या जो मन नहिं जीता ।
॥ काह भयउ० ॥२॥

देवी देव किये वश तूने मन वश नहिं तो सब विपरीता।
चितचंचल कछु करनदेत नहिं ऐसे कहत सुनंत दिनबीता॥
॥ कहा भयउ० ॥ ३ ॥
बानर कीर समान फँसेउ अरु नित्य मरत तू यमभयभीता।
हंस तनिक थिर आपुहिं करले भजले लखन राम अरु सीता॥
॥ काह भयउ० ॥ ४ ॥

—⊛—

हे बुधजन बुद्धिको मोल नहीं ॥ ध्रुव ॥

सब तारनमें बोल बजतु हैं तानपुरेको बोल नहीं॥
हे बुधजन० ॥ १ ॥

कंचन रूपा मणि माणिक अरु लाल पिरोजा हीर।
सब रतननको कांटे तोलत बुद्धिरत्नको तोल नहीं।
हे बुधजन० ॥ २ ॥

बुद्धिमान चुप बैठ रहत हैं बुद्धिहीन कर शोर।
रीतो घट बोलत बहुतेरो पूरो करत कलोल नहीं।
हे बुधजन० ॥ ३ ॥

हंस देखु आपुहिं फैलत है चहुं दिशि मलया गन्ध।
तेहिं समीप तेहि गन्ध प्रचारन कोउ बजावत ढोल नहीं॥
हे बुधजन० ॥ ४ ॥

तू कौन कहांसे आया रे ।
॥ ध्रुव ॥

नंगा आया खाली आया संगन कछु तू लाया रे ।
॥ तू कौन० ॥ १ ॥

कितेक मास तू नरककुण्डमें उलटो कियो निवास ।
कौल कियो हरिसों बहुतेरो तब अपान तोहिं जाया रे ॥
॥ तू कौन ० २ ॥

रहा मुसाफिर भटक पन्थमें अटक औरके संग ।
रहना है यां दिना चार क्यों रंगमहल बनवाया रे ॥
॥ तू कौन० ॥ ३ ॥

तू है बासी अलखदेशका जहँ ज्योति बिना रवि चन्द ।
ताहि त्याग तू जगत् सरामें क्यों अचेत चलिआया रे ॥
॥ तू कौन० ४ ॥

हंसस्वरूप चलहु घर अब दुख बरसत मूसलधार ।
हिय कर गहि अब करो सीस निज हरिचरणनकी छाया रे ॥
॥ तू कौन० ॥ ५ ॥

देखहु काल सीसपै नाचै ।
॥ ध्रुव ॥

सोइ चतुरो जो हरिसों रांचै ॥
॥ देखहु० ॥ १ ॥

योगी जपी तपी संन्यासी राजा रंक फकीर ।
औघट कठिन झपेटो याको याते कोउ नहिं बांचै ॥
॥ देखहु० ॥ २ ॥

जल बुदबुद चणमांह नशै जस तैसे तू नशिजाय ।
चेत अचेत रहो जनि याते जानहु काया कांचै ।
॥ देखहु० ॥ ३ ॥

स्वपनेमें जस स्वपना दीसत तैसे आपुहिं जान ।
अखिल जगत जानहु तुम मिथ्या रामनाम इक सांचै ॥
॥ देखहु० ॥

हंसस्वरूप गहै जो हरिको रहे चरण लपटाय ।
अमर होय पूरो पद पावै फिर कछु कतहु न जांचे ।
॥ देखहु० ॥ ५ ॥

—❀—

मोह–निशाका सोवन हारा जागु २ अब छाडु
सेजरिया ॥ १ ॥
सतगुरु पाहरु ठाढ पुकारत अलसानेउ क्यों खोलु
किवड़िया ॥ २ ॥

पांच चोर कायागढ पैठे लूटत हैं नित ज्ञानगठरिया ॥ ३
बार-बार तोहिं हंस चितावै लेहु बचा हरिनामपिटरिया
॥ ४ ॥

सूझत नाहिं डगरिया री निपट गँवारी मतवारी ॥ ध्रुव ॥
मोहनिशाकी निंदिया सोवत बीती रैन सिगरियारी ॥
॥ निपट० ॥ १ ॥
सतगुरु मितवा मोहिं बतादे पिय बसे कौन नगरियारी ॥
॥ निपट० ॥ २ ॥
उर जाके बैजन्ती माला शिर सोहै टेढी पगडियारी ॥
॥ निपट० ३ ॥
भक्ति मुक्ति दोउ सखियन सँग लिये खेलत होयहैं जुआसारियारी ।
॥ निपट० ॥ ४ ॥
हंस कहत हठि प्रेमपंथ गहु मिलिहैं तोहिं सांवरियारी ।
॥ निपट० ॥ ५ ॥

फूटी तोरी गगरियारी निपट अनारी पनिहारी ॥ ध्रुव ॥
ऊर्धमुख कुइँया जल कैसे भरोगी उलझी हाथ रसरिया री ॥
॥ निपट० १ ॥
ईडा पिंगला सुषुमन सखियां मति करु वाट रगरिया री ।
॥ निपट० ॥ २ ॥

भक्ति मुक्ति घर सास ननदिया हेरत होइहैं डगरिया री ।
॥ निपट० ॥ ३ ॥
हंस कहत सखि संग जोरले अपनी चुनरिया पियाकी पगडियारी ॥
॥ निपट० ॥ ४ ॥

जागिये व्रजराज कुंवर लाडिले जागिये जी ॥ ध्रुव

तारागण मलिन भयो, चन्दा निज भवन गयो, कमलनैन खोल हियो भक्तन अनुरागिये जी ।
॥ जागिये० ॥ १
उरझी लटुरी सुधार, काछनी कटि दूं सँवार, निकसि द्वार, सहित प्यार, सखनि प्रेम पागिये जी ॥
॥ जागिये० ॥ २ ॥
यमुनाके सुभग तीर, शीतल बहे जँद समीर, हाथ लेइ लकुट वीर, गउअन सँग लागिये जी ॥
॥ जागिये० ॥ ३ ॥
शमन शिशुपाल कंस, हिमकरवंशावतंस, विरही हंसस्वरूप छणिक नहिं त्यागिये जी ॥
जागिये० ॥ ४॥

धीरे २ पगधरु सैंयाकी डगरिया सोई मग चलु जेहिं गुरुजन गयऊ॥
॥ ध्रुव ॥

करु स्नान नेहनीरके सागरमें सोई डूबदेहु जेहि सज्जन दयऊ ॥
॥ धीरे ० ॥ २ ॥

करिलेहु सोरहों शृंगार पहिरु सुश्रामारी चलु २ अवतो विलंब वहु भयऊ ॥
॥ धीरे ० ॥ ३ ॥

प्रेमको अञ्जन सारु दोउ नयननि लेहु शलाका जेहिं मुनिगन लयऊ ॥
॥ धीरे ० ॥ ४ ॥

हंसस्वरूप दीने भेट नटनागर देखतही दुख सकल विलयऊ।
॥ धीरे ० ॥ ५ ॥

—०—

सो घर जान मसान प्रेम नहिं जामें आयो रे ।
फीको सोई पक्वान प्रेम नहिं जामें आयो रे।
तेहि नहिं कहहु सुजान प्रेम नहिं जामें आयो रे ।
पशु समान तेहि जान प्रेम नहिं जामें आयो रे ।
हंस त्याग सोई प्राण प्रेम नहिं जामें आयो रे ॥

—०—

पहेली बूझो सन्त सुजान ॥ ध्रुव ॥

तीन धार इक ठौर बहत हैं दो हैं सूखी साखी ।
तीजीमें पानी नहिं दीसत ताका करूँ बखान ॥
पहेली बूझो सन्त सुजान ॥ १ ॥ (ब्रह्म, माया, जीव)

वार पार कछु ताको नाहिंन नहिं नौका नहिं बेरो ।
है अथाह थाह नहिं तामें तैरे तीन जवान ॥
॥ पहेली० ॥ २ ॥ (मन, बुद्धि, अहंकार)

जाका नहीं निशान सो चतुरा ग्राम बसाये तीन ।
दो तो इनमें उजडे पुजडे इकका नहीं ठिकान ॥
॥ पहेली० ॥ ३ ॥ (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति)

जाका नहीं ठिकान सो तामें बसिगये तीन कुम्हार ।
दो तो इनमें लूल्हे लाल्हे तीजा बिनु कर जान ॥
पहेली० ॥ ४ ॥ (स्थूल, सूक्ष्म, कारण)

जो बिनु करका कुम्हरा भाई गढली हांडी तीन ।
दो तो इनमें फूटी फाटी इक बिनु पेंद पुरान ॥
॥ पहेली० ॥ ५ ॥ (स्वर्ग, मर्त्य, पाताल)

बिना पेंदकी हांडीमें तहं रांधेउ चावल तीन ।
दो रहिगे तहं उछल कूदके इक न पके पकवान ॥
पहेली० ॥ ६ ॥ (सुकृत, दुष्कृत, ज्ञान)

जो न पके पकवान सो तामें नेवतेउ पाहुन तीन।
दो इनमें तो रूठ रहे घर, एक मनाये न मान ॥
॥ पहेली० ॥ ७॥ (जीवन्मुक्ति, विदेहमुक्ति, निर्वाण)

हंसस्वरूप चलो सतगुरु पहँ समझ लेहु सब भेद।
यह त्रिकुटी जो बूझे समझे सोइ विद्वान् महान् ॥
पहेली० ॥ ८ ॥

—०—

तेरा संगी जगत्में कोई नहीं ॥ ध्रुव ॥

हरि-चरणनमें प्रीति न लायी, भक्ति सेजरिया सोयी नहीं।
तेरा० ॥ १ ॥
नेह-नीरको भरि-भरि सजनी, काया गुदरिया धोयी नहीं।
तेरा० ॥ २ ॥
कहत हंस सखि प्रेम न कीन्हेउ, श्याम-विरहमें रोयी नहीं।
तेरा संगी जगतमें कोई नहीं ॥ ३ ॥

—०—

मैंने देखी जगत्की रीत ॥ ध्रुव० ॥

अपने बिगाने सबहि परेखेउ सब स्वारथके मीत।
मैंने० ॥ १ ॥

जब कछु पावत स्तुति ठानत कहत बाप अरु माय ।
जो इक दिन कछु इनहिं न दीजे होजावें विपरीत ॥
मैंने० ॥ २ ॥
इनपै कछु विश्वास न कीजे रेहिये इनसे दूर ।
हंसस्वरूप तजि संगति इनकी हरिसों करिये प्रीत ॥
मैंने० ॥ ३ ॥

—※—

प्यारे अब भो विलम्ब बडो ।
संगकी सहेलिनि छूटिगईं सब मारग भूलि पडो ।
बहु बटमारे बसें याहि मग लूटत करि रगडो ॥
पूंजी पासकी छीनिगयी सब सङ्ग न एक दमडो ।
कस निबहै पाथेय पन्थ जहँ कर्मनिको झगडो ।
हंसस्वरूप रूप मधुरी पै घर आंगन छोडो ॥

—※—

गगन फुलवरिया फूलत फूल हजारा । हो रामा ।
अनहद कोकिल कुहक सुनावत बरसत अमृत धारा । हो रामा ।
गगन० ॥ १ ॥
डार-डारमें पात-पातमें झलकत मोहन प्यारा । हो रामा ।
सोहं हंस अहर्निशि मानस मोर करत गुंजारा । हो रामा ।
गगन० ॥ २ ॥

हंसस्वरूप रमि रहो यहां ही सकल द्वन्द्वतें न्यारा। हो रामा।
गगन० ॥ ३ ॥

—❁—

नाथ अनाथनकी सुधि लीजे।

तुम विन दीन दुखित, हैं मुनिजन, वेग कृपा अब कीजे॥
नाथ० ॥ १ ॥
डूबत हैं मझधार विपतिके, कर गहि पार करीजे॥ नाथ० ॥ २ ॥
कर लेने लंकेश पठायो, रुधिर काढि अब दीजे॥ नाथ० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप शरणागत आयो, चित चाहे सो कीजे।
नाथ० ॥ ४ ॥

—❁—

क्यों हमरे हित धावत नाहीं॥

अर्जुन हित धायो तू रनमें द्रुपदा हित धायो पलमाहीं।
क्यों० ॥ १ ॥
गज हित धायो हरि क्षणमें तुम मुक्त कियो गहि निज बलवांहीं।
क्यों० ॥ २ ॥
देवन हित धायो गढ लंका धावत तुमरे पग न पिराहीं।
क्यों० ॥ ३ ॥

भक्तन हित धावत तुम जहँ तहँ धावत ही दिन रैन सिराहीं
क्यों० ॥ ४ ॥
हंसहेतु यदि नहिं धावहुगे जानहु देह प्राण बिलगाहीं ।
क्यों० ॥ ५ ॥

—●—

तू रखवारा सांचा सांई तू रखवारा सांचा रे ॥
निशि जागे जो निज रखवारी करै सो मनका कांचा रे ॥ तू० ॥ १
भारतमें भरदूल अंड गजघंटके नीचे बांचा रे ।
गजराज ग्राह मुख दौडि बचायो मंजारहिं आवा आंचा रे ।
तू रखवारा० ॥ २ ॥
सुनि-सुनि विविधभांति रखवारी मोकहँ अचरज लागे ।
व्याधा-बाण कपोत बचेउ प्रह्लाद हुतासन नांचा रे ॥
तू रखववारा ॥ ३ ॥
तव रखवारी चोर न चोरैं बटमारें फिरजावें ।
हंसस्वरूप सची रखवारी, देख मीत मन रांचा रे ॥
तू रखवारा० ॥ ४ ॥

—●—

छाडि चरण कहां जाऊं रे बालम ।
और को सुनि है पीर परायी काको विपति सुनाऊं ।
रे बालम० ॥ १ ॥

सुर नर कोउ परमारथ नाहिन, कहां २ भरम गवाऊं।
रे बालम० ॥ २ ॥
छण २ तेरे हि नामकी सुक्ता, चुगि २ दिवस बिताऊं।
रे बालम० ॥ ३ ॥
हंस कहत तू मेरो कहावे, मैं तेरो कहलाऊं।
रे बालम० ॥ ४ ॥

साधो! मन नहिं जीतो जाय ॥ ध्रुव ॥

कोटि यत्न करि पचि-पचि मरिये करिये लाख उपाय ॥
साधो० ॥ १ ॥
देव दनुज गन्धर्व जीत पुनि यमपुर जीतेउ धाय।
कालहु जीतिलेइ इक छिनमें इन्द्रहु लेइ बँधाय। ॥२॥
गिरि सुमेरु कहँ चूर करै कोउ सप्त सिंधु पीजाय।
विष सनूह करिलेइ कलेवा सर्पनि लेइ डसाय ॥ ३ ॥
वर्ष सहस दस बनमें बसिके सूखी पत्ती खाय।
छुधा पिपासा तृष्णा जीतै अङ्ग अङ्ग गलिजाय ॥ ४॥
सतगुरु कृपा बीर बिरला कोउ जो याको बशलाये।
धन्य २ सोइ सन्त जगतमें हंस ताहि बलिजाय ॥ ५ ॥

रामहिं रमहु रमैया, तेरी बीती जाति समैया।
पुरुषारथ पथ पग धरु प्यारे, पूरी करहु कमैया ॥

जग नातो कछु काम न आवे, ससुरो सास जमैया ।
भवसागर अपार सरिता बह, जहँ चौडो नाहिं लवैया ॥
वार पार नहिं दीसत जाको, डूब घनेरी नैया ।
जो कोउ नाथ शरण चलि आवै ब्राह्मण काह कसैया ॥
मेटत कोटि जन्म अघ क्षणमें, पतितन पाप नशैया ।
हंसस्वरूपके हिया बसहु अब, ÷ राम कृष्ण दोउ भैया ॥

—❁—

सुनिये नाथ विनय मोरि तनक चित्त लायी ।
सहूँहूँ जो विपत्ति घोर तोहि दूँ सुनायी ॥
मायाकी घोर धार सूझत नहिं वारपार,
जानत नहिं, हूं गँवार तरनकी उपायी ।
सुनिये नाथ० ॥ १ ॥
जलचर कहु काम क्रोध मत्सर अभिमान मोह,
ग्रसत मोहि जोह २ कीजिये सहायी ।
सुनिये नाथ० ॥ २ ॥
कहा कहुं दीननाह होत नाहिं अब निबाह,
ग्रसन चहत विषय ग्राह लीजिये छुडायी ।
सुनिये नाथ० ॥ ३ ॥
भक्तन सन्ताप हरन दीनन दुखदाप दरन,
हंस गहत युगल चरण भवनिधि तरिजायी ।
सुनिये नाथ० ॥ ४ ॥

÷ यहां रामसे बलराम समझना ।

जब तुम प्रेरक विधि निषेधके फिर क्यों मोहिं झकझोरत.
अहहु खेवैया भवनिधिके फिर मांझधार क्यों बोरत ॥
जब तुम० ॥ १ ॥
प्रेमिनके तुम प्रेम निवाहत अस कहँ वेद पुराण।
लगनलगी जोरत सबहीकी फिर मेरी क्यों तोरत ॥
जब तुम० ॥ २ ॥
मैं नहिं चाहूं ब्रह्मलोकसुख मुक्तिहुकी नहिं चाह ।
क्षण २ पल २ बितै मोर पदपंकज-रजहिं बटोरत ॥
॥ जब तुम० ३ ॥
धर्म जाहु परलोक नशै अरु निन्दित नीच कहाऊँ।
हंसस्वरूप कहावै तुमरो यह करजोर निहोरत ॥
जब तुम० ॥ ४ ॥

भैया रे अब दिन नियरानो छाडन को यह देश।
भैयारे० ॥ १ ॥
पग दीजे शुभ लग्न सोचिके लेहु मनाय गणेश ॥
भैया रे० ॥ २ ॥
यह है देश दोरंगी प्यारे दुःख सुख चैन कलेश।
शत्रु मित्र अपनो बेगानो इत उत रंक सुरेश ॥
भैयारे० ॥ ३ ॥

खेलनके दिन बीत गये अब डूबतजात दिनेश ।
हंस बिलम्ब नहिं करहु नेक अब श्वासा रहेउ न शेष ॥
भैया रे० ॥ ४ ॥

—❀—

ताकहु एक नजरिया रे मेरे बनवारी गिरिधारी ॥ ध्रुव ॥
कर जोडे मैं कबकी खडी हूं क्यों नहिं लेत खबरिया रे ।
मेरे० ॥ १ ॥
तन मन धन सब तुम पर वारेउ जानत शहर बजरिया रे ।
मेरे० ॥ २ ॥
सबकी सुधि तुम लेत मुरारी हमरी काहे बिसरिया रे ।
मेरे० ॥ ३ ॥
दीनदयालु दयाके सागर हंसके स्वामी सांवरियां रे ।
मेरे० ॥ ४ ॥

—❀—

जिय डरपत ऊँची अटारी ।
कंपत देह विघ्न बहु दरशत होइहों पीकी प्यारी ।
जिय डरपत० ॥ १ ॥
थरथरात पग धरत बनत नहिं मीजत झीनी सारी ।
जिय डरपत० ॥ २॥
मणिका नाम हंस चुङ्गनको मानस नदिया न्यारी ।
जिय डरपत० ॥ ३ ॥

लीला तेरी को जाने गिरिधारी ॥ ध्रुव ॥

शेष सहस-मुख पार न पावैं थकि बैठे त्रिपुरारी।
भांति २ की रचना चहुँ दिशि गिनत २ थकि जावैं ॥
वीर गणक मैं ताहि बखानों जो उडुगण गिन लावे।
लीला तेरी० ॥ १ ॥

मशक गगनको थाह न पावे मत्कुण सिन्धु प्रवाहा।
तैसे पचि २ बहु कवि कोविद पायो नहिं कछु थाहा ॥
लीला तेरी० ॥ २ ॥

अलख अगोचर रचना तेरी हठ विरंचि भरमावे।
वेदन नेति २ कहि थाके दूजो को जो जीह हलावे ॥
लीला तेरी० ॥ ३ ॥

मन अरु बुद्धि वाणी ते न्यारी अद्भुत शक्ति तिहारी।
देखत हंसस्वरूप जात है तव चरणन बलिहारी ॥
लीला तेरी० ॥ ४ ॥

—०—

माधव मोहिं कहां विसरायो ॥ ध्रुव ॥

भलो बुरो सबकी सुधि राखत वेद पुराणन गायो।
बानरे भालु भील बडुमारो कागा गिद्ध कसाई।
जिनकी कछु कहिं गिनती नाहीं ते तुम्हरे मन भायो ॥
माधव० ॥ १ ॥

को कहि सके गिने कहो कितनों जितनों तुम अपनायो।
फिर क्यों एक हंसकी वेरियां इतनो विलंब लगायो
माधव० ॥ ३ ॥

—⊛—

रोम-रोम जिह्वा बनिजावें तौउ नहिं हरि–यश कहत सिरावे ॥ टेक ॥
जो गति देवनको दुर्लभ अति सो गति धीवरि गिद्धा पावे ॥ रोम रोम० ॥ १ ॥
जो योगिनके ध्यान न आवति तेहि ब्रजग्वालिन नाच नचावें ॥ रोम रोम० ॥ २ ॥
कोटिन यज्ञ हविष्य न तोषत सो भिलनी को जूठो खावे ॥ रोम रोम० ॥ ३ ॥
बहु तपतें जो सम्पति दुर्लभ मूठी फरहीप सुदामा पावे ॥ रोम रोम० ॥ ४ ॥
जाहि कृपा इक हीन दीन जन स्वामी हंसस्वरूप कहावे ॥ रोम रोम० ॥ ५ ॥

—⊛—

ए हो हरि कहां लें। गावों गुण तेरो ॥ टेक ॥
अन्त न पावत शेष सहस्र–मुख शारद औ त्रिपुरारी।
सो कैसे बरणौ यह जिह्वा छोटी अतिही गँवारी ॥
ए हो हरि० ॥ १ ॥

धन्य २ तुम धन्य तुम्हारी रीति ।
बिन सेवा दीननपर रीझो बूझो मनकी प्रीति ॥
ए हो हरि० ॥ २ ॥

राईको परवत करडारो मशकहि करो विरंचि ।
लक्षहि रंक बनाय देहु तुम कोटि यतन धरि शंचि ॥
ए हो हरि० ॥ ३ ॥

दीन अनेकन तारे मेरे प्रभु निज नैननके कोर ।
सो सुनि हंस शरण चलि आयो तोहि अब लज्जा मोर॥
ए हो हरि० ॥ ४ ॥

भैया खाली हाथ चलेउ ॥ ध्रुव ॥

बटुरे लियो तुम लाख करोरन कौडिहु नाहिं मिलेउ ।
हित मित पुत्र कलत्र सहोदर मुख अगिया दे फिरि आवें॥
इकलो तहां भस्म होई तुम धूरहि धूरि मिलेउ ॥ भैया० ॥ १ ॥
कागा गीध नोच कछु खायो पच्छिन बीट भयेउ ।
कीट ह्वै रह्यो तहां जो शेष कछु सरिता मांहि गलेउ ॥भैया० ॥ २ ॥
कर्म खंभ तू खूब डुलायहु तनिकउ नांहिं हिलेउ ।
हंस प्रेमपथ चलत-चलत अब हरिसों जाय रलेउ ॥ भैया० ॥ ३ ॥

खोजत बीती सारी उमरिया पायी नहीं हरि तेरी खबरिया।
॥ ध्रुव ॥

क्यों तरसावे रे मनमोहन छबि दिखला टुक एक नजरिया ॥ खोजत० ॥ १ ॥

हाट बाट गिरि कानन सागर चौहट बीथिन शहर बजरिया।
चलत चलत मोरी पैयां पिरानी छिपि बैठे कहु कौन। अटरिया। खोजत० ॥ २ ॥

क्षीरसमुद्र तीर कोउ हेरत कोउ हेरत तोहि काशी नगरिया।
असन शयन सुख चैन बिहाई हंस हेर तोहि प्रेम डगरियां
खोजत० ॥ ३ ॥

मोहन लाज तिहारे हाथ ॥ ध्रु० ॥

करुणा-सागर सबगुन आगर दीननके तुम नाथ।
मोहन० ॥ १ ॥

द्रुपदा लाजे रखी चीर बन मुनि-तियको रघुनाथ।
आनकदुंदुभि बन्धन काट्यो भारत पारथ साथ॥
मोहन० ॥ २ ॥

कहँ लगि कहउँ गिनूँ कहां लगि जिन २ कियो सनाथ।
हंसस्वरूप दास तुमरो इक चरण नवावे माथ॥
मोहन० ॥ ३ ॥

रे मन तोकों लाज न आवे ॥ ध्रु० ॥

छिनमें रंक राव छिन २ में, छिनमें दुखी सुखी वन जावे ॥
रे मन० ॥ १ ॥

छिन योगी छिन माहिं वियोगी छिन कायर छिन बीर कहावे ।
छिन वनमें जा धूनी रमावे छिनमें ऊँचो महल चुनावे ॥
रे मन० ॥ २ ॥

छिन काहू से वैर करत तुम छिन काहू से प्रेम लगावे ।
छिनमें मूढ चतुर छिन २ में छिन नीचो छिन ऊँचो धावे ॥
रे मन० ॥ ३ ॥

छिन सुत वित परिवार बढावत जैसे मकरी जाल बनावे ।
पार पडोसिन देखि बडाई ईर्षा-वश घर बैठि खिजावे ॥
रे मन० ॥ ४ ॥

हाथ मलत पुनि २ पछतैहो जादिन शीस काल चढि आवे ।
थिर होय कबहु नेक हरिपद भजु पुनि २ हंसस्वरूप चितावे ॥
रे मन० ॥ ५ ॥

—※—

सखि हे कानन कुंजबिहारी ॥ ध्रुव ॥

जित देखूं तित हरि हरि दीखत हरि कदमनकी डारी ।
सखि हे० ॥ १ ॥

तन हरि मन हरि घर आगन हरि रोम रोम हरि राजे ।
काया-गढकी गगन-गुफामें हरिकी मुरली बाजे ॥
सखि हे० ॥ २ ॥

खोजत बीती सारी उमरिया पायी नहीं हरि तेरी खबरिया।
॥ ध्रुव ॥
क्यों तरसावे रे मनमोहन छबि दिखला टुक एक नजरिया ॥ खोजत० ॥ १ ॥
हाट बाट गिरि कानन सागर चौहट बीथिन शहर बजरिया।
चलत चलत मोरी पैयां पिरानी छिपि बैठे कहु कौन। अटरिया। खोजत० ॥ २ ॥
क्षीरसमुद्र तीर कोउ हेरत कोउ हेरत तोहि काशी नगरिया।
असन शयन सुख चैन विहाई हंस हेर तोहि प्रेम डगरिया
खोजत० ॥ ३ ॥

—⊛—

मोहन लाज तिहारे हाथ ॥ ध्रु० ॥
करुणा-सागर सवगुन आगर दीननके तुम नाथ।
मोहन० ॥ १ ॥
द्रुपदा लाजे रखी चीर बन मुनि-तियको रघुनाथ।
आनकदुंदुभि बन्धन काट्यो भारत पारथ साथ ॥
मोहन० ॥ २ ॥
कहँ लोगि कहउँ गिनूँ कहां लगि जिन २ कियो सनाथ।
हंसस्वरूप दास तुमरो इक चरण नवावे माथ ॥
मोहन० ॥ ३ ॥

रे मन तोकों लाज न आवे ॥ ध्रु० ॥

छिनमें रंक राव छिन २ में, छिनमें दुखी सुखी वन जावे ॥
रे मन० ॥ १ ॥

छिन योगी छिन माहिं वियोगी छिन कायर छिन वीर कहावे ।
छिन वनमें जा धूनी रमावे छिनमें ऊँचो महल चुनावे ॥
रे मन० ॥ २ ॥

छिन काहू से वैर करत तुम छिन काहू से प्रेम लगावे ।
छिनमें मूढ चतुर छिन २ में छिन नीचो छिन ऊँचो धावे ॥
रे मन० ॥ ३ ॥

छिन सुत वित परिवार वढावत जैसे मकरी जाल बनावे ।
पार पडोसिन देखि वडाई ईर्षा-वश घर वैठि खिजावे ॥
रे मन० ॥ ४ ॥

हाथ मलत पुनि २ पछतैहो जादिन शीस काल चढि आवे ।
थिर होय कबहु नेक हरिपद भजु पुनि २ हंसस्वरूप चितावे ॥
रे मन० ॥ ५ ॥

—⊛—

सखि हे कानन कुंजविहारी ॥ ध्रुव ॥

जित देखूं तित हरि हरि दीखत हरि कदमनकी डारी ।
सखि हे० ॥ १ ॥

तन हरि मन हरि घर आगन हरि रोम रोम हरि राजे ।
काया-गढकी गगन-गुफामें हरिकी मुरली बाजे ॥
सखि हे० ॥ २ ॥

देव दनुज हरि नाग मनुज हरि हरि घट-घटमें सोहैं ।
कोयल कीर कपोत कमेरी हरि चातक धुनि मोहैं ॥
सखि हे० ॥ ३ ॥

बाल वृद्ध हरि पुरुष नारि हरि हरि ही प्रजा हरि भूपा ।
गिरि सुमेरुके शृंग विराजै हरिको रूप अनुपा ।
सखि हे० ॥ ४ ॥

घन-घमंड मारुत-प्रचण्ड हरि सूर्य्य चन्द्र हरि राजैं ।
ना जानूं अस व्यापक सो हरि, कब धौं हंस निवाजै ।
सखि हे० ॥ ५ ॥

—❀—

देखेउँ मैं तेरो दरबार ॥ ध्रुव ॥

अद्भुत रचना लखि नहिं जाई अद्भुत तू सरकार ।
देखेउँ० ॥ १ ॥

कोटिन देव जोडि कर ठाडे मुनि जन लाये ध्यान ।
रवि शशि थरथरात भय कांपत दौडत सांझ सकार ॥
देखेउँ० ॥ २ ॥

कोटिन आहुति हुतहिं विप्रगण स्वर्ग मिलन के हेतु ।
चारों वेद एक संग मिलिके स्तुति करत उचार ॥
देखेउँ० ॥ ३ ॥

बहत पवन प्रभुकी रुचि पाई धरा फूल बहु फूल ।
मौलसरी जूही वेली अरु कमल कुन्द कचनार ॥
देखेउँ० ॥ ४ ॥

जहँ सनक सनन्दन शेक पहरुअनि औरन गिनती काह।
हंसस्वरूप एक पग ठाढे द्वारे करत पुकार॥
देखेउँ०॥ ५॥

—०—

तेरा चर्खा भया पुराना बुढिया अब क्या काते रूनू २। ध्रु०।
ढीलो माल सिरानी पिउनी काल धुनेरा धुनू२॥ तेरा०॥ १॥
जोल्लह जीव नरी माया लै कर्म चदरिया बुनू२॥ तेरा०॥ २॥
हंस त्याग करगह हरिपद भजु जहं पायल बाजैं सुनू २।
तेरा०॥ ३॥

—०—

खोजूँ हरिजूको बाट घटिया वतादे उतरनकी रे बटोही।
॥ ध्रुव०॥
कैसी तरणी करुआर है कैसो मस्तूल कहांलों ऊँचो।
कर्णधारको नाम कहो क्या झिंझरी कैसी जलविह-
रन की॥ रे वटोही०॥ १॥
कौडी करकी कितनी लागे कहो पार बिस्तार।
कौन जनावत कैसे जानत मारग नउका विचरनकी।
॥ रे वटो ही०॥ २॥
करूँ निछावर तन मन तोही जो पहुँचादे तीर।
हंसस्वरूपहिं रीति वतादे निशि वासर हरि सुमरनकी।
॥ रे वटोही०॥ ३॥

औरन प्रीति अनीति जानु तुम जो हरि सों नहिं प्रीति भई रे।
। ध्रु०।

जगकी प्रीति असार सार नहिं जस बालूकी भीति दई रे।
औरन० ॥ १ ॥

सीमल पुष्प सेव जस सूआ फल आशा मन लागि रही रे।
मारत चोंच उडेउ तहां भूआ सकल कामना झूंठि भइ रे ॥
औरन० ॥ २ ॥

तृषित मृगा मृगतृष्णा धायो जल पीवनकी आस लई रे।
मिलेउ न वारि हारि चित मुरझेउ पहुँचत निकट खुली कलई रे।
औरन० ॥ ३ ॥

शशको शृंग अकाश पुष्प जस वन्ध्या सुन्दर सुत जनई रे।
जग धोकेकी टट्टी जानहु हंसस्वरूप सांची भनई रे ॥
औरन० ॥ ४ ॥

कलिके निराकार वादी अस जस फागुनके बाल। ध्रु०।

रति-सुखकी सुधि तनिकऊ नहिं पै पढत विविधि बिधि गाल।
कलिके० ॥ १ ॥

ये तो कहैं ब्रह्म सब ठैयां व्याप रहेउ ब्रह्माण्ड।
पै ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं न कबहूं ब्रह्मानन्द विशाल ॥
कलिके० ॥ २ ॥

बिनु हरिपद रति निराकार गति लखै कहिय तेहि क्रूर।
कोटि जन्म सिर पटक मरहु पै रीझ न मदन गोपाल॥
कलिके० ॥ ३ ॥
ब्रह्म जीव माया कोउ भाषत हैं ये तीन अनादि।
पै अनादिको अर्थ न जानत रचत वाक-जंजाल॥
कलिके० ॥ ४ ॥
अगुणसगुणविच भेद तनक नहिं गावत वेद पुराण।
हंसस्वरूप साधि चुप बैठिये भजिये श्रीनँदलाल॥
कलिके० ॥ ५ ॥

—०—

शुन्न महलमें देखहु प्यारे अद्भुत ज्योति बरे। ध्रु०।
रवि शशि मलिन होत जहं जाई दामिन द्युति न करे॥
शुन्न० ॥ १ ॥
विनु वारिद जहं उदय इन्द्रधनु बिन मुख बोलें मोर।
विनु जीहा जहं रटत पपीहा बिनु जल बूंद झरे।
शुन्न० ॥ २ ॥
विना तार जहं वीन बजत हैं बिन महि फूलैं फूल।
कोटिन दीप जरें बिनु बातिन फल बिनु विटप फरै।
शुन्न० ॥ ३ ॥
बिनु पर पक्षी उड़ें अकाशा लंघ सागर बिनु यान।
हंसस्वरूप चलहु वोहि नगरी जहँ मोतिया झहरै॥
शुन्न ॥ ४ ॥

तीतो लागत है संसार बिनदेखे उन नन्दकुमार ॥ ध्रुव ॥
यद्यपि देखन सकल जगत सुख सुन्दर चिक्कण सुभग अरुण फल।
महकारी फल जानहु तिनको लटकैं डार डार।
तीतो ला० ॥ १ ॥
सर्प कूप मुख सेज बिछाई उज्वल रेशम डोर दियो कस।
पै पौढव तहं नीद न आई भयो भुजंग अहार।
तीतो ला० ॥ २ ॥
हीरा रत्न लाल मणि माणिक गज रथ तुरंग लाग सब बिष सम।
तब देखहु सुलतान बुखारा शुरुपहं भोकत भार।
तीतो ला० ॥ ३ ॥
भोंकत भार लहेऊ प्रीतमकों पहुंचगयो तेहि ठामसों बरबस।
हंसस्वरूप जेहि अनुपम नगरी बिरला करत विहार।
तीतो ला० ॥ ४ ॥

—❀—

अब क्षमा करहु तकसीर नाथ सिर विपत बूंद चूई।
रोम २ चुभि देत अधिक दुख तुअ बिरहा सूई।
नाथ सिर० ॥ १ ॥
अंग २ धुनि गये दुःखसों जैसे गोंडर रूई।
नाथ सिर० ॥ २ ॥
अब रूठौ मुख निरखि तुम्हारो बिना मौत मूई।
नाथ सिर० ॥ ३ ॥

जन्मजन्मकी मैं हूं दासी स्वामी एक तूई।
नाथ सिर० ॥ ४ ॥
अब ऊधो मैं करूं योग क्यों हरि छाया छूई।
नाथ सिर० ॥ ५ ॥
हंस छाडि हरि भजत और जो कर खोदत दुख कूई।
नाथ सिर० ॥ ६ ॥

—०—

माधव जानत हो मनकी ॥ ध्रुव ॥
रोमरोमकी सप्तधातुकी पीर मेरे तनकी।
माधव० ॥ १ ॥
स्वर्ग न चाहूँ सकल जगत सुख चाह नहीं त्रिभुवनकी।
चाहूँ एक चरणरज-कण मैं सार वस्तु जो सन्तनकी ॥
माधव० ॥ २ ॥
अँगुरिन दिवस गिनूँ आवनकी पतित हूँढ कोउ पावनकी।
मोहन विनु अँखियां बरसत नित वरस घटा जस साव-नकी ॥ माधव० ॥ ३ ॥
प्रेम पलीता दगी भयउ तहँ विरह शब्द घन घोर।
वौरी भयी फिरी मैं इत उत रही न सुधि कछु घर बनकी ॥
माधव० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप प्रीति साँची करु छाडि सकल जंजाल।
निशि वासर धरु छिन-छिन पल-पल राखहु सुधि मन मोहनकी ॥ माधव० ॥ ५ ॥

अब दिन जात निरर्थक चहुँदिशि देखूं बहु जंजाल।
तिरिया कहति मोहि कंचन लादे धूम मचावत बाल।
अब दिन० ॥ १ ॥
समय जात नित काच बटोरत हीराकी सुधि नाहिं।
करको विद्रुम त्यागि बावरे गुंजा गहत निहाल ॥
अब दिन० ॥ २ ॥
इत उत डोलत आयु खुटानी हरिहि कियो नहिं मीत।
रहेउ अकेला संग न कोऊ आय पुकारेउ काल ॥
अब दिन० ॥ ३ ॥
कांची काया गयउ बिलाई जस बालूकी भींति।
कृमि विट भस्म होत अन्तमें नोचत कूकर श्याल ॥
अब दिन० ॥ ४ ॥
होउ सचेत चेतकरु बौरे भजु गोविन्द मुकुन्द।
हंसस्वरूप पुकारि कहत क्यों गहत न तू गोपाल।
अब दिन० ॥ ५ ॥

भैया भरपूर पापको गठरो ॥ ध्रुव ॥
लद्यो पीठ अब चल्यो जात नहिं जैसे बैला मठरो।
भैया० ॥ १ ॥
जीवन विषयभोग बहु वीते भरलीनो निज जठरो।
भैया० ॥ २ ॥

सच्ची संगति करि प्रेमिनकी सुधरि जाहु तू सठरो ।
भैया० ॥ ३ ॥
हंस तोहि इक नाम आसरो जैसो लंगडो लठरो ।
भैया० ॥ ४ ॥

—o—

प्रभुमैं पतितनको सरदार ॥ ध्रुव ॥
अंकनि थाके गिनत अघनि घन को कह कितेक हजार ।
प्रभु मैं० ॥ १ ॥
जीत सकत नहिं मोहि अजामिल जो जनमें लख बार ।
प्रभु मैं० ॥ २ ॥
व्याधा भागत देखि पाप मन सदनासों तेकरार ।
प्रभु मैं० ॥ ३ ॥
गणिका कणिका कौन बतावे कहँ लगि करूँ शुमार ।
प्रभु मैं० ॥ ४ ॥
हंस जान तोहि पावन टेरत मानसरोवर पार ।
प्रभु मैं० ॥ ५ ॥

—o—

लल्लू लाल खिलोना लेलो गोरे गात नीलो पट देलो ॥ १
लाई हूं मैं सोनेकी मुनिया हीरा रतन जडी झुनझुनिया ॥ २ ॥
ग्वाल बाल सँग खेलहु जाई इक डक माखन मिश्री खाई ॥ ३ ॥

कह यसुमति हरि अंकमें लाई वार २ तेरी लेहुं बुलाई ॥ ४ ॥
रिसियाने हरि गे हरषाई देखि हंस हँसि दीन ठाई ॥ ५ ॥

छाडि सकल जंजाल भजु श्री गोकुलको गोपाल ।
कृपा भरी टेढी चितवन ते चितवत करत निहाल ।
भजु० ॥ १ ॥
विप्र सुदामहिं इक टुक चितयो रंकते कियो नरेश ।
जेहि चितवत तेहि वशकर राखत ऐसो मोहनलाल ॥
भजु० ॥ २ ॥
द्रुपदसुता चितयी चित लायी चीरहिं दीन बढाय ।
पुनि चितयी तिन मीराबाई बिषते ग्रसेउ न काल ।
भजु० ॥ ३ ॥
कुब्जा चिते अप्सरा कीनी शिला चिते मुनि नारि ।
कपिपति चिते मित्र निज कीन्हों डारि गरें मणिमाल ॥
भजु० ॥ ४ ॥
चितवत धींवर कियो भरत सम गीध चिते गति दीन्ह ।
हंसस्वरूप तोहि कब चितवैं करैं वचन प्रतिपाल ॥
भजु० ॥ ५ ॥

चलिये-चलिये चेला भाई गुरूजी तुमरे आये हैं ।
लोहेकी कतरनी लाये साबुन थोडा लाये हैं ॥ १ ।

मूडेंगे जो चोटी छोटी रोटी देंगे घीकी घोटी।
मैले कपडे धोवेंगे वह धोवी वनके आये हैं ॥२॥
गुरूजी गुड हैं चेला चीनी कलियुगकी मैने करदीनी।
धोती पीली मिली बिदाई टका देख झुंझलाये हैं॥३॥
अव नहिं आवें याके घरमें रुपया दीना एक। जोडा
देना चाहिये याको मन्त्र बहुत सिखलाये हैं ॥ ४ ॥
चेला बोले चलो गुरूजी भूल गये हम मन्त्र। वेटी बेटा
नाती पोता त्रिया तन्त्र सिखाये हैं ॥ ५ ॥
हंस हँसै यह लीला देखत बधिर शिष्य गुरु अन्ध।
भवसागरमें उबकी डुबकी डूवे और डुबाये हैं ॥७॥

—⊛—

माधव हे मैं मोह महामधुमाता ॥ टेक ॥
मनकी मनोकामना मांगत सुख मलीन मुरझाता ॥ १ ॥
सुमिरत सुघर स्वरूप सलोनो सांस २ अलसाता ॥ २ ॥
चित चंचल चूमन नहिं चाहत चरण चारु जलजाता ॥ ३ ॥
हुलसि २ हिय हंस निहारत तीन लोकके त्राता ॥ ४ ॥

—⊛—

प्रभु मैं पुत्र कुपुत्र तिहारो ॥ टेक ॥
जगत पिता तुम सब विधि लायक पालनहार हमारो।
प्रभु० ॥ १ ॥

खेलि बिताय दीन बालापन युवा युवति सँग लागी।
वृद्ध भये कछु काज सरे नहिं मिथ्या जन्म बिगारो।
प्रभु० ॥ २ ॥

पदसरोज भावें नहिं नेत्रनि मनुआ भृंग न कीन।
प्रेम भक्ति कर मर्म न जानेऊ माता युवाकुठारो।
प्रभु० ॥ ३ ॥

पुत्र कुपुत्र होंय बहु जगमें मात कुमात न होई।
अस विचार शरणागत लीनी तनक न मोहिं बिसारो।
प्रभु० ॥ ४ ॥

लख चौरासी भटकि-भटकिके मानुष-तन चलि आयो।
हंसस्वरूप भवकूप पड्यो प्रभु अबकी बार उबारो।
प्रभु० ॥ ५ ॥

॥ सत्सद्ब्रह्मणे नमः ॥

हंसहिंडोल।

दूसरी मचकी।

(प्रेम, शृङ्गार और विरह)

सुनिये मदनगोपाला, श्री नन्दजूके लाला।
अब तो सही न जाती, तेरे विरहकी ज्वाला॥ १॥
ए हो कुँवर कन्हाई, तेरी कठिन जुदाई।
कैसी दशा बनाई ख़ुद देखजा कृपाला॥ २॥
+ दुरे ग़म पिरोरहा हूं, दिन रैन रोरहा हूँ।
इस सांकरी गलीका, है ढङ्ग ही निराला॥ ३॥
अब हंस क्या करोगे, जो कुछ हो सब सहोगे।
विधिनाने लिखदिया है, किसमतमें आहोनाला॥ ४॥

+ दुर=मोती

सखि हे उन बिनु कैसे जीऊँ, घोलि देहु मोहि विषके प्याले घोंटि एक दुइ पीऊँ ॥ १ ॥
नयन निकास कागको दीजो लेजावे उन पासा ।
दरस दिखाय खाय पुनि लै है पूरै मनकी आशा ॥ २ ॥
चिता बनाय यमुनके तटपै मो कहँ भस्म करीजो ।
राधा तेरे विरह खाक भयि यों पाती लिख दीजो ॥ ३ ॥
बालेपनकी प्रीति सुरतिकर हंस शीघ्र चलि आवे ।
चरण चिता भुवि ठोकर दे पुनि लौटि मधैपुर जावै ॥ ४ ॥

—•—

धीरज कैसे धरूँ सखी हे बिन प्यारे यदुनाथ ।
तू तो कहै मनको थिर करिये सो मन हरिके साथ ॥
धीरज० ॥ १ ॥
करण बधिर भे जिह्वा सूखी नयनन सूझत नाहिं ।
अंग २ बिन श्याम सिथिल भये केहि गल डारूँ बांह ।
धीरज० ॥ २ ॥
कस्तूरी कर्पूर कुमकुमा केहिके अंग सँवारूँ ।
दाडिम दाख चिरोंजी चिकनी अब केहिके मुख डारूँ
धीरज० ॥ ३ ॥
कुण्डल हंस डारि केहि कानन पग नूपुर केहि लैहो ।
केहिके चरण पखार सीस धरि तनको ताप बुझैहो ॥
धीरज० ॥ ४ ॥

पियेको रूप हिया बिच झलकै, अलिन वृन्द गुञ्जारकरें जनु मुखसरोज पै कारी अलकें ॥
जबसे दीखपडी उन सूरति, रैन दिवस नहिं लागहि पलकें ॥ पिय० ॥ १ ॥
उमडत बार २ मानत नहिं नेह नीर गागर जनु छलकैं ॥ पिय० ॥ २ ॥
अवसर पाय नजर भरि निरखूं विरह व्यथा भरि हियदल दलकैं ॥ पिय० ॥ ३ ॥
हंस पडत पैयांप्यारे पियरवा, मेटिदेहु हियराकी कलकें ॥ पिय० ॥ ४ ॥

—❁—

आज जनकपुरे अधिक सुहावै ।
सुन्दर मौर सीस चहुँ वन्धुन निरखत चहुँ फल पावै ॥ आज० ॥ १ ॥
अवध-लला मिथिलेश-ललीकी छवि मेरे मन भावै । आज० ॥ २ ॥
हंसस्वरूप कौशलकिशोरको नयनन अतिथि बनावे । आज० ॥ ३ ॥

युगल चरण कहँ उपमा दीन्ही कवि कमलनके संग ॥ ध्रुव ॥
कमलहि कोमलता इतनी कहँ नखमणि नहिं तेहि अंग ।
युगल० ॥ १ ॥
कमलाश्रित कहँ प्राण जात हैं प्रातहि भख गजराज ।
चरणाश्रित निर्भय सुख पावैं डसै न काल-भुजंग ॥
युगल० ॥ २ ॥
सन्ध्या देखि कमल मुरझावैं ये मुरझैं न कभी ।
तीन काल प्रफुलित जेहिं देखिये चरण सुअंग सुरंग ॥
युगल० ॥ ३ ॥
कमल-गंध सर तीरहि फैलेहु चरण-गंध तिहुँ लोक ।
कमल-पराग भखै इक भौंरा पदपराग श्रीगंग ॥
युगल० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप भेद भल दीसत चरण कमल दुहुँ माहिं ।
सरे पैठे सरकमल लहै यह लहै न बिन सतसंग ॥
युगल० ॥ ५ ॥

—⊛—

जोहत हूँ आली बटिया मोहनकी, अँखियां पिरानी सुधि बुधि मिलि धूरि री ॥ ध्रु० ॥
चैनन आवै चित बिरह सतावै मोहि, कुसुमकली लागे जैसे तीखी सूली री ॥ जोहत० ॥ १ ॥
अबलनि योग लिख्यो ऊधो कैसी बात

कैसे करूँ मैं तो कान्हा सँग भूली री ॥ जोह० २ ॥
आयो ऋतुराज साज सकल समाज ।
आज वेला चमेली फूले फूले फूल जूही री ॥
जोहत० ॥ ३ ॥
हंस सँदेसो उनते कहियो बुझाय ऊधो ।
काहूको रखैया कोऊ, मेरो तो है तूही री ॥
जोहत० ॥ ४ ॥

—०—

फागुन रंग अबीर गोकुल खेलत एक अहीर ॥ ध्रुव ॥
संगे लिये ग्वाल बाल सँग दायें श्री बलबीर ।
गोकुल० ॥ १ ॥
दुहुँ कर लिये कञ्चन पिचकारी बोरत सकल शरीर ।
गोकुल० ॥ २ ॥
मारत खींच डोलची रँगकी कान्हा अति बेपीर ।
गोकुल० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप सँग फाग मचावत झोली भरे अबीर ।
गोकुल० ॥ ४ ॥

—०—

\+ माधव आयो न आयो × माधव । ध्रु०
वेली लगति अकेली उनबिन जुही गई कुम्हलाय ।

\+ ऋतुराज × ब्रजराज

कोयल कूक लगति है तीखी चातक धुनि न सुहाय ॥
माधव० ॥ १ ॥
देखि न जाय रसाल मंजरी किशलय अग्नि समान ।
मौलसरी सब मौलिगई हैं फीको लगत सुर तान ।
माधव० ॥ २ ॥
चैत चांदनी देखि चैन नहिं आवत हिय अकुलात ।
टपकत नैन रैन बीतति है दिवस जात बिलखात ।
माधव० ॥ ३ ॥
कैसे करूँ कहूं कहा केही विधि निठुर श्यामकी रीति ।
ना जानूं केहि गुरु पहँ सीखेउ मुख देखेकी प्रीति ।
माधव० ॥ ४ ॥
कर मींजत पछतात हंस अब ऋतु बसन्त चलिजाय ।
मधुपुर जाइ पकडि पद-पंकज लावहु श्याम मनाय ॥
माधव० ॥ ५ ॥

—⊛—

आजु सखि मोहन देखिबे योग ॥ ध्रुव ॥
कछुक अनोखी छबि सुनियत हूँ कहत गांवके लोग ।
आजु० ॥ १ ॥
श्याम कपोल गुलाल लाल सँग मनहु सांझ अरुणाई।
अधर बिम्बफल नासा शुकने मानहु लोल चलाई ॥
आजु० ॥ २ ॥

लटकि लटुरिया कुण्डल उरभी उपमा नहिं कहिजाय ।
रविकर निकर सघन घन मानो कछुक २ दरसाय ॥
आजु० ॥ ३ ॥
ललचते नयन चहत टुक देखन मूरति परम अनूप ।
कौन घरी करिहैं विधिना जब निरखै हंसस्वरूप ॥
आजु० ॥ ४ ॥

—०—

फँसिगयो दीन मन मीन प्रीतिकी वंसी। ध्रुव०
गैया चरावत मैंने देखी लिये लकुटिया हाथ ।
पाछे पाछे बछडे डोलें सखा सुदामा साथ ॥
फँसि० ॥ १ ॥
एक सखी तहां दौडी आयी दधि मटकी लिये शीश ।
बोली राधेको सर्प डस्यो है तोहि बोलवत जगदीश ॥
फँसि० ॥ २ ॥
तीनलोकके वैद्य कहावत भव-रोगनके हर्ता ।
चलहु हरेहु अब पीर वीरकी सबके कर्ता धर्ता ॥
फँसि० ॥ ३ ॥
सुनि मुसकाय चले तेहि अवसर झोली लैली कांध ।
वैद्य बने त्रिभुवनके स्वामी टेढी पगिया बांध ॥
फँसि० ॥ ४ ॥
पढिके सावरमंत्र सांवरे राधा मुख दी फूंक ।

ऐसे हरत तुम व्यथा जगतकी हंस करी क्या चूक ॥
फँसि० ॥ ५ ॥

—❀—

कौशलकिशोर बन चैळे कसे जिवंगे हम ।
उनके बिरहमें जहरके प्याळे पिवेंगे हम ॥
अच्छा हो गर वो हमको भी ळेळेवें अपने साथ,
खंजरसे वर्ना चाक जिगर कर मरेंगे हम ॥
रोवेंगे रात दिन व कराहेंगे सुबह शाम ।
सरयूके जलमें डूबकर आखिर मरेंगे हम ॥
हंसस्वरूप रूप मनोहरके ध्यानमें सब छोड छाड ॥
मुलके अदमको चलेंगे हम ।

—❀—

देखहु एक नजरिया रे मेरे बनवारी गिरिधारी । ध्रुव०
करजोरे मैं कबकी खडी हूँ क्यों नहिं लेते खबरिया रे॥
मेरे० ॥ १ ॥
तन मन धन सब तुमपर वारेहुं जानत शहर बजरिया रे।
मेरे० ॥ २ ॥
गणिका गिद्ध अजामिल तारे तारी भिलनी शबरिया रे ॥
मेरे० ॥ ३ ॥

सबकी सुधि तुम लेत मुरारी हमरी काहे बिसरिया रे ॥
मेरे० ॥ ४ ॥
दीनदयालु दयाके सागर हंसके स्वामी सांवरिया रे।
मेरे० ॥ ५ ॥

बलबीरके गोरे गातपै नील वसन सोहै ॥ ध्रुव ॥
मोरमुकुट टेढी, भउहैं टेढी, कटि टेढीकी शोभा मन मुनियनको मोहै ॥ बलवीर० ॥ १ ॥
मुखपै वंशी टेढी, सूधो करत कुअंक भाल, ताको जो एक पलक जोहै।
बलवीर० ॥ २ ॥
लटकैं कपोलनपै लट टेढी, लड़रियनकी मनहुं अलिमाल कंज प्रेमपुंज पोहै ॥ बलवीर० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप अस टेढो जब चितवै तोहि, फिर टेढो तोहि चितवै अस जगमें कहुं कोहै ॥ बलवीर० ॥ ४ ॥

हमसे रूठिगये मनमोहन, ना जानूं क्या तकसीर भयीरे।
बालेपनमें प्रीति लगायी, गलबहियां सँग डारे लयीरे।
हमसे रूठि० ॥ १ ॥
खेल्यो खायो हँस्यो हँसायो, सो सब निपट बिसार दयीरे।
हमसे रूठि० ॥ २ ॥

जबसे छाडिगये मधुबनको, हिय उठती नित पीर नयीरे ।
हमसे रूठि० ॥ ३ ॥
अंग २ सूख्यो बिनु माधव, सुधि बुधि सिगरी बिसरि गयीरे ।
हमसे रुठि० ॥ ४ ॥
दुहुँ कर जोरि सुनइयो ऊधो! बिरह व्यथा नहिं जात सहीरे ।
हमसे रूठि० ॥ ५ ॥
हंसस्वरूप बहुतदिन बिछुडे, कब मिलिहैं बलवीर दयीरे ।
हमसे रूठि० ॥ ६ ॥

—❀—

झकझोरो न बलमा अटरिया पै ।
गिरजाऊँगी बीच बजरिया पै ।
बाट बटोही देखि हँसि दैहैं मेरी फटी चुनरिया पै ।
पैयां पडू तकसीर माफ करु राखूँगी तोहि नजरिया पै ।
हंसस्वरूप कह भोरी गवालिन भूली क्यों मधुरी बँसु-
रिया पै ।

—❀—

पुनि पुनि प्यारे परूँ पैयां ।
चंचल चखु चारु चित चंचल चितवत चैन चुरैयां ।
पुनि० ॥ १ ॥
जुल्फैं जाल जुगल जानु लौं जोहति जिया जुरैयां ।
पुनि० ॥ २ ॥

गावत गीत रतै गति शुणि शुणि गलियन गोकुल गैयां।
पुनि० ॥ ३ ॥
हंस हुलसि हिय हरिपदपंकज हेरि हेरि हरषैयां।
पुनि० ॥ ४ ॥

ज्योतिषी शकुन विचारो एक ॥ ध्रुव ॥
हरि विनु कछु जाचूं नहिं काहुहिं निबहैगी यह टेक।
ज्योतिषी० ॥ १ ॥
जन्मपत्रिका फटी हमारी दीमक लीनी चाटि।
लग्न योग तिथि वार न दीसत बीच कुंडली फाटि ॥
ज्योतिषी० ॥ २ ॥
नूतन पत्री लिखो हमारी सिद्धियोग धरु साधि।
ऐसो जप कोउ देहु बताई मिटै आधि अरु व्याधि ॥
ज्योतिषी० ॥ ३ ॥
सोइ पल सोइ चण गिनहु अँगुरियन जेहि हरि मो ढिंग आव।
कर-कंगन तोहिं देउँ विदाई जो अस बनै बनाव ॥
ज्योतिषी० ॥ ४ ॥
हंसस्वरूप कछु सूझत नाहिंन क्या विधि लिखेउ ललाट।
कल्प समान दिवस बीतत है हरिकी जोहत बाट ॥
ज्योतिषी० ॥ ५ ॥

कोउ बिरला जानत प्रेमको भेद।
ढाई अक्षर मर्म न जानत पढिलीने सब वेद ॥
कोउ० ॥ १ ॥

कछु २ कारो भौंरा जानत कछु २ जान पतङ्ग।
एके बँधावत अंग २ निज एक जरत पिय सङ्ग।
कोउ० ॥ २ ॥

मीनकी प्रीति सराहत कोउ २ छूटत जल मरिजाय।
विधु सँग प्रीति सराहिये +चककी चितवत रैन सिराये ॥
कोउ० ॥ ३ ॥

स्वाती सङ्ग प्रीति चातककी बुध जन करत बखान।
फूटैं आंख चोंच झरिजावें तउ न पिअत जल आन॥
कोउ० ॥ ४ ॥

हंसस्वरूप जब उदय प्रेमरवि नेम चन्द मुरझाय।
हरिपद प्रीति किये सुनु सन्तो उरझी लट सुरझाय॥
कोउ० ॥ ५ ॥

+ सभी जानते हैं, कि चकोर अग्नि खाता है परे रसिकोंको जानना चाहिये, कि उसके अग्नि–भक्षण करनेका मूल उद्देश्य यह है, कि वह चन्द्रमासे अधिक प्रीति रखता है इसलिये वह चाहता है, कि जब मैं अग्नि खानेसे जलकर भस्म होजाऊँगा और वह भस्म जब शिवजीके मस्तकपर चढायी जावेगी तो वहां मैं अपने प्रीतम चन्द्रमासे जा मिलूँगा।

इक्षुदण्ड सम पेरै तनको तब सोइ रसहिं चखै ॥ ध्रुव ॥
जिहि रसके हैं रसिक सन्तजेन विरला कोउ लखै ।
इक्षुदण्ड० ॥ १ ॥
चातक चोंच टूट जिहिं कारण अग्नि चकोर भखै ।
इक्षुदण्ड० ॥ २ ॥
दीपक जलत पतंग देखियतु भौंरा भस्म भखै ।
इक्षुदण्ड० ॥ ३ ॥
नेह कसोटी कसे खरो जो परखैया परखै ।
इक्षुदण्ड० ॥ ४ ॥
परम प्रेम-दुख दुखै हंस ज्यों दूजो दुख न दुखै ।
इक्षुदण्ड० ॥ ५ ॥

—※—

गुरुजेन वाक्य झूठेहीं दीसत, क्यों कवि लै तिहि पुनिपुनि पीसत ।
कोउ कह जिहिंपर जाको नेह, सो तेहिं भेटत नहिं सन्देह ॥
कोउ कहै जे दोउ प्रीतम प्यारे, एक क्षण विलम्बसकत नहिं न्यारे।
कोउ कह प्रेम आकर्षण बडो, खींच अवश वह जितनो अरो ॥
जो नहिं यह सब झूठ फतूर, तो क्यों मोहन अटकेउ दूर ।
जा बिनु मैं निशि वासर मरूँ, तेहि हिय कछु नहिं मैं क्या करूँ॥
चातक चह स्वाती नहिं चहै, चककी प्रीति चन्द्र नहिं गहै ।
धिक् धिक् धिक् तेहि गावँकी रीति, जहँ ऐसी एकंगी प्रीति ।
होहु रुष्ट जनि व्रजकी बाला, कहत हंस मिलि हैं गोपाला ।

यमुने! तू क्या सोहीहैं ॥ध्रुव॥

जाके तट शुभ विशालपै, खेलत रहँ श्रीगोपाल।
सङ्ग लिये ग्वाल बाल, डरत देखि जाहि काल ॥
यमुने० ॥ १ ॥

लहरत शीतल समीरे, गावत कोकिल कमीर।
टेरत रहँ मुरली वीर, चोरत गोपिनको चीर ॥
यमुने० ॥ २ ॥

बाजत रह्यो सुर मृदङ्ग गाजत जलतरङ्ग।
राजत रहे विविधि रङ्ग बाढत उमङ्ग अङ्ग ॥ यमुने० ॥ ३

नाचत व्रजराज राज, राचत सब सुखसमाज।
बांचत नहिं लोक लाज, हंसहिं निवाज आज ॥
यमुने० ॥ ४ ॥

—❀—

देखत सोइ कमलनैन सुनत ताको मधुर बैन जानि सकल सुख को अयेन चरण चित्त दयऊ ॥ १ ॥
साजि सकल प्रेम साज त्यागदयी लोकलाज काजको अकाज होत शंक नाहिं भयऊ ॥ २ ॥
प्रीतमकी प्रीति नयी निबहत अति कठिन भयी सुधि बुधि सब भूलि गयी धीरज चलिगयऊ ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप रूप सुन्दर अतिही अनूप निरखत मधुवनके भूप सकल दुःख नशऊ ॥ ४ ॥

ऊधो तुमने कैसे ऐसी पाती लायी ॥ ध्रुव ॥
पाती पढ़त मेरी छाती फटत दयी ।
जिय आवत अब मरिये जहर खायी ॥ ऊधो० ॥ १ ॥
अबला अबल जाति भीरु अति,
ताको योग लिखत न शरम आयी ।
मैं जाना कान्हा सहजसनेही निकसा यह तो परमनिठुर मायी ॥
ऊधो० ॥ २ ॥
ऐसी पाती फेर न लइयो, उनसे इतनी मेरी कहियो जायी ।
हंस कहत सखि धीरज धरिये काहू दिन कान्हा तोसों मिलें आई ॥
॥ ऊधो० ॥ ३ ॥

—※—

जब सुधि आवत लाल तिहारी हिय उमडत नयनन
भरि वारी ।
थामलेत करेतें हियरो अरु चढत तप्त स्वासा दुइ चारी ॥
मौनहोय देखत एकटक उत जितह्वै गये मधुबन बनवारी ।
कर मींजत पछतात विविधि विधि कइ राधे सुनु ललिता
प्यारी ॥
सोहन महाकठोर निठुरहिय त्यागिगये बिरहिन ब्रजनारी ।
चीर करेजो रुधिर काढि अब लेखनि करि कमलनकी
डारी ॥
कहत हंस पाती इक लिखिये अपने जियकी बिरहव्यथा री

सखि हे अब एक शकुन बिचारो ।
लेहु बुलाय जोतिषीजीको कर कंकण देडारो ।
आवें कान्ह तो प्राण राखिये अवधि तलक री प्यारी ॥
नहिं तो छुरी मारि करेजो होऊ देहतें न्यारो ।
सही न जात विरहकी ज्वाला उमड २ हिय आवे ॥
+करपट नित भीजो हि रहत है नयन अश्रु भरि लावै।
कोयल कुहक पपीहा पी-पी अधिकहि अधिक सतावै ॥
ऋतु वसन्त मोहि भावत नाहीं वर्षा नाहिं सुहावै ।
हाय यत्न कछु औरेन सूझे काह कहिये का करिये ॥
कहत हंस हरिचरण ध्यान धरि जहर खाइ अब मरिये ॥

—※—

सकल अंग कोमल भे हरिके, हिय क्यों भा पत्थरको ।
कर कपोल कंज पलव जनु अधरन बिंबा फरेको ॥
हिय क्यों० ॥ १ ॥
संबुल जटा केस घुंघरारे सुन्दर राधावरको ।
नरगिस-पुष्प नयन रतनारे मन वस कर सुरनरको ॥
हिय क्यों० ॥ २ ॥
पीर परायी जानत नाहीं बोध न दर्द जिगरे को ।
कहत हंस अबहू तो पसिजो खा माखन घरघरको ॥
हिय क्यों० ॥ ३ ॥

+ करपट = रूमाल

नगर लोग पूछैं री सखिया क्यों झुरवत तव गात।
॥ टेक ॥
क्षीण शरीर शुष्क अधराधर मुख नहिं आवत बात।
री सखिया० ॥ १ ॥
काह कहूँ केहि काह सुनाऊँ कहन सुनन न सुहात।
री सखिया० ॥ २ ॥
जो बीतत मेरोइ मन जानत औरहिं कछु न लखात।
री सखिया० ॥ ३ ॥
कहत हंस जबसे बिछुडे वे श्याम-चरण-जलजात।
री सखियां ॥ ४ ॥

—❀—

सोइ दिन मंगलमय जानहु रे जादिन हरि आवैं तुअ भवना।
रत्नसिंहासन बैठि हँसैं वे करेलिये व्यजन करूँ मैं पवना ॥ १ ॥
मन्द-मन्द मुसक्यान कपोलन जनु रविकर निकर प्रभात।
बाण धनु करलिये सोहें ढिंग जाते बधेउ लंकपति रवना ॥ २ ॥
चाहे दान करहु तुम कोटिन चाहे तीरथ करहु हजार।
बिना प्रेम हरि प्रकट न दीखैं चाहे करहु सहस लख हवना ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप प्रेमव्रत संयम योग अनेक प्रकार।
बिनु हरिचरण नेह खेह सम जरहिं जाइ चूल्हे जस लवना ॥ ४ ॥

—❀—

मोहन आओ-आओ मोरे ढिंग आओरे ॥ ध्रु० ॥
कान सुनत हूँ तुमरे गुन नित पतितनके ढिंग जाओरे ।
मोहन० ॥ १ ॥
मोसम पतित कि दूजो कोऊ फिर क्यों विलम लगाओरे ।
मोहन० ॥ २ ॥
गोकुल नांचिर देवनकहं निज माया भरमाओरे॥ मोहन० ॥३॥
हंसस्वरूप नचेऊ बहु जगमें अब तुम संग नचाओरे ॥
मोहन० ॥ ४ ॥

काहूसों प्रेम न करिये । बिन मारे मौत न मरिये। ध्रुव
प्रीतमने शूल तेधारा । हिय मांझ खैंच कर मारा ।
फिर घोर मूर्छा आयी । नहीं छूटत बिना कन्हायी ॥
काहू० ॥ १ ॥
चह कारोसे डसवालो । गर्दनमें फांस फसालो ।
तन सागर मांझ डुबालो । पर प्रेमसे जान बचालो ॥
काहू० ॥ २ ॥
दीपक संग कियो पतङ्ग । जरिगये तासु सब अङ्ग ।
रागनि संग कियो कुरङ्ग । नहिं रह्यो कबहु सो चङ्ग ॥
काहू० ॥ ३ ॥
चन्दा संग कियो चकोरा । चितवत इकटक भइ भोरा ।
करि प्रेम हंस पछतावे । अब प्रीतम तजि कहँ जावे ॥
काहू० ॥ ४ ॥

चलो २ तुम्हारी देखी। मुँह देखी प्रीति मैं लेखी ॥
छल कपट तुम्हारी रीती। गोकुल ग्वालिनपर बीती ॥
कहिगये आऊँगो परसों। तिहिं बीतिगये तहँ बरसों।
स्तुति तुम्हरी उन गायी। हैं परम कठोर कन्हायी ॥
मैं हंस तेरे बिन तरसों। कहियो उन राधाबरसों ॥

—❁—

नाथ अब कैसे निठुर भये॥ ध्रुव
कहत रहे साथी सब दिनके सोउ अब बिछुडगये ॥
नाथ० ॥ १ ॥
मुख फेरत कछु बोलत नाहिन नैन न हेरत हाय।
जो जनितउँ प्रभु अस कठोर चित मरिजइतउँ बिषखाय ॥
नाथ० ॥ २ ॥
अब तकसीर छमा करु मोहन होहु न अस बेपीर
व्याकुल चित्त धीर नहिं आवत नयन ढरत नित नीर ॥
नाथ० ॥ ३ ॥
गाढ परे धावत दुखियन पहँ अस तव बिरद गँभीर
कैसे सो तुम बिसरिगये हो हंसा मानस तीर ॥
नाथ० ॥ ४ ॥

—❁—

जागिये मेरे प्यारे कुण्डलवारे ॥ ध्रुव ॥
घट २ बासी अलख अविनाशी बहुबिधि सृष्टि सँवारे।
जागिये० ॥ १ ॥

अरुण उदयकी देखु ललाई रवि कर-जाल पसारे।
जागिये० ॥ २ ॥
बन-बन पच्छी शब्द करत हैं खोलु नयन रतनारे।
जागिये० ॥ ३ ॥
भांति २ कमलन सर विकसे भ्रमर करत गुञ्जारे।
जागिये० ॥ ४ ॥
तेरे दरशको श्याम लाडिले शंभु खडे हैं द्वारे।
जागिये० ॥ ५ ॥
दोउ कर जोड़े ठाढ जगावत हंस नयनके तारे।
जागिये० ॥ ६ ॥

—⊛—

देखो सखि श्याम-गात अद्भुत छबि बनियां ॥ ध्रु० ॥
मन्द २ मुसकरात, मानो रविकरे प्रभात,
ग्वाल बाल संग साथ, खेलत धरिनियां ॥
देखो सखि० ॥ १ ॥
सोहत कपोल गाल कुंडल अमोल लोल,
मनहुँ नीर नीरद महँ इन्द्रधनुष तनियां ॥
देखो सखि० ॥ २ ॥
युगल नैन अति विशाल, अधर दोऊ लाल लाल,
रदन-पांति झलकत जनु हीरेकी कणियां।
देखो सखि० ॥ ३ ॥

केशव कच कटि प्रमाण केहरि अहि करत मान,
मारको वितान देखि शंभु २ भनियां ।
देखो सखि० ॥ ४ ॥
श्याम अंग लसत धूर मदन मनहु चूर चूर।
नील व्योम मांह छिटक चन्द्रकी किरणियां ।
देखो सखि० ॥ ५ ॥
ठुमुक २ चलत चाल, देखत लज्जित मराल,
मधुर २ शब्द पांच बाजत पैजनियां ।
देखो सखि० ॥ ६ ॥
इत उत तकि भागिजात, सघन कुंजमँह छिपात,
विविध भांति खेलत हैं खेल अँखमिचनियां ।
देखो सखि० ॥ ७ ॥
नेत्रसुखद छवि अनूप, निरखत हंसस्वरूप,
श्रवणसुखद सुनत सदा श्याम मृदु वचनियां ।
देखो सखि० ॥ ८ ॥

मेरी तेरी प्रीति नयी लागी रे मनमोहना ॥ ध्रुव ॥
सोईथी मैं मायाकी सेजेरिया सुनि मुरलीधुनि जागी रे मनमोहना ।
मेरी० ॥ १ ॥
अपनी कृपा सुदरियांसे मेरी तृष्णा सुदरिया बदललेरे मनमोहना ।
मेरी० ॥ २ ॥

सत्य सिंदुरिया मांग लगादे भक्ति चदरिया ओढ़ादेरे मनमोहना।
मेरी० ॥ ३ ॥
हंसस्वरूप हिय ताप बुझादे उरझी लट सुरझादेरे मनमोहना।
मेरी० ॥ ४ ॥

हरि बिनु कैसे जीवो हे कुञ्जनके कीर ॥ ध्रुव ॥
बिन बंसी कैसे गावो जी तुम गान गँभीर॥ हरि० ॥ १ ॥
को जल घट भरिदै हैं जी यमुनाके तीर॥ हरि० ॥ २ ॥
अग्नि समान तपावे जी शीतल मन्द समीर॥ हरि० ॥ ३ ॥
हंसहिं अब विसरायो जी आखिर जाति अहीरे। हरि० ॥ ४

मुरलीवालेसे प्रीति लगाय आयीरे ॥ ध्रुव ॥
प्रेम पैठ जब देखी बिन कौडीके बिकाय आयीरे।
मुरली० ॥ १ ॥
प्रेम गली अति सांकरि सजनी तामें सीस कटाय आयीरे।
मुरली० ॥ २ ॥
हंसस्वरूप प्रीति जनि कीजो मैं करि धोखो खाय आयीरे।
मुरली० ॥ ३ ॥

सावनवाँ बरसत है चहुँ ओर ॥ ध्रुव० ॥
लरजत हिया सघन घन गरजत पुरवैया झकझोर।
सावनवाँ० ॥ १ ॥

सघनव्योम बिच बलत बलाका बोलत दादुर मोर ।
सावनवाँ० ॥ २ ॥
बिन हरि बूंद बाण सम लागत बिरह करत बरजोर ।
सावनवाँ० ॥ ३ ॥
कर मींजत पछतात हंस नहिं आयो नन्दकिशोर ।
सावनवाँ० ॥ ४ ॥

—⊛—

हमरी अरज नहिं मानत मधुवन कुँवर कन्हाइ ॥ ध्रु० ॥

लिखि २ पतिया पठावति बिरहा लिखियो न जाइ ।
हमरी० ॥ १ ॥
पतियां लिखति छतिया फाटति नैनन नीर बहाइ ।
कैसे लिखूं हियाकी दरदिया री कागद गलि २ जाइ ॥
हमरी० ॥ २ ॥
मेघवा रगजे बिजुरी चमके री दादुर शोर मचाइ ।
सारङ्ग गावे जनि मोरवा रे तोहि रामदुहाइ ॥
हमरी० ॥ ३ ॥
बीर बटोही मेरे भैया हो बिनती करूं पड़ूं पांइ ।
हंस सँदेशो लेते जइयो हरिको दीज्यो सुनाइ ॥
हमरी० ॥ ४ ॥

—⊛—

जब हरि अंजन नैन सँवारे ॥ ध्रुव ॥
जनु युग खंजन विषके प्याले पिवत भये मतवारे।
जब हरि ॥ १ ॥
सघन रैन अँधियारी पायी मानहु दुइ बटमारे।
विचरत देखत प्रेम पथिक जहँ तहँ घायल करडारे ॥
जब हरि० ॥ २ ॥
देखियतु नेह सरोवर फूले युगल कंज कजरारे।
हंस मधुप मकरन्द पिवत छवि सुधिबुधि सकल बिसारे।
जब हरि० ॥ ३ ॥

—❀—

आजु अनर्थ सुनोरी आली मोहन मधुपुर जैहैं री ॥ ध्रुव ॥
गोकुल ग्राम बिसारि चले अब लौट फेरि नहिं ऐहैं री॥ आजु० ॥ १
यशुमतिके माखन को खैहैं गैया कौन चरैहैं री।
नित उठि वंशीवट यमुनातट मुरली कौन बजैहैं री॥ आजु० ॥ २
नन्द बबा बिनु श्याम लाडिले कैसे दिवस बितैहैं री।
साँझ सकारे अंकमें भरि-भरि यशुमति काहि खिलैहैं री॥ आजु० ॥ ३
काको कर सरोज गहि गोपिन यशुमति ढिंग लै जैहैं री।
केहिपर श्रीवृषभानुनन्दिनी पुनि २ मान धरैहैं री॥ आजु० ॥ ४
ग्वाल बाल केहि सखा पुकरि हैं गलबंहियां किहि लैहैं री।
बिनु हरि हंसस्वरूप व्याकुल हिय कर मींजत पछितैहैं री॥
आजु० ॥ ५ ॥

देखहु चन्दा उदय लियो नभ ॥ ध्रुव

हर्षपियूष पाय प्रसन्नह्वै बनकी कुमुदिनि विकसिगई सम ।
देखहु० ॥ १ ॥

विरहिन विरहपयोनिधि बाढेउ भाठा ज्वार चढेउ ।
भरिगे दोऊ नैनपनारे पाटी प्रीति बेलि दीन्ही गभ ॥
देखहु० ॥ २ ॥

चाह चमेली चहुं दिशि चटकी चन्द्रकला चित चाव ।
ऋतु वसन्त मनही मन हरखेउ चैत चांदनी मोहि भई लभ ।
देखहु० ॥ ३ ॥

ऐसे समय शुन्न वृन्दावन उदासीनता छायी ।
मोहन मीत भये मधुवनमें गोपिन तीत कूबरी सौरभ ।
देखहु० ॥ ४ ॥

"हंसस्वरूप" एक टक लावहु मोहन मुख विधु पूर ।
ह्वै चकोर चख छवि अमृत रस व्याधा काल बाण डारहु
चभ ॥ देखहु० ॥ ५ ॥

मोको नीके लागे चरण तिहारे रे बंसीवारे ॥ ध्रुव० ॥

पारस परसि लोह कंचनभयो, विकेउ स्वर्णके दाम ।
चरण परसि पवि मुनिपत्नी भई निजे पतिलोक सिधारी ॥
रे बंसी० ॥ १ ॥

पारस स्वर्ण करत पै लोहहिं पारस करत न सोयी।
तव परसे तव रूप होत नर अचरज कोउ निहारे॥ रे बंसी०॥२॥
लोहा सोना भा पै जडता भयी न वातें दूर।
तोहि परसि हरि! चेतन भे जड यमुना केर किनारे॥
रे बंसी० ॥ ३ ॥
"हंसस्वरूप" परसि पद-पंकज करहु प्रीति पहुनायी।
परसेत सकल पीर मेटैंगे प्रीतम प्राणपियारे॥ रे बंसी० ॥ ४ ॥

हरि तव कचकी * मेचकताई ॥ ध्रुव ॥
श्रावण मास घटा पूरित जल जनु चहुँदिशि घिरि आई।
हरि तव० ॥ १ ॥
ताहि मध्य सुखछवि दामिनि जनु दमकत करत प्रकाश।
स्वेत-कमल-माला हिय मानो बककी पांति सुहाई॥
हरि तव० ॥ २ ॥
पावस रूप भयो हरि निरखेत मन × सारँग अनन्द।
सारँग गान करत तहँ पुनि २ सारँगधर चित लाई॥
हरि तव० ॥ ३ ॥
औचट विरह + हादुनी टूटी, पडि विरहिनके अंग।
"हंसस्वरूप" नयन जल वर्षा बांचत देत बुताई॥
हरि तव० ॥ ४ ॥

---

* मेचकताई=कालापन। × सारंग=मोर। + हादुनी=ठनका

मधुसूदन मदन मुरारी मोहन मोसे रूठिगये ॥ ध्रुव॥
बोलन हँसन मिलन बैठन सँग अब सब झूठ भये।
मधुसूदन० ॥ १ ॥
कौल कियो आऊँगो परसों बरसों बीति गये।
अब तरसों बोलन मोहनसों जो चित चोर + लये।
मधुसूदन० ॥ २ ॥
हौं क्यों दोष देऊं प्रीतमको है मेरी तकसीर।
चलत सङ्ग मैं गयउ न तहँ पुनि प्राण न जान दये।
मधुसूदन० ॥ ३ ॥
अब पछताये सरे न कछु यह अवसर चूक कठोरे।
ना जानू मेरी अरजी कब माधव हाथ लये।
॥ मधुसूदन० ४ ॥
क्षमा करैओ कहि माधवसों बिनती "हंसस्वरूप"।
अब आवैं हँसि बोलैं मो ढिग छाँड़ें हठ जो ठये॥
॥ मधुसूदन० ५ ॥

—⊛—

यशोदा टेरत बार २ कोउ लादेरे मेरे युगल कुमार॥ ध्रुव॥
एक लाख गैया मैं वाको दूंगी और भरूंगी सोनेके थार।
कोउ लादे० ॥ १ ॥

+ लये शब्दका अर्थ यहां 'लेवेके' अर्थको जतारहा है।

चलत लाल करि गयो कौल यह लौटेंगे मा हम कंस मार।
ना जानूँ क्यों विलम्ब लगाये उन बिन सूनो लगत द्वार ॥
कोउ लादे० ॥ २ ॥

की चित लायो ऊखल बन्धन, की चित लाई छड़ियनकी मार।
उनके भोळेपनने भुलादी, उनकी महिमा अपरम्पारे ॥
कोउ लादे० ॥ ३ ॥

हे गोकुलके वीर बटोही जो तुम जैयो यमुना पार।
कहियो उन निर्मोही मोहनते तेरी मैयाको जीवन भयो है भारे।
कोउ लादे० ॥ ४ ॥

"हंसस्वरूप" मधुबन अब चलिये करिये बिनती पुनि एकबार।
जो नहिं मानैं वे दोउ लालन तो जल भुन हो जैये छार।
कोउ लादे० ॥ ५ ॥

प्रेम मतवाला मेरा श्याम ॥ ध्रुव ॥
मोरमुकुट मकराकृतकुण्डल, सुन्दर वदन मनहु विधुमण्डल।
कटि किंकिणी पग नूपुरवारे बनमाला गल माहँ सँवारे ॥
सखि मोहि औरनते नहिं काम ॥ प्रेम मतवाला० ॥ १ ॥
हिरण्यकशिपुके उदर बिदारे, जन प्रह्लादको दुःख निवारे,
गणिका गिद्ध अजामिल तारे, सुनिये यशुमति नन्ददुलारे,
"हंस" रटत तोहि आठो याम ॥ प्रेम मतवाला० ॥ २ ॥

एरी सखी मैं तो कासों कहूं कांध ऐसो निठुर मेरी सुधि ना लई री। स्थाई।

कहत "हंसस्वरूप" प्रीति ऐसी पडे कूप अब तो सहै कौन विरह ज्वाल कठिनई री। स्थाई।

—०—

कन्हैया काहू कारेके समतूल, वाके डसे गारुडी लगत है या करै न मंत्र कबूल ॥ ध्रुव ॥
वाको विष मुख मांह बसत है या सर्वांग समूल।
वाको बास बिलनिमहँ देखियत या हियराके कूल॥ कन्हैया० ॥ १
झाड फूंक कछु मानत नाहीं चढत बढत अति शूल।
जबसे डसेउ "हंस" कहँ सजनी सुधिबुधि गयि सब भूल ॥ कन्हैया० ॥ २ ॥

—०—

+सूनी लगत आली गली कुंजबनकी बंशी बजत नाहिं कहु कहां जाऊंरी ॥ ध्रुव ॥
गैया चरति नाहिं, बछडे पिवत नाहिं, बहत ना समीर धीर कैसे कहँ पाऊंरी ॥ सूनी० ॥ १ ॥
ईंधन मँगाओ आली वृन्दावनके वृक्षनको यमुनाके विषम तीर चिता एक रचाऊँरी ॥ सूनी० ॥ २ ॥
"हंस" हिया उठत हूक विरहानल देहु फूँक श्यामचरण ध्यान धरि शीघ्र जरि जाऊँरी ॥ सूनी० ॥ ३ ॥

+ इसको जाजवन्तीके अपदमें गाना अच्छा होगा।

बेरि २ फाटति छतिया लिखत बिरहकी पतिया
अरे सुनु ऊधो हो प्राण निकसियो न जाय ॥ ध्रुव
हमरासे दगा करि गैले मधुबनवा रामा।
अरे सुनु ऊधो हो लौटि ना चितवे यदुराय ॥ अरे० ॥ १
नेह सरोवर एक अद्भुत कमलवा फूले ।
अरे सुनु ऊधो हो ताहि पर भौंरा लुभाय ॥ अरे० ॥ २
सरवरा सुखाईगैले कमल कुम्हलाई गैले ।
अरे सुनु ऊधो हो सिरधुनि भौंरा पछताय ॥ अरे० ॥ ३
देखि एक अचरज बतियां हरि हिया हारको मोतिया।
अरे सुनु ऊधो हो "हंसा" चुगत चितलाय ॥ अरे० ॥ ४

—❀—

कन्हैयाके भैया बैरी भैले हो रामा। ध्रुव
जबसे गइले अकेलि करि गइले सुधिबुधि हरि ले गइळे हो रामा। कन्हैया० ॥ १ ॥
जो मैं जनितौ मोहि बिसरइहैं, यमुनाजल धसि मरितो हो रामा। कन्हैया० ॥ २ ॥
नन्दमहर फ़ुलवरिया, कदमकी कांची डरिया कोइलिका दो बोले हो रामा ॥ कन्हैया० ॥ ३ ॥
जबसे हरि कइळे गमनवा, यशुमतिके सूनो अंगनवां, "हंसा" ठाढ रोवे हो रामा ॥ कन्हैया० ॥ ४ ॥

क्या कोऊ यतन नहिं लाल मिलनको ॥ ध्रु ॥

निगमागम बहुभांति भनत क्या केवल बुधजन लिखन पढनको।
तीरथ धर्म नेम व्रत संयम केवल पापिन पाप दहनको ॥
क्या० ॥ १ ॥

क्योंरे ज्योतिषी ज्योतिष तेरो केवल अंगुरिन अंक गिननको।
की कबहू सो लग्न बतेहो जामें दर्शन चन्द्रवदनको ॥
क्या० ॥ ३ ॥

रे कागा तोहि दूध पिलाऊँ लाऊ कंचन होठ मढनको।
रत्नजटित पायन दूं झुन्झुन जो तू उचरे हरि आवनको ॥
क्या० ॥ ४ ॥

विषकी डली खाय अब देखूं लूं समझा मैं अपने मनको।
की कहु जाय धसूं सरिता जल, की कूदूं हिम माहिं गलनको ॥
क्या० ॥ २ ॥

एरे "हंस" तू व्याकुल हो जनि सीखहु कछु दिन धीर धरनको।
कबहूँ तो श्याम तोहि ढिंग ऐहैं भरि हैं प्याला प्रेम पिवनको ॥
क्या० ॥ ५ ॥

—◎—

सखी सब आशा धूल मिली॥ ॥ध्रु०॥

मैं जानी नित मोहि मिलेगो कान्हा कुञ्जगली।
पै अब वंसी बाजत नाहींताननपुंज भली ॥ सखि० ॥ १

जो सुनि निज प्रवाह जल यमुना तिलभर नाहिं हिली।
सो सब स्वप्न भयो गोकुलको हरिमुख कुन्दकली ॥
सखि० ॥ २ ॥
देख चिरौंजी दधि माखन अरु मिसरी खांडडली।
हरिमुख डारन की अभिलाषा मनते जात टली ॥
सखि० ॥ ३॥
हंस देखु अहिरिन ह्वै बौरी घरते निकलि चली।
देखत नहिं हरि कहँ यमुनातट विरहिन जात जली ॥
सखि० ॥ ४ ॥

——❀——

बाईं भुजा फरकत सखि आज ॥ टेक ॥
अब मोहन आयोहि चहत है नन्दलला ब्रजराज। बाईं० ॥ १ ॥
दधि बेचन गोदूहन छाड्हु छाड़ु सकल गृह-काज।
सब सखि चलि यमुनातट बैठहु आरति मंगल साज ॥ बाईं० ॥ २ ॥
हीरा मोती लाल पिरोजा पन्ना औ पुखराज।
अंगनि अंग संवारि लेहु सब तजि गुरुजनकी लाज ॥ बाईं० ॥ ३ ॥
जो एहि दिशि आवत नहिं दीखे गोपिनको सिरताज।
हंसस्वरूप धसि मरियो यमुनजल जीवनको नहिं काज ॥ बाईं० ॥ ४

——❀——

बहु दिन द्वार खड़ो अहि आशा श्याम मिलेंगे मोहि।
द्वारपालने शब्द सुनायो प्रभु नहिं चाहत तोहि ॥ बहु दिन० ॥ १

निकसि जाहु तुम शीघ्र द्वारते नहिं तेरो कछु काम ।
शीश कटाय भूमि पटकै जो ताहि मिलेंगे श्याम ॥ बहु दिन० ॥ २
काटि लेहु तुम शीश पहरुआ पहुंचावहु हरि पास ।
नयनन दरश दिखाइ मनोहर करिदीजो तेहि नाश ॥ बहु दिन० ॥३॥
'हंसस्वरूप' नाम मिटि जावे झञ्झट सब टलिजाय ।
इतनहु पर कहुं खीझ न जावे उठि न कतहु चलिजाय ॥
बहु दिन० ॥ ४ ॥

—०—

लिपटी है लट जटाओंकी सुन्दर सुहावनी ।
चहुँ ओर जिनके बहरही है गंग पावनी ॥
फिर वह विशाल भाल चन्द्रजाल लाल लोल ।
आंखें खुली हैं चारु मारमद लजावनी ॥
विषधर लिपट रहे हैं जटाजूटमें जहां ।
वृश्चिककी बेंदी देखिये दुखकी नशावनी ॥
विनती यही है चरणोंमें "हंसस्वरूप" की ।
मिलजावे वह छबीली छवि मनकी भावनी ॥

—०—

केशव कबहु तो कृपा करो ।
मन मलीन पापमय माथे पदरज कबहुँ धरो ॥ केशव० ॥
मुख-सरोज चन्द्र पूरण पै चंचल चित्त चकोर ।
इकटक लाये बीती उमरिया मोहिं नाहिं बिसरो ॥ केशव० ॥ १

दीन दुखी चिन्ता चकीमहँ पिस २ ह्वैगयो चूरे ।
हाड मांस सब भस्म भयो अब विरहा नलहिं जरो ॥ केशव० ॥ ३
कहत लजात नीच निज करणी मुख नहिं आवत बात ।
पदपंकज पावनकी आशा अबहू तो बांह धरो ॥ केशव० ॥ ३
नीच ऊँच उत्तम मध्यम अब जाय पड़ूँ जेहि योनि ।
"हंसस्वरूप" रूप माधुरि तव हियते नाहिं टरो ॥ केशव० ॥ ४

—⊛—

*मोकहँ काहे विसारे हे मेरे मनके मीत ॥ ध्रुव ॥
कौन गुरू सिखलायीजी मुँह देखी मीत ॥ मोकहँ० ॥
मैं चाहो तुम नाहिं चहो धिक ऐसी रीति ॥ मोकहँ० ॥
जात पांत कछु नाहिंन तुम सब भांति अतीत ॥ मोकहँ० ॥
"हंस" दुखी कब करिहोजी तुम परमपुनीत ॥ मोकहँ० ॥

—⊛—

मोहन मधुपुर छाये री करिये कौन उपाय ।
बदरा बरसु जनि गोकुल, बरसहु मधुबन जाय ॥ मोहन ॥
तीन लोकके ठाकुर जो सब देवन राय ।
तिन कैसे कौल कियो झूठो अचरज लखियो न जाय ॥ मोहन ॥
रैनि अँधारी भदउआकी देखि जिया घबडाय ।

---

* इसको तिलकामोदके लयमें गाना उत्तम होगा ।

मेघवा गरजे बिज्जु लरजेरी सो कछु मोहि ना सुहाय ॥मोहन॥
हमरी पीर सुनइयो हे ऊधो गोपिन कह बिलखाय ।
"हंसस्वरूप" दरस देवें यह पतिया लिखें यदुराय ॥मोहन॥

—ः—

जो ऊसर बीजहिं त्यागे, पछतावे फिर वह आगे ।
आकाश फूल नहिं लागे, जो जागा सो नहिं जागे ॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ ५ ॥

जो खेले कपटी पाशा, ताते तुम रहहु निराशा ।
मत पडो द्वन्द्वके फांसा, यां दिना चारिको वासा ॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ ४ ॥

सीमल सेवत है सूआ, तहँ अन्त उडत है भूआ ।
भज कुन्ती जाकी फूआ, तब जीते जगको जूआ ॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ ३ ॥

मूरखसे प्रीति न लाओ, नहिं अपनो भरम गँवाओ ।
सूरतकी सेज बिछाओ, प्रीतमको गले लगाओ ।
'हंसा' तोहि राम दोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ २ ॥

अंकम भरि प्रीतम लाओ, सब लज्जा लोक नशाओ ।
जहँ नेह मानसर पाओ, तहँ आप "हंस" बसिजाओ ॥
'हंसा' तोहि रामदोहाई, हरिनाम भजहु मनलाई ॥ १ ॥

करेघा बैठे चरखा कातत बीतगयो बहु काल ।
ताना बानी छोडो भाई छोडो पुलिया माल ॥
॥ ध्रुव ॥
नरी सूतकी छीजत नाहीं दिन२ दूनी होय ।
एक नरी ऊँचो मुख कर दो छूट सकल जंजाल ॥
करघा बैठे० ॥ १ ॥
कोउ खासा कोउ मलमल बीने मलमल कर पछताय ।
योगी जपी तपी सन्यासी भये विनीत निहाल ॥
करघा बैठे० ॥ २ ॥
केतिक सूत मध्यमें अरुझे थान बुनन नहिं पायो ।
चरखा पड्यो रह्यो पुहमीपरे लै गयो कालकराल ॥
करघा बैठे० ॥ ३ ॥
"हंसस्वरूप" इक चादर बीनी झीनीहूँते झीनी ।
रंग चढे नहिं यापै कोई रँगरेजा पामाल ॥
करघा बैठे० ॥ ४ ॥

"हंसा तोहि रामदोहाई" और "करघा बैठे चरखा ....." ये दोनों भजन पहली मचकी के हैं धोकेसे छूटजानेके कारण इस दूसरी मचकीमें दियेगये हैं ।

हंसहिंडोल।

तीसरी मचकी।

[प्रेम पियूष]

(प्रेमके भेद और उनके लक्षणोंका वर्णन)

—◌•◌—

दोहा

पिवत प्रेम पीयूषकण, परममत्त ह्वै जाहिं।
चरणयुगल तिनके नमो जे हरिसखा कहाहिं ॥ १ ॥
हरि हरि हरि कहिके हरूँ, हियके सकल विषाद।
धरि धरि धरि आगे धरूँ प्रिय-प्रीतम-सम्वाद ॥ २ ॥
* प्रेम प्रेम सब कहत हैं, प्रेम न जान्यो जाय।
प्रेमकहानी प्यारकी, विरलहिं पडत लखाय ॥ ३ ॥

---

* प्रेम— " अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपम् " (नारदभक्ति-सूत्र) अर्थात् प्रेमका स्वरूप वचनसे नहीं कहा जासकता। इस प्रेमका अलौकिक एवं अनुपम सुख ईश्वरकी कृपासे हजारों लाखोंमेंसे किसी एक पुरुषको जानपडता है। सो प्रेम कैसा है, कि " मूकास्वा-

प्रेम कहो किहिको कहैं, तिहिंको कैसो रूप ।
किहि विधि ताको पाइये, सुन्दर सहजस्वरूप ॥ ४ ॥
× "रैसो वै स" इक मंत्र है, वेदन दीन्ह बताय ।
कठिन अर्थ या मन्त्रको, रसिकन लेहु लगाय ॥ ५ ॥
सो प्रभु रसको रूप है, रस आनन्द स्वभाव ।
रसिक रसीले जानहीं, सोइ आनन्द प्रभाव ॥ ६ ॥
एक ठाम जहँ ठहरि के, अटकि रहे यह चित्त ।
रस पावे एकाग्रता, प्रेम कहत हैं नित्त ॥ ७ ॥
मोहनि मुरति श्यामकी, जब ही सम्मुख होय ।
तहँ चितकी एकाग्रता, प्रेम कहावत सोय ॥ ८ ॥
चार भेद हैं ⊛प्रेमके, रसिकन कहेउ बिचार ।
इक बिभाव अनुभाव पुनि, सात्विक अरु व्यभिचार ॥ ९ ॥

दनवत् " जैसे गूँगा षट्रसका स्वाद वर्णन नहीं करसकता, इसी प्रकारे प्रेम-रसका स्वाद कोई प्रेमी अपने मुखसे वर्णन नहीं करसकता ।

× "रसो वै सः" यह वेदका मंत्र है, जिसका अर्थ यह है, कि सो प्रभु रस अर्थात् प्रेमका स्वरूपही है । फिर उसी महा प्रभुको वेदने भी शीर्षमंत्रमें "आपो ज्योतिरसोऽमृतम्" रस और अमृतरूपही कहा है ।

⊛ प्रेम (रस) के चार भेद हैं— १. विभाव, २. अनुभाव, ३. सात्विक और ४. व्यभिचारी । विभाव उसे कहते हैं जो उस रसके प्रकट होनेका मूल कारण हो, इसके दो भेद हैं (क) आलं-

पुनि विभावके भेद दुइ, बुधजन तहँ कहिदीन ।
आलम्बन उद्दीपनो, जानत परम प्रबीण ॥ १० ॥
+ आलम्बनके चार पुनि, सज्जन जन सुनि लेहु ।
अलंकार, गुण, चेष्टा अरु तटस्थ चित देहु ॥ ११ ॥

बनविभाव (ख) उद्दीपनविभाव । आलंबनविभाव उसे कहते हैं जो प्रेमके उत्पन्न होनेका अवलम्ब हो । इसके दोभेद हैं (ग) आश्रयालम्बन और (घ) विषयालम्बन । आश्रयालम्बन उसे कहते हैं जहां रसके रहने और उत्पत्तिका स्थान हो । यथा प्रेमियोंका हृदय । विषयालम्बन उसे कहते हैं जो प्रेमके प्रकट होनेका विषय हो । जैसे अपने प्रीतमके सुन्दर मुखारविन्द तथा अन्य अंगोंकी शोभा ।

जैसे अरणीके घिसनेसे आग धधक उठती है इसी प्रकार इस भावकी रगड़ प्रेमियोंके हृदयपरे पडनेसे प्रेमकी आग भडक उठती है इसलिये इसको "उद्दीपनविभाव" कहते हैं ।

× आलम्बनभावके फिर चार भेद हैं— अलंकार, गुण, चेष्टा और तटस्थ ।

(क) प्रीतमके वस्त्रों और आभूषणोंकी सजावट इत्यादिको "अलंकार" कहते हैं ।

(ख) जिसमें प्रीतमकी सुन्दरता अर्थात् उसके रूपकी मनोहरता एवं वचनकी मधुरता प्रकट हो उसे "गुण" कहते हैं ।

(ग) प्रीतमकी कान्तिकी झलक, सुकुमारता और हाव भाव इत्यादिको "चेष्टा" कहते हैं ।

प्रिय प्रीतमके मिलन ते, जो सुख उपज स्वभाव।
भेद नहीं ताको कछुक, ताहि कहत अनुभाव ॥ १२ ॥
एक वार लगिजाय जो, फिर नहिं कबहू छूट।
अचल सु रस रहु सर्वदा, सात्विक कहिय अटूट ॥ १३ ॥
छिन जोडे छिन तोडई, राखे नहीं विचार।
छिन रोवे छिनमें हँसे, कहत ताहि + व्यभिचार ॥ १४ ॥

(घ) प्रीतमके अंगोंमें पान, फूल, अंजन, चन्दन, केसर, इतर इत्यादि सुगन्धित पदार्थोंका सुशोभित होना "तटस्थ" कहाजाता है।

प्रिय प्रीतमके एकत्र होनेसे जो रस प्रकटहो, जिसे वे ही दोनों जान सकते हों अन्य किसीको जिसका अनुभव होना दुस्तर हो उसे "अनुभाव" कहते हैं।

जो प्रेम एकबार उपजकर जन्मजन्मान्तर पर्य्यन्त स्थिर रहे उसे "सात्विक" वा "स्थाई" प्रेम कहते हैं।

+ जो पुनः २ उपजकर विनशजाया करे ऐसे प्रेमको "व्यभिचारी प्रेम" कहते हैं यथा कामियोंका प्रेम नगरनारियोंसे। इसके ३३ लक्षण हैं—

१. निर्वेद— प्रीतमकी दूसरेके साथ प्रीति होनेसे उसके वियोगका दुःख।

२. ग्लानि— वल और उमंगका घटजाना।

३. शंका— प्यारेके मिलनेमें सन्देह होना।

४. असूय— प्रीतमकी प्रीतिमें दूसरेकी प्रीति न सहना।

५. मद— हर्ष और गर्वके उत्पन्न होनेसे कार्याकार्य्यका विकल्पहोना।

६. भ्रम—ऐसा सन्देह होना, कि प्यारा मुझे चाहता है या नहीं।

७. आलस्य— प्यारेसे मिलनेका यत्न न करना।

८. दीनता—वियोगकी व्याकुलतासे मनमें लघुताका उत्पन्न होना

९. चिन्ता— प्रीतमके मिलने न मिलनेका चित्तमें संकल्प-विकल्प उपज आना।

१०. मोह— मन चंचल होनेसे दुःख और भयसे असावधानताका उत्पन्न होना।

११. धृति— प्रीतमके वियोग सहनेका साहस।

१२. स्मृति— अचक अपने प्यारेकी मूर्तिका स्मरण होआना।

१३. व्रीडा— लज्जा।

१४. चपलता— चित्तका चंचल होजाना।

१५. हर्ष— प्रीतमके मिलनेसे जो चित्तकी दशा होती है।

१६. आवेश— प्रीतमके स्वरूपमें लय होजाना अथवा दूसरोंके साथ देखकर कुढना।

१७. जडता— प्यारेके अचानक वियोगादिके दुःखसे जडके समान होजाना।

१८. गर्व—यह, कि मुझको मेरा प्यारा चाहता है।

१९. विषाद— मुझे प्यारा नहीं चाहता ऐसा अनुमान करके दुखी होना।

२०. औत्सुक्य— प्रीतमके मिलनेमें विलम्बका न सहना।

२१. निद्रा— प्रीतमके प्रेममें डूबजानेसे अचेत होजाना।

२२. अपस्मार— प्रीतमकी आशा टूटजानेसे चेत न रहना।

कहि लक्षण व्यभिचार रस सात्विक करूँ प्रवेश।
दशा *आठ तिहिकी कहूँ, सुनतहिं मिटत कलेश ॥ १५ ॥

२३. स्वप्न— मिलनेकी श्रद्धा बढजानेसे प्रीतमकी अनुपस्थितिको भी उपस्थिति समझना।

२४. अविबोध— बेसुध होनेके पश्चात् सुधका आगमन।

२५. अमर्ष— प्यारेकी कीहुई अवज्ञाओंका दुःख होना।

२६. अवहित्थ— हर्ष और शोकके कारण जाने हुएको छुपाना।

२७. उग्रता— प्यारेकी ओरसे अवज्ञा होनेपर क्रोध आजाना।

२८. मति— प्यारेसे मिलनेका सिद्धान्त विचारना।

२९. व्याधि— वियोगसे शरीरका रोगी होजाना।

३०. उन्माद— प्रेमसे पागल होजाना।

३१. मरण— प्यारेके लिये प्राण खोदेना।

३२. त्रास— अचानक भयका होना।

३३. वितर्क— दूसरेके संग प्यारेकी प्रीति होनेसे नाना प्रकारका ध्यान होना।

व्यभिचारी रसके लक्षणोंका वर्णन यहांतक समाप्त हुआ अब आगे सात्विकरसके लक्षणोंका वर्णन कियाजाता है।

* सात्विक प्रेमकी आठ दशाएँ हैं—

प्रमाण— स्वेदः स्तम्भोऽथ रोमांचः स्वरभंगोऽथ वेपथुः।
वैवर्णमश्रुप्रलयः इत्यष्टौ सात्विका मताः॥

अर्थ— १. स्वेद, २. स्तम्भ, ३. रोमांच, ४. स्वरभंग, ५. कम्प ६. विवरण, ७. अश्रु और ८. प्रलय ये सात्विक प्रेमके आठ लक्षण हैं।

प्रथम कम्प रोमांच दुइ तीसरि अश्रु वखान।
चौथ स्वेद स्तम्भ कहँ पञ्चम कहहिं सुजान ॥ १६ ॥
छठी प्रलय अरु सातवीं मुखविवर्ण ह्वैजाय।
आठइ स्वरको भङ्ग है प्रेमिन पढत लखाय ॥ १७ ॥

१. कम्प

कम्प भेद कैसे कहौं, कांपउ सकल शरीर।
मुसकत देखेउँ हे सखी, कान्हा यमुना तीर ॥ १८ ॥
चितवेउ कोर कटाक्षतें कछुक मन्द मुसकाय।
सुख इक पायउँ हे सखी, प्रीतम दीन्ह कँपाय ॥ १९ ॥
कांपत सिरकी गागरी, छूटि पडी वे हाथ।
जो कांपै इहि कम्पते, ताहि नवाऊँ माथ ॥ २० ॥
कांपत जो सुख पाइयां, सो सुख देवन नाहिं।
मनकी मनही जानई, वचन न कहत सिराहिं ॥ २१
बुद्धि परे बानी परे, ◎ सातों सागर पार।
सुनत शेष शारद तहां, मनमहँ करेत विचार ॥ २२ ॥
शेष कम्प जाने सखी, ताते कांपत नाहिं।
जो कांपै क्षणभर कभू, सगर जगत थर्राहिं ॥ २३ ॥

◎ सातों सागरपार कहनेसे कविका यह तात्पर्य है, कि यह रस वडी कठिनतासे प्राप्त होता है।

पीपर पतियां कांपहीं, जैसे लगत समीर।
तस मोहन इक देखतें, कांपत सकल शरीर ॥ २४ ॥

—❀—

२. रोमांच

सुमिरत पियको हे सखी ! मनमहँ उठत उमङ्ग।
चढति अङ्ग रोमावली, वाढति प्रेम तरङ्ग ॥ २५ ॥
आवत हरष बढे सखी, जात सताव वियोग।
इतै उतै रोमावली, हर्ष शोकके योग ॥ २६ ॥
बिरला कोऊ जानई, अस रोमावलि भेद।
लखि न पडे सो अन्यको, पढि लेवे चहुं वेद ॥२७॥
पिय जानै मैं जानऊं, याको गुप्त विचार।
रसिकनके हित कहेउ कछु, रोमावलि व्यवहार २८

—❀—

३. अश्रुपात

भादो बादर बरषहीं, धार मूसला घोर।
ताहूते अधिको सखी, बरषैं नयना मोर ॥ २९ ॥
मिलके बिछुडे हे सखी, सो सुधि उपज अकेलि।
नयन दोऊ भरि आवहीं, सींचन विरहिन वेलि ॥ ३०
सुनेउ कि साजन आवहीं, पोंछन अपने हाथ।
दायें आँसू पोंछहीं, बायें राखें माथ ॥ ३१ ॥

थांभि हाथ तहं सजनको, झटकि देउँ बरजोरि ।
सींचन लागूं चरणको, टपकैं अखियां मोरि ॥ ३२ ॥
अश्रुपातरस श्रवण करि, सज्जनजन बिलखाय ।
सांझ सकारे सींचि हैं प्रेम नीर बरषाय ॥ ३३ ॥
वे बरसैं बरसातमें, ये बरसैं सब काल ।
करपट भींजोही रहत, जाहि कहत रूमाल ॥ ३४ ॥
अश्रु संग मिलिके सखी, टपकैं कजरा बुन्द ।
यहि मसितें मैं अब लिखूं, पतिया निकट मुकुन्द ॥३५ ॥
लिखि कजेरा इक मातरा, ×चन्द्रहास मिलेजाय ।
सारी पाती लिखि सखी लीजै हरिहिं रिझाय ॥३६ ॥
व्यथा लिखत पुनि हे सखी, अश्रुबुन्दें झरिजाय ।
काह करूँ कैसे लिखूं, पतियाहू गलिजाय ॥ ३७ ॥
प्रेम कियारी सींचती, मैं इन अँसुअन धार ।
पत्र पुष्प कहिजात नहिं, क्या उपजे प्रति डार ॥ ३८ ॥
बाढ़त वेली प्रीतिकी, पसरिजाति सबठाम ।
ऐसे पसरत हे सखी, पहुंचति गोकुल ग्राम ॥ ३९ ॥
तेहि पुष्पन कहँ बटुरिके, गूथूं सुन्दर हार ।
विहरन आवे सांवला गर डारूं उपहार ॥ ४० ॥

× चन्द्रहास और विषयाका इतिहास जगत्प्रसिद्ध है, कि विषयाने अपने नेत्रके कज्जलसे एक मात्रा बनाकर चन्द्रहास (अपने प्रीतम) को पाया ।

४. स्वेद

पाती पठई योगकी, ऊधो हाथ मुरारि ।
पढत स्वेद कण अङ्ग में, सखि अब दीन्ह बिसारि ४१
अस चिंता चितपै चढी, सूझत नाहि उपाय ।
तिहिंसे धारा स्वेदकी, अङ्ग-अङ्ग झलकाये ॥४२ ॥
मुख कपोल अरू नासिका, स्वेद भेदको जान ।
ऊधो कैसे जानि हैं कथत रहत जो ज्ञान ॥४३॥
पिय चिंता मोहि हे सखी, पिय मम चिन्ता नाहिं ।
अङ्ग अङ्ग प्रति स्वेदकण, टपकत दिवस सिराहिं४४
को जाने कासौं कहौं, प्रेम पयोधि अथाह ।
पार लगन मैं तो चहौं, धारा प्रेम प्रवाह ॥ ४५ ॥

—⊛—

५. स्तम्भ

झटकि दीन्ह मोहि बिलगही, पटकि मटुकि अनमोल ।
सटकि खडी देखत रही, लटकि लटुरिया लोल ॥ ४६ ॥
कान्हा तोडि चलेगये, खेलनकों चैागान ।
खडी रही तह साँझ लों कागद-चित्र समान ॥ ४७ ॥
कोउ पूछे तू को सखी इकटक लाये ध्यान ।
की कछु भूलेउ की लगेउ, श्याम नयनको बान ॥ ४८॥

हौं कछु नहिं तहँ कहि सकी, चितवत ठढी मूक।
ताहि समय कोकिल तहां, आय सुनायउ कूक ॥ ४९ ॥
कूक सुनत हियरा फटेउ चली चौंक निज गेह।
या रसको सो जानिहैं, जाको लागा नेह ॥ ५० ॥

—❀—

६. प्रलय

प्रेम पयोधि अथाह सखि, पियमुख चन्दा पूर।
देखि मिलन तिहिं सों चहत, यदपि वसत अतिदूर ५१
प्यार ज्वार भाठा चढेउ, बोरेउ सकल शरीर।
सुधि बुधि घर आंगन तहां, डूब नेहके नीर ॥५२॥
डूबत-डूबत डूबिगे, नाभि नासिका सीस।
गोते खायउँ हे सखी, पांच सात दस बीस ॥ ५३ ॥
याको प्रलय बखानिये, छठवीं दशा विभेद।
विछुडन मिलन समय सहज, प्रलय बखानत वेद ॥५४॥
नेहनीर धसिके सखी, जो यह गोता खाय।
वरुण धनद इन्द्रादि तेहि, झुकिके सीसनवाय ॥५५॥

७. विवर्ण

गोकुल धूम मची सखी, श्याम मधैपुर जाय।
सुनत अंग सूखैं सबै अवल हिया घबराय ॥ ५६ ॥

जस जस दूरहिं पडतगये, तस तस विरह तरंग ।
उमडन लागीं हे सखी, कहा भयो रस भंग ॥५७ ॥
मुख चन्दा बिनु दशहुं दिशि, गयी अँधेरी छाय ।
अंखियां पीरी पडिगयीं, मुख विवर्ण ह्वैजाय ॥ ५८ ॥
भरे प्रेमके रंगमें, तनकि टूट जहँ होय ।
ताहि अवस्थाको कहत, दशा विवर्ण निचोय ॥ ५९ ॥
सोइ मुख मोकहँ भावई, जेहि मुख सोह विवर्ण ।
सकले अंग सूखे पडैं, नयन नासिका कर्ण ॥ ६० ॥

—॰—

८. स्वरभंग

कहत कहानी प्रेमकी, सुनत बिरानो नेह ।
हरिविनु हहरत हिय सखी, सुधि न रहत कछु देह॥६१॥
प्रेम मनोरथ वारिवर, भरे हियाके मेह ।
वरषैहों पियपायके, बैठि सुनैहों नेह ॥ ६२ ॥
सिसकत विलखत हे सखी, बचन न मुख कहिजात।
कछुक कंठ कछु होठ महँ, तहँ स्वरभङ्ग लखात॥६३
ये आठों जा पुरुषमें, क्षण-क्षण उपजें जोर ।
प्रीतम ताके निकट है, करे न ताको मोर ॥ ६४ ॥
उपजे जिहिके अङ्गमें, यह स्वरभङ्ग अनूप ।
बार-बार तिहिको नमत, विरही हंसस्वरूप ॥ ६५ ॥

उक्त आठों दशाओंके अतिरिक्त जब प्रेमकी परिपक्वता होने लगती है तो १४ भाव⊛ वा दशाएँ और भी उत्पन्न होतीं हैं जिनका वर्णन नीचे कियाजाता है—

१. उप्त

सुनि छवि मोहनलालकी, राधा मन थ्रस होय।
सो हरि मिलिये प्रेमसों लोकलाज सब खोय॥ ६६॥
" × प्रेमसरोवर" हे सखी, गैयन कृष्ण पियाव।
ताहि समय राधा तहाँ, मज्जन हित चलिआव॥ ६७॥
चारिउ अँखियां लडिगयीं, उरझि गयीं बेढंग।
दूजो फिर नहिं जचै दृग, तजन चहत नहिं संग॥ ६२॥
'उप्त' कहहिं एहि चातुरो, रसिकनके मन भाव।
'हंस' चहत हरिसों मिलन, जो अस बनै बनाव॥ ६९॥

—⊛—

⊛ १. उप्त, २. यत, ३. ललित, ४. दलित, ५. मिलित, ६. छलित, ७. कलित, ८. चलित, ९. गलित, १०. क्रांत, ११. विक्रान्त, १२. सन्तृप्त, १३. संहृत, १४. विहृत।

× प्रेमसरोवर— यह एक सरोवर है जो नन्दग्राम और बरसानेके बीचमें है उस सरोवरमें लोग अब भी स्नान करते हैं।

१. उप्त— प्रियकी सुन्दरता और गुणोंको श्रवणकर मिलनेकी चाह और ऐसी इच्छा होनी, कि प्रीतम आंखोंसे क्षणभर भी दूर न होवे।

२. यत

ऊधोंको आगमन सुनि, जुडिगो सखी समूह ।
बछडे नहिं पीवैं सखी, ग्वाल न गैया दुह ॥ ७० ॥
कोउ पूछत ऊधो कहां, समाचार का दीन्ह ।
लौटि बहुरि आवें कि ना, कौल कहो का कीन्ह ॥ ७१ ॥
उनकी कहत कि औरकी, और सुने मोहि काह ।
मैंतो गोते खाइयां सागर प्रेम प्रवाह ॥ ७२ ॥
प्रीतम मेरे नामकी, कछु कछु पतिया दीन्ह ।
ऊधो मेरे मिलनको, यत्न कहहु का कीन्ह ॥ ७३ ॥
इहि विधि बतियां प्रेमकी, दूतसंग जब होय ।
तहां दशा जो बीतई 'यत' बोलत सबकोय ॥ ७४ ॥

कवित्त

आयो है रामललामा जनकपुरी देखनको,
जानकीने ऐसी सुधि सखिअनते पायी है ।
बाढी परिपूर्ण चाह मिलिवेकी चित्त मांह,
तिहिते रस व्याकुलता मनमें समायी है ॥

---

२. यत— प्यारेका सँदेशा पाकर दूतसे कुशलवार्त्ता पूछनेके समय जो दशा होती है अथवा प्यारा है पर उससे कुछ वार्त्तालाप न होनेके कारण मनमें यही उमंग उठना और यही चर्चा करना, कि यह कौन है ? कहांसे आया है ? ।

कोऊ कहते कौन अहे आयो कहांते यहं,
चर्चा छवि माधुरिकी नगर मांह छायी है।
हंसस्वरूप जब ऐसी गति होय हिये,
दशा ताहि 'यत' कहि रसिकनने गायी है॥ ७५॥

—◈—

३. ललित

लोक लाज कछु ना रहै, चहै शीस कटि जाव।
राधा निकसी ग्राम ते, नन्दग्रामकी चाव ॥७६॥
मिलि लौटत कछु लजिगयी, अँखियां लई छुपाये।
गुरुजन कोउ दीखै नहीं, दशा सो 'ललित' कहाये
॥ ७७ ॥

पुनि मिलिवेकी लालसा, बढत जात हिय माहिं।
श्याम सलोनो रूप सो, हिय ते विसरत नाहिं॥७८॥

—◈—

३. ललित— प्यारेके देखनेकी उमंगमें गुरुजनकी लज्जा न होनी और जब देखलिया तब थोड़ीसी लज्जा अनुभव करनी।

४. दलित

चिन्तासागरमें उठत, जब तब भाठा ज्वार।
सूखत मुँह लाटी लगति, तिहिं कहँ 'दलित' विचार॥७९॥
भूख प्यास लागैं नहीं, पुनि अहार घटिजाय।
पिघलजात नवनीत सम, घर आंगन न सुहाय ॥ ८० ॥
रैनि अँध्यारी है सखी, पुनि तहँ सूनी सेज।
व्याकुलता दूनी बढत, डारत छेद करेज ॥ ८१ ॥
चन्द्रवदनके ध्यानमें, चन्द्रसमान स्वरूप।
जब अपनो ह्वैजाय तब, कहिये 'दलित' अनूप ॥ ८२ ॥

—❀—

५. मिलित

साजनको बिछुडे सखी, बीतेउ दिवस अनेक।
सुधि अवलौंपायी नहीं, थिर नहिं रहत विवेक ॥ ८३॥

---

४. दलित— प्यारेके वियोगमें रंगका बदलजाना तथा निद्रा, आहार इत्यादिका घटजाना, वियोगमें व्याकुलता होनी और ध्यानकरके तद्रूप होजाना।

५. मिलित— बहुत दिनोंके वियोगके पश्चात् फिर प्यारेसे मिलनेपर जो दशा होती है उसे 'मिलित' कहते हैं।

यमुनापार उतरि सखी, दधि बेचन चलि जाउँ ।
औचक भेटेउ हे सखी, यशुमतिसुत तिहिं ठाउँ ॥
॥ ८४ ॥

बिछुडो बहु दिनको मिलेउ, दौरि गले लगि जाये।
तिहि च्छ्य चितकी जो दशा, अनुपम 'मिलित'
कहाये ॥ ८५ ॥

—※—

६. छलित

हरि वियोग ब्रजगोपिका, भ्रमर संग बतराय ।
झूठ कौल मोते कियो, ताहि कृष्ण तू गाय ॥ ८६ ॥
गाढप्रेम-पूरण हिया, तनक क्रोध मिलिजाय ।
ताहि समय चितकी दशा, सब विधि 'छलित' कहाय ॥८७॥

—※—

७. कलित

मिलत प्रेमसरिता बढति, सुधि बुधि सब गलिजाय ।
प्रिय प्रीतमकी लालसा, एक संग रलिजाय ॥ ८८ ॥

---

६. छलित— प्रीतमपर अत्यन्त स्नेहपूर्वक क्रोधित होना ।

७. कलित— प्रीतम मिलनके आनन्दसे द्रवीभूत होना और प्रेमसागरमें निमग्न होजाना ।

गोपिन संग दधि छीन ते, खैंचातानी होय ।
पुनि मुसकन खिल २ हँसन, दशा 'कलित' सो जोय ॥ ८९ ॥

—※—

८. चलित

मरण समय संकल्प अस, पुनि प्रीतम मिलिजाय ।
जन्म-जन्म प्रतिजन्ममें, दूजो नाहिं सुहाय ॥ ९० ॥
दक्षमखहिं जलती समय, सती प्रतिज्ञा कीन ।
शंभु वरों प्रतिजन्ममें, अस मन दृढ करिलीन ॥ ९१ ॥
मरण समय ऐसी दशा, जब हिय उपजै आय ।
'चलित' दशा तिहिंको कहैं, विरहिन हिया सुहाय ॥९२॥

—※—

९. गलित

लता लेजौनी हे सखी, छूवत ही कुम्हलाय ।
ऐसे परसत प्रेम हिय, उरझत नहिं सुरझाय ॥ ९३ ॥

---

८. चलित— देह त्यागनेके समय अपने प्रीतमकी चिन्तामें यही अनुराग करना, कि अगले जन्ममें भी यही सम्बन्ध रहे । जैसे सतीने दूसरे जन्ममें भी शंभुके ही चरणोंमें स्नेह किया ।

९. गलित—प्यारेके सौन्दर्यकीछटापर मनका द्रवीभूत होना ।

प्रीतमकी छवि देखिके व्याकुलता बढ़िजाय।
पिघलजाय नवनीत सम, 'गलित' सु दशा कहाय ॥९४॥

—※—

१०. क्रान्त

अपनी रुचि अनुसार करि, प्रीतमको शृङ्गार।
क्रीडा भाषण हँसन युत, करिये विविध प्रकार ॥ ९५ ॥
चित्त चाह पूरी करे, सुने नहीं कछु और।
सुने तो माधवकी सुने, दूजो नहिं कछु ठौर ॥ ९६ ॥
ताहि 'क्रान्त' कहिये दशा, राखिये चित्तविगोय।
'हंस' प्रीति हठि कीजिये, होनी होय सो होय ॥९७॥

—※—

११. विक्रान्त

भाग्य सराहूँ हे सखी, मिले आजु यदुराय।
बांह गरे धरि विरहकी, दीन्हीं व्यथा मिटाय ॥ ९८ ॥

---

१०. क्रान्त— मनकी चाहके अनुकूल प्यारेका शृंगार आदि करना तथा हँसन, भाषण, क्रीडन इत्यादिसे लगजाना।

११. विक्रान्त— प्यारेके मिलनेसे अपने भाग्यको सराहना अथवा प्यारेके गुणोंकी बडाई करना और उस प्रीतमके अन्य प्रेमियोंको भी सराहना।

लोग कहत करुणायतन, गोपिन कहँ तेहि कन्त ।
एक रूप जानिये सदा, भक्तनि औ भगवन्त ॥ ९३ ॥

—❀—

१२. सन्तृप्त

दशा कहहिं 'संतृप्त' तेहि, लहत जो जीवन्मुक्त ।
श्याम रंग नित नैनमें, नेहनीरसों युक्त ॥ १ ॥
कुंजनके प्रतिडारमें, हरिको रूप अनूप ।
मंजरे पतियां पुष्पमें, निरखत 'हंसस्वरूप' ॥ १०६ ॥
ग्राम गली बाज़ारमें, आंगन देहरि द्वार ।
रोम रोम प्रतिरोममें, दीसत कृष्णमुरार ॥ १०३ ॥
दृगन कामला रोगते, पीत देखि सब ठौर ।
तस रसिकनके नैनमें, श्याम-श्याम नहिं और ॥ १०४ ॥

—❀—

१३. विहृत

नेत्र मूँदि मुख मोडिके, गे हरि कर छिटकाय ।
विविधि भांति पैयां पडूं तऊ दूर चलिजाय ॥ ॥ १०५ ॥

---

१२. संतृप्त— सर्वत्र सबठौर श्याममय ही समझना अर्थात् अपने प्रियतमको ही सब स्थानोंमें देखना ।

१३. विहृत— प्यारेके मनानेमें जो नानाप्रकारकी चेष्टाएँ करनी पडती हैं उस समय जो चित्तकी दशा होती है उसे विहृत कहते हैं ।

हाथ मलत पछितात पुनि, हे विधि हौं का कीन्ह ।
पिया मनाऊँ न मानेउ, मम मति महा मलीन ॥ १०६ ॥
ताहि समय चितकी दशा, विहत सु कहत अनूप ।
बिना प्रेम सुनु मुक्ति सुख, निदरत हंसस्वरूप ॥ १०७ ॥

—◎—

१४. संहत

जानहु संहृत विहृत सम, रसिकन कियो विचार ।
गूँथि नेह माला नयी, प्रीतमके गर डार ॥ १०८ ॥
प्रीतम प्रीति लगाइये, दीजे सब बिसराय ।
चन्दा संग चकोरकी, प्रीति सराही जाय ॥ १०९ ॥
बिछुरे पल जीवे नहीं, मीनहिं जैसी प्रीति ।
तैसी इक दाणके किये, पावै अपनो मीत ॥ ११० ॥
चातक अपनी चोंच कहँ, स्वाती हेतु चलाय ।
सहत वज्रपीडा सदा, तनिक प्रेम चितलाय ॥ १११ ॥
पूरण प्यालो प्रेमको, अधर लगावै जोय ।
प्रीतम चरणसरोजरस, मकरन्दित सो होय ॥ ११२ ॥
सुन्दर मुख कहँ देखिके, वारों तुमपर प्रान ।
चरण तिहारो नयन मम, एक संग सनमान ॥ ११३ ॥

---

१४. संहृत— विहृतका अंग ही है दोनोंमें कुछ अन्तर नहीं है ।

नयन मलों तुम चरणसे, रज अंजन पहिचान ।
दृष्टि विमल देखों तुम्हें, तन मन धन करि दान ॥ ११४ ॥

जो सुख पावौं हे पिया, तुम्हरे सहज मिलाप ।
सो सारद नहिं कहिसकै करै करोड प्रलाप ॥ ११५ ॥

सो सुख दुर्लभ सुरनको, यद्यपि ऊंचे ठाम ।
सोई मजूरी पावई, जाको पूरे काम ॥ ११६ ॥

तिहिं सुखको खोजो सखी, समय न मिथ्या खोय ।
सांचे ब्रह्मानन्दते, सो सुख अधिको होय ॥ ११७ ॥

शुक नारद तेहिं पाइयां, जहँ तहँ दीनी छींट ।
छिंटऊ गोकुल कृष्णाहू, पहरि पगडिया सींट ॥ ११८ ॥

पायउ ब्रजकी गोपिका, ऊधो दयउ बताय ।
भूलेउ तिनकहँ ज्ञान तहँ, प्रेमपियूषहिं पाय ॥ ११९ ॥

बून्द प्रेमपियूष करे, धरिये पल्ले एक ।
दूजे पल्ले राखिये, योग विराग विवेक ॥ १२० ॥
सब मिलि तासौं तुलें नहिं, झुकै पालरो प्रीति ।
भागि चलें आकाशको, जप तप संयम नीति ॥ १२१ ॥
प्रीतम प्रीति न तोडिये, दृढकर गहिये धाय ।
जो तोडेपर जोडिहो, बीच गांठ पडिजाय ॥ १२२ ॥
ध्यान न कछु आनन्द कहुं, प्रेम समान अनूप ।
बार-बार असे गावई, विरही हंसस्वरूप ॥ १२३ ॥

॥ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ॥

हंसहिंडोल ।

चौथी मचकी ।

[हंसकवितावली]

(भगवान्‌के नखसे शिखतकके शृङ्गारका वर्णन सवैयामें)

—:○:—

सवैया

नमिके नित नूतन नेह किये नगनन्दिनिनन्दन पावनको ।
फिर भालविभूषणचन्द्रकला मकरध्वजदर्प नशावनको ॥
गुरुदेव दयानिधि पादसरोरुह मानसभृंग सुहावनको ।
भजु हंसस्वरूप निरन्तर ही भवबन्धनगांठ छुडावनको ॥ १ ॥

—○—

बलवीर भजो मनरे सबलायक नायक जो चतुराननको ।
जिहिंकी छबि देखि मनोज लजै अवतार लियो सहसाननको ॥
हलतैं यमुनाजल खैंचिलियो हनिडारेउ पुत्र दशाननको ।
हरिके गरवाँहिदिये सुखसों, सुरलोक कियो ब्रजकाननको ॥ २ ॥

—⊛—

कच घूँघर सोहलहैं मुखपै जनु भृंग सरोरुह केलि करैं ।
तहँ कुण्डल लोल कपोल भलो, रविकी छबि देखत दूरि धरैं ॥
हँसिके बतियां जु करैं रसकी दँतियां झलकैं जस विज्जु जुडैं ।
अह हंस खडो बटिया निरखै उन नैननते कब नैन लडैं ॥ ३ ॥

—⊛—

\+
अह भालविशालगुलालकरा जनु चन्द्रचकोरचखाश्रुकला
मृगनाभि सुरेख कलङ्क भला टकिलाइ चितै चितवै कमला
अस भालहिं राखु सदा चितमें तब भाललहै परमाकुशला
अब हंसस्वरूप भजो हरिको तब जीवन जात वृथाहीचला
॥ ४ ॥

\+ गुलालकरा चन्द्रमाके समान देदीप्यमान श्यामसुन्दरके विशाल भालपर जो गुलालके छींटे पडेहुए हैं वे छींटे नहीं हैं वरु 'चखाश्रुकला' चकोरकी आंखोंसे जो अश्रुकी धाराएँ झर रही हैं उनके छोटे-छोटे टुकडे हैं ।

दुहुं भ्रू जनु पंचशरा सु रथांग चढायउ शंकर मोहनको।
विशिखैं वरुणी जनु शायकतीक्ष्ण सुसाजिलियो मन बेधनको ॥
चखु चंचल चारु चुराइचलैं चित चातुर प्रेमिन जोहनको।
खु हंस हिया जुगखंजनसो निज मानसपिंजर सोहनको॥ ५ ॥

—◈—

तिरछी अँखियाँ ज़हरीली बनी चुभिजात हिये नस लौहकणी।
फिर बोध नहीं घरबार कहां परिवार कहां कमनी रमणी ॥
जरिजाय सुबुद्धि वसे मति सो हठिजो अस मोहन सो न सनी।
अब हंस तियागहु लाज सबै गुथि लो हरिसों दृढप्रेमतनी ॥ ६ ॥

—◈—

शुकलोललहे मणिमोललियेजनु विम्बनि देन निछावरको
अरुणाईमलीलखिकाकहिये जिय लज्जितजानमहावरको
अरु चिम्बुककीछविसोइकहे जिन निरखेउसेत्रपिशावरको
मुसकानप्रभा जनु हंसछटा छिटकी सुप्रभात दिवाकरको ७

—◈—

अधराधर लाल भये छबिसों मुख डारत पाननकी बिड़ियां।
बलबीर सखासँग डोलत हैं कर सोहत सोननकी छड़ियां ॥
मणिमाणिकमंडित मोरशिखा जहँ झूलत मोतिनकी लड़ियां।
यदि हंसहु संग लिवाय चलैं निज आंगुरसों धरि आंगुरियां ॥ ८

रदपंकति सुन्दर सो सुनिये सब लज्जित दाडिम काबुलकी ।
हँसिदेत जबै ठगिजात सबै दधिबेचत गोपिन गोकुलकी ॥
जब गान सुतान भरें मधुरी चहकें लजिजात सुबुलबुलकी ।
अब दूसेरि हंस भने उपमा जनु पंकति कुन्दकली पुलकी ॥ ९ ॥

—※—

यशुदा गर हार पिन्हायगयी मुखपै कर फेर बलाय लयी
फिर साजि दुहू भुज हाटक ही त्रि जायठ जोडि लगायदई
पहुंची पहुंची मणिबन्ध ढिगै न डिगै वलया सहैचारि मयी
फिर हंस सराहहु भाग्यनिजै प्रभुने भुजसो तव ग्रीवदयी १०

—※—

बँसुरी लहुरी मधुरी धुनिकी, जब छिद्रनपै करजे चपकैं ।
धुनि फैलत लोक तिहूँ गतिजात सु पंचशरा पलकैं झपकैं ॥
अह ! हंस हितै दुख नाशनको जब ही त्रयतापहिंपै लपकैं ।
श्रम कारण विन्दु पसीननकी दुहुँ गोल कपोलनपै टपकैं ॥ ११ ॥

—※—

कटि किंकिणि माणिकहीरप्रवालजडी जहँ पाँति नगीननकी ।
कहुँ खोजत नाहिं फबै उपमा थकि भागत बुद्धि प्रवीणनकी ॥
तहं बांधि पट्ट हरि धावत हैं जनु मेटन दारिद दीननकी ।
लखु हंस गरै तिहिं केहरिकों डर श्यालिन कर्म लकीरनकी ॥१२

उरूकीउपमा कहिजाति नहीं कदलीजनुसांचनिमाहिं ढली
पशु नूपुरशब्द सुहात भलो जब डोलत हैं प्रभु कुंजगली
अह खातखवावतग्वालनको कर माखनऔमिसरीकिडली
जब हंस लहै प्रभु जूठनिको समझै शुभकर्मनि रेख फली १३

—※—

पनही जरदाजिनकी पगसोहति ध्यान लही मनही जिनही।
तिनही सिरपै अपने कबही यमदण्डनि चोटनि नाहिं सहीं॥
÷ असिपत्र न फाडि सकै तिनको, नहिं रौरव दाह दहै कबहीं।
फिर हंस कहै सुनिये सजना श्रुति ये बतियां बहुबार कहीं॥१४

इति नखशिख

—※—

अन्य भावोंके कवित्त॥

झडैं दुहु नैन पड़ै नहिं चैन न आवत बैन जरै छतिया।
जबतैं हरि गे मथुरा नगरी बिन शैन कटै सिगरी रतिया॥
यमुनातट जाय खडी टकिलाय न आपु अवै न लिखै पतिया।
अब हंस न भौरि करो परतीत कठोर अहीरनकी जतिया॥१॥

÷ असिपत्र और रौरवविशेष नरकोंके नाम हैं।

शिव आक धतूरनि मत्तरहैं विधि बेल बबूल वितानननमें।
हरि क्षीरसमुद्रमें सोयरहें मघवा विसरे सुरताननमें ॥
जगकी जननी अवकाश नहीं लगि शुंभनिशुंभ संहारनेमें।
फिर हंस दुखी दुख सोइ सुनै जिहि सोहतकुंडलकाननमें २

—❀—

सुख स्वारथ त्यागि गहे शरणागत छांडि सबै विषवेलि गुसांई।
कुलकान तजे न लजे कबहूँ न भजे चित सुन्दर नार पेराई ॥
परसम्पति पाथरसा समझै बिरथा न गहे कहुं एकउपाई।
कह हंस मिले तिहिं श्याम लला मधुरी मुरली जिन कुञ्ज वजाई ३

—❀—

हमरी हमरी हमरी करते दमडी नहिं साथ गयी मरते।
जब आंख मिची तब लाख कहां, धरि बांधि निकारत हैं घरते ॥
चिनगारिहु आंगुरि ना धरेते तिन दीख हुतासनमें जरते।
अनमोल समा नहिं देहु गवां अब हंस वृथा करेते धरते ॥४॥

—❀—

सिर सो कटुतूमर जानु सखे हरिपादसरोरुह नाहिं सटा
करवाहुं मडो कहिये तिहिको जिहि वीतत खेलत झांझपटा
विषयी बनि डोलत है जगमें कहिये तिहिं कूकर कानकटा।
कब हंस जुडावहुगे छतिया छकिके छबि गोकुलछैलछटा ५

दुःख आपति दाहत दीननकी रुचि राखत प्रेम प्रवीणनकी।
मति देत बनाय मलीननकी अरु बुद्धि बढावत हीननकी ॥
तेहि चित्त बसावहु मित्त सदा जस प्रीति बसै जल मीननकी।
यमजाल छुडा गतिदेत बना प्रभु हंस समान ग़रीबनकी ॥ ६ ॥

—⊛—

बरषैं नयना दुहुँ रैनदिना नहिं आवत चैन मुरारि बिना।
गरेजे तरजे लरजे हियरा प्रभु देखत बाट तटै यमुना ॥
अह! देखत रूप अनूप बिके कछु लाज शरीर रही सुधिना।
अब हंस गिने नित आंगुरिआं कब दर्शनयोगकरेविधिना ७

—⊛—

जबलों शुभबाग बहाररही तबलों नहिं हेत कियो हरिसों।
जब सूखिगयीं नव पुष्पकली तब क्यों करमींजत हौ करसों ॥
नहिं लागत मंजर वृक्षनसों जल सींचिमरो तिनमें बरसों।
यह हंसस्वरूप बिनै कहियो करजोडि दुहू करुणाकरसों ॥ ८ ॥

—⊛—

आयीरी आयी सखी माधव ऋतु आयीरी
माधव मुरारी बिनु गोकुल सुहावे ना।
माधुरी वाणी कैसे कोकिला गुंजार करे,
श्याम मधुर बांसुरि की अबलों धुनि छावे ना॥

चम्पा चमेली अरु मौलसरी मौलि रहें,
गूंजैं नहिं चंचरीक चातक चहचावे ना ।
'हंसवरूप' चित चैन नहिं आवत तनिक,
ऊधवजी माधव सुधि अबलों कुछ लावे ना ॥ ६ ॥

—◎—

दाऊ बिन दावानल होत चन्द्र शीतल ये,
दाऊ बिन यमुनाजल तप्त तैल धार है ।
दाऊ बिन सूखिगयीं कुन्जनकी नवल वेलि,
दाऊ बिन गोवर्द्धन विपतको पहार है ॥
दाऊ बिन व्याकुल हैं गोकुलके ग्वालबाल,
दाऊ बिन देख सखे जीवन धिक्कार है ।
टेरि कहे बार-बार देहु दर्श एक बार,
गोकुलके कुन्जनमें 'हंस' इन्तज़ार है ॥ १० ॥

—◎—

नागिनसे डँसावो चाहे सागर धँसाओ,
चूर २ करवाओ जलवाओ चांडालसे ।
गजराजसे पिचाओ चाहे शूली खिंचाओ,
टूक २ करवाओ हां ! खड्ग विकरालसे ॥
विष घोलके पिलाओ चाहे पर्वतसे गिराओ,
चरण जूतीसिलाओ पिताजू मेरी खालसे ।

हंसस्वरूप प्रह्लाद विनय मानो हाय,
नेह ना छुडाओ मेरे प्यारे नन्दलालसे ॥ ११ ॥

—०—

क्षमाके सागर कवि गावे तोहिं बार २,
सांची यदि पांती प्रभु क्षमाकरोईगे।
डूबति है नैया भवसागरके मांझधार,
यमुना खेवैया कर करुआ धरोईगे ॥
पापिन सर्दार नेहिं पापकेर पारावार,
अघ ओघके दरैया अघ मेरो दरोईगे।
हंसस्वरूप पापकूप खनेउ वारवार,
छिद्रनि भरैया तिहिं तकि २ भरोईगे ॥ १२ ॥

—०—

जनकलली कहैं हनुमन्त सुनो मेरीजी,
मोहि लैचलहु जहां रघुराज हैं सुवेलपै।
नाहि त प्राण दूँ निकार प्रण याहि है हमार,
अग्नि ते तपाय तई गिरौं तप्त तेलपै ॥
लंकापति खड्गधार होय गला वारपार,
मरण समय ध्यान रहे सांवरे सुहेल पै।
विरह अग्नि जरेत छाती वाटिका यह लगत ताती,
जानकी नहिं बचै 'हंस' झगड झमेल पै ॥ १३ ॥

विहसत विकसत हैं दाड़िमके दाने जनु,
दतियां द्युति दामिनिकी पंकति सराहिये।
मन्द-मन्द मुसकत जो बोलत रसीली बात,
जबते गे मथुरा विरहव्यथा कराहिये॥
एजी ऊधव तुमतो कहत साधहु जोग,
कीटनते शुद्ध अन्न वृथा निंदाहिये।
'हंस' कहत आइये बिताइये जी मेरे संग,
बालेपनकी प्रीति तो कछु दिन निबाहिये॥ १४॥

मेरी ओर देखो हरि पतितनको नायक हूं,
सुनि पावन तिहारो नाम लीन्ही शरणाई है।
बूडत जहाज राखु अबतो निज नाम लाज,
भवसिंधुके खेवैया नैया मांझधार आयी है।
बेडी है बयार कछु सूझत नहिं वारे पार,
हौं तो गँवार प्यारे कोऊ संग ना सहायी है।
गोपिन उतैरया यदुरैया बलभैया तुम,
'हंस' औरहि पुकारै काह तेरी ही दुहाई है॥१५॥

तीन लले करके तीरीरी करडारे मोहि,
तीन बीबी देखत तिकि, की गई मनसे।
देखि व्यथाग्रसित मोहि हँसेत पचास तीती,
लागत हिय चोट मानो लोहनके घनसे।

'हंसस्वरूप' सातपांच नौ तेरह संग।
ढाईके साथ साढेतीनके मिलनसे,
सुमिरो तेहि प्यारे है तुमको शतवारे गंध।
गाओ तेहि बार-बार माधुरे वचनसे ॥ १६ ॥

टिप्पणी— इस कवित्तका पहला पद किसी अन्य कविका बनाया हुआ है पर बहुत लोगोंके पूछनेपरे और अनेक कवितात्रोंके देखनेपर भी इसका पता नहीं लगा तब इसके तीन शेष पद पूरे कियेगये हैं जिनका अर्थ यों है—

तीन लल— लल लल लल ६ ल
ती रीरी— रीरी रीरी रीरी ६ री
तीन वीवी— वीवी वीवी वीवी ६ वी
ती कीकी— कीकी कीकी कीकी ६ की
पचास ती ती— ५० ती ती सौती
७+५+९+१३+२॥+३॥— ४० अर्थात मन
शतवार गन्ध— सौ गन्ध

श्यामसुन्दर मनमोहनने छल करके मेरे मनको छरलिया जिनकी छवि देखकर मैं पूर्ण प्रकार छकिगई तब मेरी व्यथाको वढतीहुई देख (पचास तीती) सौति मुझपर हंसने लगी जिसकी चोट मेरे हृदयमें घनके समान लगगई है। ब्रजकी सखीकी ऐसी गति देख हंसवरूप कहता है, कि ७+५+९+१३+२॥+३॥= मनसे मेरे प्यारे तुमको सौगन्ध है, कि तुम उसको भजो और उसका यश वार वार मधुर वचनोंसे गायाकरो।

पाँचवीं मचकी।

श्री १०८ श्रीस्वामी हंसस्वरूप रचित

(फ़ारसी के पद्य हिन्दी अक्षरोंमें)

मदां नादां हमादां अज़ तुरा दूर, कि दर क़ालिब तो जां जलवा रसद नूर।
ख़िरद ख़ामा दिला करदी चराख़ाम बरौ अज़ पाय हिम्मत बरलबे बाम।
बुवद अज़ अक्ल अफज़ूं राज़े आं यार, न बुकशायद कसे ईं दुर्जे इसरार।
यक़ीं रा हमयक़ीं दरवे नमानद, हकीमओ ज़ाहिदओ मुल्ला चिदानद।
दिलादर पाक क़दमश ख़ुदरा ख़मकुन, बरो दर बाग़े इशरत दूर ग़म कुन।
चे दानद हंस ज़ाते पाक आं यार, बदानद ऊ के दारद मग़्ज़ बेदार॥ १॥

اشعار ازتصنیفات سري ۱۰۸ سري سوامي هنس سروپ جي
بزبان فارسي

مداں ناداں همه داں از تو دور که در قالب تو زان جلوه رسد نور
خرد خامه دلا کردي چرا خام برو از پائے همت برلب بام
بود از عقل افزون راز آن یار نه بکشاید کسے ایں درج اسرار
یقین را هم یقیں دروے نماند حکیم و زاهد و ملا چه داند
دلادر پاک قدمش خود را خم کن برو در باغ عشرت دور غم کن
چه داند هنس ذات پاک آن یار بداند او که دارد مغز بیدار ۱

خامه - قلم خام - کچا خم - ٹیڑا

चरा महरूम मीमानी ज़ेउल्फ़त रहबरे अकबर,
वदां रहमां रेहीम आंरा न इसियां ख़ुद बदिल आवर।
बवक़्ते अद्ल पोशीदः कुनम ख़ुदरा ज़े दरबारश,
बवक्ते फ़ज़ल रौशन मीशवम पेशे ऊ चूं ख़ावर।
मशौ ग़ाफ़िल वशौ श्राक़िल बबार अश्के ख़िरदमन्दी,
बपाश आं बरसरे उल्फ़त मदां कसरा ज़ुज़ां दावर।
ब वहरे इश्क़ ग़ोता ज़न रसां ख़ुदरा बक़ारे ऊ,
के याबी आं दुरेतावां चो बाशद बख़्त तो यावर।
चूं अज़ लज्जात महसुसात ख़ुदरा मीकुनी आज़ाद,
बियाबी लज्जते अर्शेबरीं कुन ईं सुख़न बावर।
मबाश ऐ हंस ग़ाफ़िल अज तसव्वुर आं महे कामिल,
बजुज आं शाहेखूवां शक्ले दीगर दर दिलत नावर ॥२॥

—०—

چرا محروم میمانی زالفت رهبر اکبر
بدان رحمان رحیم آنرا نه عصیان خود بدل آور
بوقت عدل پوشیده کنم خود راز دربارش
بوقت فضل روشن میشوم پیش او چون خاور
مشو غافل بشو عاقل ببار اشک خرد مندی
به پاش آن برسر الفت مدان کسرا جز آں داور
به بحر عشق غوطه زن رساں خود را بقعر او
که یابی آں در تابان چو باشد بخت تو یاور
چو از لذات محسوسات خود را میکنی آزاد
بیابی لذت عرش برین کن این سخن باور
مباش اے هنس غافل از تصور آں مه کامل
بجز آں شاه خوبان شکل دیگر در دلت ناور—٦

चराकरदी मरा अज़ दिल फरामोश,
कि अज़ मुद्दत बबीनम मन तो ख़ामोश।

तरहुम कुन लबे शीरीं बबुकशा,
निगह दारो गुना हम रा बबखशा,

दिलो जां नीज दारम बर तो कुरबान,
सरेम चश्मम् व हम इज्जत व हरमा।

दिले पज़मुरदा अज दीदारे तो यार,
बियाबद ताजगी चुं गुल व गुलज़ार।

बएक लमहा दिही पिश्शेरा शाही,
कुनीं शाहां रा मुफलिस गर तो ख्वाही।

बकुन अज दाम दुनियां हंस आज़ाद,
जुज ईं दिगर न दारद हेच फरियाद ॥ ३ ॥

—❀—

چراکردی مرا از دل فراموش   که از مدت به بینم من تو خاموش
ترحم کن لب شرین به بکشا   نگه دار و گنا هم را به بخشا
دل وجان نیز دارم بر تو قربان   سرم چشمم وهم عزت و حرمان
دل پژمرده از دیدار تو یار   بیابد تازگی چون گل بة گلزار
بیک لمحة دهي پشه را شاهي   کني شاهان را مفلس گر تو خواهي
بکن از دام دنیا هنس آزاد   جز این دیگر ندارد هیچ فریاد —۳

४

सुबुह दम यार बपुरसीद कि तारीफे तो चीस्त,

मन बगुफ्तम बशनाश आशिक़े जां बाज़ तो कीस्त ।

गर बरानीज़े दरेपाक तो ईं मुश्ते ख़ाक,

न र वम बे तो सनम गर दिही जन्नत ताज़ीस्त,

लफ्ज फिरदोसे इरम जन्नतो हम अर्शेबरीं,

बे तो बेकार वो बेमानी तलफ्फुज बाक़ीस्त ।

दिलो जां बहरे तो कुरबान कुनद हंसस्वरूप,

अकबर आ खूब बदानम कि तू यारमजानीस्त ।

—●—

۴

صبحدم یار بپرسید که تعریف تو چیست

من بگفتم بشناس عاشق جانباز تو کیست

گر برانیءِ ز درپاک تو این مشت خاک

نروم بے تو صنم گر دهي جنت تا زیست

لفظ فردوس ارم جنت و هم عرش برین

بے توبیکار وبے معني تلفظ با قیست

دل و جان بهر تو قربان کند هنس سروپ

اکبر آ خوب بدانم که تو یارم جانیست

५

आज़ाद शौ अज़ माओ मन दर ज़क़ज़क़ो बक़बक़ मशौ,
ऐ क़ल्बरा शफ़्फ़ाफ़ कुन दर बज़्मे गुमरा हां मरौ।
याददार ईं पँदरा दरज़ाते खुदयाबी सुरूर,
दूर कुन अज़ दिल दमागत ख्वाहिशे गिलमानो हूर।
उल्फ़तज़ जन्नत मदार ओ नफ़रतज़ दोज़ख़ मकुन,
ऊँचह यारत्त हुक्मरानद अज़ सरो चश्मत बकुन।
सीनाअत गर ख़ाली अज़ कुफ़रो मुसलमानी बवद,
यार रा बीनीदरां ता लफ़्ज़ बामानी शवद।
हंस गर बेखे खुदी अज़ ख़ंज़रे वहदत दरद,
ज़र्रए नाचीज़ बर अर्शेबरीं रोज़े बरद।

—⊙—

٥

آزاد شو ازماومن در زق زق و بق بق مشو
اے قلب را شفاف کن دربزم گمراهان مرو

یاد دار این پندرا درذات خود یابی سرور
دورکن ازدل دماغت خواهش غلمان و حور

الفت از جنت مدار و نفرت از دوزخ مکن
انچه یارت حکم راند ازسرو چشمت بکن

سینه ات گر خالی از کفرو مسلمانی بود
یاررا بینی دراں تا لفظ با معنی شود

هنس گر بیخ خودی از خنجرے وحدت درد
ذره ناچیز بر عرش برین روزے برد.

६

दिले मन काफ़िरो मन कैदे मुसलमानीग्रम ,
इज्तमाये कि ईं ज़िदैन बजुज़ मानीग्रम ।

दिले मन सख्त तरश्रज संगे जवाहिर दानी ,
हैफ़ ईं नस्त कि मन मख़मले काशानीग्रम ।

दिले मन मुनकिरे काबा श्रो कलेसा दानी,
मन शहीदम वहमा कायले कुरबानीग्रम ।

अज्म कर्दम के सनाशम दिलो ज़ाते खुदरा,
अज़मो अर्ब मनम या के खुरासानीग्रम ॥

कूवते नेस्त के इदराक मनम कार देहद,
चुग़्द वीराना दरीं मुल्क हमा दानीग्रम ।

खुदरा हुशियार बकुन बरदरे ऊ हंसस्वरूप ।
ईं सखुन गो के तलबगार मेहरबानीग्रम ।

—◎—

५

دل من کافرو من قید مسلمانی ام اجتماعے کہ این ضدین بجز معنی ام
دل من سخت تر از سنگ جواہر دانی حیف این است کہ من مخمل کاشانی ام
دل من منکر کعبہ و کلیسا دانی من شہیدم وھمہ قائل قربانی ام
عزم کردم کہ شناسم دل و ذات خودرا عجم و عرب منم یا کہ خراسانی ام
قوتے نیست کہ ادراک منم کار دھد چغد ویرانہ درین ملک ھمہ دانی ام
خودرا ھشیار بکن بردر او ھنس سروپ این سخن گو کہ طلبگار مہربانی ام

७

तबस्सुम बर रुखे आं यार बीनम,
गुले ख़न्दीदा दर गुल्ज़ार बीनम।
बदांनिस्तम् रुख़श गंजीनये हुस्न,
कि हरसूयश क़तारे मार बीनम्।
चरा गुफ्ती कि ईं ख़ाले सियह हस्त,
कि दाग़े दिल बरां रुख़सार बीनम्।
गुज़िस्ता अज़ सरे बाज़ार आं तुर्क,
कि हर पीरो जवां बेज़ार बीनम।
मसीहा देह मरा दारूए दीदार,
ज़ेहिजरत मन् दिले बीमार बीनम।
ग़मओ रंजो अलम कर्दम फ़रामोश
कि अज पेशो क़फ़ा ग़मख्वार बीनम।
फ़लक देह 'हंसरा' रौशन ज़मीरी,
कि हर जानिब रुखे दिलदार बीनम।

८

تبسم بر رخ آن یار بینم گل خندیده در گلزار بینم
بدانستم رخش گنجینهٔ حسن که هرسویش قطار مار بینم
چرا گفتی که این خال سیه هست که داغ دلبران رخسار بینم
گزشته از سر بازار آن ترک که هر پیرو جوان بیزار بینم
مسیحا ده مرا دارو ے دیدار زهجرت من دل بیمار بینم
غم و رنج و الم کردم فراموش که از پیش و قفا غمخوار بینم
فلک ده هنس را روشن ضمیری که هر جانب رخ دلدار بینم

(उर्दूके पद्य हिन्दी अक्षरोंमें) ८

मुसाफिरत तै हुई हमारी ज़मीन व हरे कुरेए आसमां की,
हम आशिक़ों को नहीं थकावट चलो ख़बर लेवें ला मकां की।
कहीं तो हासिल मुराद होगी उमीदका गुंचा खिल पडेगा,
दमाग़ से काफ़िरों के फिर बदगुमानी मिटजावे बेगुमां की।
पहुँच दरे यार शोख़ी करके जो फाड डाले दुई का पर्दा,
तो देखले जलवह उस सनमका निशानी मिलजावे लानिशांकी।
जो संग के काटनेमें अपनी बसर करे ज़िन्दगी दो रोज़ा,
कलामे शीरीं की गुफ्तगु में ज़बान खुलजावे बे ज़ुबां की।
लिबास को छोड़ होजा उरियां तो देखले हंस इसका जादू,
कि जंगमें है ज़हूर ख़ूबी मियां ये शमशीर बे मियां की।

—o—

اشعار اردو ٨

مسافرت طے هوئي هماري زمين و هر کره آسمان کي
هم عاشقون کو نهين تهکاوٹ چلو خبر ليوين لا مکان کي

کهين تو حاصل مراد هوگي اُميد کا غنچه کهل پڑے گا
دماغ سے کافرون کے پهر بدگماني مٹجاوے بيگمان کي

پهونچے در يار شوخي کرکے جو پهاڑ ڈالے دوئي کا پرده
تو ديکهلے جلوه اوس صنم کا نشاني ملجاوے لا نشان کي

جو سنگ کے کاٹنے مين اپني بسر کرے زندگي دوروزه
کلام شرين کي گفتگو مين زبان کهلجاوے بيزبان کي

لباس کو چهوڑ هوجا عزيان تو ديکهلے هنس اسکا جادو
که جنگ مين هے ظهور خوبي ميان يه شمشير بے ميان کي

६

दिल जब दिया सनमको तो फौरन मुकर गया,
जां क़ीमतीको छोड दिल अरज़ां करूंगा क्या।
जब जान दी तो हँस कर कहने लगा वह शोख़,
देखो तो नब्ज इसकी न करता हो कुछ रया।
दिल और जान देके चढा जब जनाज़ेपरे,
चीं बरजिबीं हो दूरसे मुँह मोड रह गया।
तासिर ख़ेज असर मेरे शौक़ वस्लका,
खेंच उनको फिर तो गोर ग़रीबांमें लेगया।
दी ठोकरें दो चार जो मेरे मज़ारेपर,
हँस कर कहा कि ख़ाम था क्यों मुफ्त मरगया।
इतने में लहद शक़ हुई जान आई हंस में,
रहम आगया उठाया गलेसे लगा लिया।

९

دل جب دیا صنم کو تو فوراً مکر گیا
جان قیمتي کو چھوڑ دل ارزاں کرونگا کیا
جب جان دي تو هنسکر کہنے لگا وہ شوخ
دیکھو تو اسکي نبض نہ کرتا ہو کچھہ ریا
دل اور جان دیکے چڑھا جب جنازے پر
چین بر جیں ہو دور سے مونھہ موڑ رہگیا
تاثیر خیز اثر میرے شوق وصل کا
کہنچ اونکو پھر تو گور غریبان مین لیگیا
دیں ٹھوکرین دو چار جو میرے مزار پر
هنس کر کہا کہ خام تھا کیون مفت مر گیا
اتنے مین لحد شق هوئي جان آئي هنس مین
رحم آگیا اوٹھایا گلے سے لگا لیا

१०

छुड़ाया यारने दुनियाके ख़ूनी पंजए सगसे,
हुआ बश्शाश दिल से जानसे हर रेशा वो रगसे।
कशिश उल्फ़तमें सुनता हूँ वह कुछ जज़बा भी कहते हैं,
ये दोनों बेश क़ीमत है हज़ारों क़ीमती नग से।
वे हैं क़िस्मत के छोटे जिनको ये न्यामत नहीं हासिल,
चहे वे हों शहन्शाह दारफ़ानीमें चलें मग से,
रुखे दिलदार से ग़ाफ़िल लगा जक़ जक़ व बक़बक़में,
तो जानों भूलकर वह ठग गया है यां किसी ठग से,
मोहब्बत यार से करना रुखे दिलदार पर मरना,
ये दो जुमले सिखाकर अब चला है हंस इस जग से

—●—

١٠

چھڑایا یارنے دنیا کہ خوني پنجۂ سگ سے
ھوا بشاش دل سے جان سے ھر ریشہ و رگ سے

کشش اُلفت میں سنتا ھون وہ کچھہ جزبہ بھي کہتے ھین
یہ دونون بیش قیمت ھین ھزارون قیمتی نگ سے

وے ھین قسمت کے چھوٹے جنکو یہ نعمت نہین حاصل
چہے وے ھون شہنشہ دارفاني مین چلیں مگ سے

رخ دلدار سے غافل لگا زق زق و بق بق مین
تو جانو بھول کر وہ ٹھگ گیا ہے یان کسي ٹھگ سے

محبت یار سے کرنا رخ دلدار پر مرنا
یہ دو جملے سکھا کر اب چلا ھے ھنس اس جگ سے

११

साक़िया जाम मय शौक़ का घोंटा तो पिला,
छोड घर बार नजानू हूं कहां मैं हूं चला,
कोशिशें लाख हुईं मेरी तरफ से यारो,
एक ज़र्रा भी मगर राज़े मोहब्बत न खुला।
किसी आशिक़ के बुरे हाल पै रोउँ कबतक,
क्या कहूं अपनी ही हालत मुझे देती है रुला।
दर्द फ़ुर्क़त को तो देखो कि हर एक लमहे में,
क़तरहा अश्क मेरी आंखो से देताहै चुला।
गंज क़ारूँ भी तुला कम बतराज़ूए अजल,
आशिक़े-रब किसी पल्ले में कभी कम न तुला।
जिस की तलाश में दिनरात परीशान था हंस,
ज़हे किस्मत के वह तो अपने ही सीनेमें मिला।

١١

ساقیا جام مے شوق کا گھونٹا تو پلا
چھوڑ گھر بار نجانون هون کہاں مین هون چلا
کوششین لاکھ هوئیں میري طرف سے یارو
ایک ذره بھي مگر راز محبت نه کہلا
کسی عاشق کے برے حال په روؤن کب تک
کیا کہون اپني هي حالت مجھے دیتي ہے رلا
درد فرقت کو تو دیکھو که هر اک لمحه مین
قطره ها اشک میري آنکھونسے دیتا ہے چلا
گنج قارون بھي تلا کم به ترازوے اجل
عاشق رب کسي پله مین کبھي کم نه تلا
جسکي تلاش مین دن رات پریشان تھا هنس
زهے قسمت که وه تو اپنے هی سینه مین ملا

१२

रुख़े दिलदार से इक टुकड़ा कहीं नूरका छूटा,
हूरो गिलमानो फ़रिश्तोंने उसे ख़ूबही लूटा।
उनसे बच करके जो कुछ क़ालिबे इन्सान में आया,
चमने यार में उल्फ़त का लगाया बूटा।
क़ैसो फ़रहाद औ ज़ुलेख़ासे तो जाकर पूछो,
मये उल्फ़तका सुबू जिनसे न फोड़े फूटा।
देवो जिन और मलायक से हिलाये न हिला,
सीने पर जिसके गड़ा इश्क़का बेंड़ा खूँटा।
बद नसीबीने मगर हां तेरे दिल ख़स्ताको हंस,
ऐसी न्यामत से हटा दस्तए ग़मसे कूटा।

۱۲

رخ دلدار سے اِک ٹکڑا کہین نور کا چھوٹا
حور و غلمان و فرستون نے اوسے خوب ھي لوٹا
اون سے بچکر کے جوکچھہ قالب انسان مین آیا
چمن یار مین اُلفت کا لگایا بوٹا
قیس و فرهاد و زلیخا سے تو جاکر پوچھو
* مئے اُلفت کا سبو جنسے نہ پھوڑے پھوٹا
دیو و جن اور ملا یک سے هلائے نہ هلا
سینہ پر جسکے گڑا عشق کا بینڑا کھونٹا
بدنصیبي نے مگر هان تیرے دل خستہ کو هنس
ایسي نعمت سے هٹا دستۂ غم سے کوٹا

* اسے مئے محبت بهي پڑھ سکتے هین

१२

मरीज़े इश्क़ की लाहल दवा करे न कोई,
दवा करे तो करे पर मरे मरे न कोई।
मरे अगरे तो बने क्यों न मजनूँ से लैला,
बहिश्त मिलने की ख़्वाहिश भी फिर करे न कोई।
हुबाब फूट मिला जब कि मौज दरिया से,
तो जुज़को कुलसे इलहदा कहीं करे न कोई।
अगरे बिठाले कभी नूह अपनी कश्ती में,
तो फिर कहीं किसी तूफ़ान से डरे न कोई।
हज़ारों बार हुआ ज़िबह हंस उसके लिये,
अब अपनी बिस्मिली का किसी जापै दम मरे न कोइ।

—❁—

۱۳

مریض عشق کي لاحل دوا کرے نه کوئي
دوا کرے تو کرے پر مرے مرے نه کوئي

مرے اگر تو بنے کیون نه مجنون سے لیلي
بہشت ملنے کی خواهش بهي پهر کرے نه کوئي

حباب پهوٹ ملا جب که موج دریا سے
تو جز کو کل سے علحده کہین کرے نه کوئي

اگر بٹها لے کبهي نوح اپني کشتي مین
تو پهر کہین کسي طوفان سے ڈرے نه کوئي

هزارون بار هوا ذبح هنس اوسکے لئے
اب اپني بسملي کا کسی جاپه دم بهرے نه کوئي

१४

सब तर्फ़ से हटा कर दिल देदिया है तुमको,
अब मुर्दतन पड़ा हूं फिर क्या बताऊं तुमको ।
आते नज़र नहीं हैं यां ख़ेशो अक़रबा अब,
तुम ख़ुद कहो कि अब मैं क्या क्या बनाऊँ तुमको ।
आक़ा अगर बनाऊं ख़िदमत न जानूं कुछ भी,
जब काम कुछ बताओ उज़्रें सुनाऊं तुमको ।
मादर पिदर बिरादर का रिश्ता गर लगाऊं,
बेरिश्ता लोग कहते कैसे मैं पाऊं तुमको ।
गर दोस्त तुमको कहदूं चढ़जावें त्योरियां झट,
तुम शाह हो गदा से कैसे मिलाऊं तुमको ।
गर पीर मैं बनाऊं लायक़ मुरीद कब हूं,
नालायक़ी मैं अपनी कितनी जनाऊँ तुमको ।
सब तौर से बुरा हूं पर हूं तुम्हारा साहिब,
तुम हंस के जिगर हो कैसे हटाउँ तुमको ।

۱۴

سب طرفسے ہٹا کر دل دیدیا ہے تمکو   اب مردتن پڑا ہوں پہر کیا بتاؤں تمکو
آتے نظر نہیں ہیں یاں خویش و اقربا اب   تم خود کہو کہ اب میں کیا کیا بناؤں تمکو
آقا اگر بتاؤں خدمت نجانوں کچھہ بھی   جب کام کچھہ بتاؤ عذریں سناؤں تمکو
مادر پدر برادر کا رشتہ گر لگاؤں   بے رشتہ لوگ کہتے کیسے میں پاؤں تمکو
گر دوست تمکو کہدوں چڑھجاوین تیوریاں جھٹ   تم شاہ ہو گدا سے کیسے ملاوں تمکو
گر پیر میں بناؤں لایق مرید کب ہوں   نالایقی میں اپنی کتنی جتاؤں تمکو
سب طور سے برا ہوں پر ہوں تمہارا صاحب   تم ہنس کے جگر ہو کیسے ہٹاؤں تمکو

१५

आज क्यों नज़रें आपकी टेढ़ीसी हैं,
भौहें चढती हुई वो त्योंरयां बेड़ीसी हैं ।
तुम गुनाहों को मेरे दिल में न लाओ साहिब,
अब करो मुआफ़ ज़ियादा न सताओ साहिब ।
क़त्ल करनेकी जो ख़्वाहिश हो तो सर हाज़िर है,
नोक मिज़गां के तले मेरा जिगर हाज़िर है ।
आपका होके जो फ़ेलों की जज़ा पाऊँ मैं,
है तआज्जुब कि गुनाहोंकी सज़ा पाऊं मैं ।
नाज़ बरदार तुम्हारा हूं नहीं इस में कलाम,
जानलो हंस को तुम अपने ग़ुलामोंका ग़ुलाम ।

۱۵

آج کیوں نظریں آپکی ٹیڑھي سي هیں
بهوین چڑهتي هوئین و تیوریاں بیڑیسي هین

تم گناهون کو میرے دل مین نه لاؤ صاحب
اب کرو معاف زیاده نه ستاؤ صاحب

قتل کرنے کي جو خواهش هو تو سر حاضر ہے
نوک مژگاں کے تلے میرا جگر حاضر ہے

آپکا هوکے جو فعلون کي جزا پاون مین
ہے تعجب که گناهون کي سزا پاؤن مین

ناز بردار تمهارا هون نهین اس مین کلام

جان لو هنس کو تم اپنے غلامونکا غلام

१६

पड़ा रेहूं रहे उश्शाक़ में कभी न कभी,
सवारी उनकी इधर को निकल पड़ेगी सही।
कुचल गया तो मिली राह जावदानी की,
बला से क़ालिब ख़ाकी में जां रही न रही।
संभल गया तो पकड़लूंगा फिर अनान उनकी,
मिले थे रोज़ अज़ल को जो हो तुम्हीं न वही।
यह जुम्ला कहके गिरूंगा मैं पाक क़दमो पर,
रकाब संग चलूँ आरज़ू दिली है यही।
रकाब क़दमे मुक़द्दस न पकड़ी जिसने हंस,
वह मुफ्त यां से गया देखो दोनों दस्त तिही।

۱٦

پڑا رهوں رہ عشاق مین کبهي نہ کبهي
سواري اونکي ادهر کو نکل پڑیگي سهي

کچل گیا تو ملي راہ جاوداني کي
بلا سے قالب خاکي مین جان رهي نہ رهي

سنبهل گیا تو پکڑلونگا پهر عنان اونکي
ملے تهے روز ازل کو جو هو تمهیي نہ وهي

یہ جملہ کهکے گرونگا مین پاک قدمون پر
رکاب سنگ چلون آرزو دلي ہے یهي

رکاب قدم مقدس نہ پکڑي جسنے هنس
وہ مفت یاں سے گیا دیکهو دونو دست تهي

१७

जो सरकण्डा व सुतली हाथ लेकर,
मैं छाऊं घर का अपने टूटा छप्पर।
जो घर में होवे टूटी चार पाई,
हथेली पर नहीं हो एक पाई।
जिधर देखो उधर टट्टी भी टूटी,
पकाने की खपड़िया भी हो फूटी,
टपकतीं बूंद भींगे कोहना बिस्तर।
फटी कुरती भी तर होवे सरासर,
जो बाज़ूये सनम पर हंस सर हो,
तो फिरे अर्शे बरीं ये तेरा घर हो।

—●—

۱۷

جو سرکنڈا و ستلي ها تهه لیکر
میں چهاؤں گهر کا اپنے ٹوٹا چهپر

جو گهر میں هووے ٹوٹی چار پائی
هتهیلي پر نہیں هو ایک پائی

جدهر دیکهو اودهر ٹٹي بهی ٹوٹي
پکانے کي کهپڑیا بهي هو پهوٹی

ٹپکتیں بوند بهیںگے کهنہ بستر
پهٹي کرتي بهي تر هووے سراسر

جو بازوے صنم پر هنس سر هو
تو پهر عرش بریں یہ تیرا گهر هو

१८

+देता है लुत्फ़ जामे मय ख़ुशगवार ख़ास,
पहलू में हम पियाला हो जब अपना यार ख़ास।

सब रक्सो कुनां वज्द में रहते हैं सुबोह शाम,
जब मय कशोंको मिलती है फ़स्ले बहार ख़ास।

क्या बादए गुलगूँ में रंग भरता है दुचन्द,
साक़ी हो जबकि लालह रू व गुलअज़ार ख़ास,

हैं क़हक़हे साग़िर में सुबू झूम रहे हैं,
मयख़ानह में पीता है कोई तरहदार ख़ास।

ज़ाहिद जो मयके पीने में कुछ उज़्र करेगा,
भरदूंगा तेरे प्याले में गर्दो ग़ुबार ख़ास।

मय ख़ानए आलम में सभी एक तरह हैं,
दीवाना हो मस्ताना हो, हो होशियार ख़ास,

है हंस बना चश्मये कौसरे से तेरा मय,
महशर तलक रहेगा यह तेरा ख़ुमारे ख़ास।

(+ देता है लुत्फ़.जाम मय ख़ुशगवार ख़ास)
इस पदको मुज़फ्फरपुर मुस्लिम कविमंडलके विद्वानोंने श्री १०८स्वामी हंस स्वरूपजी महाराज के पास पूर्ति करनेके लिये भेजा था जिसकी पूर्ति उपर्युक्त पदोंमें कर दी गयी।

١٨

† دیتا ہے لطف جام مے خوشگوار خاص
پہلو میں هم پیاله هو جب اپنا یار خاص

سب رقص کناں وجد میں رہتے هیں صبح و شام
جب میکشوں کو ملتي ہے فصل بہار خاص

کیا باده گلگوں مین رنگ بہرتا ہے دوچند
ساقي هو جبکه لاله رووگلعذار خاص

هیں قهاۓ ساغر مین سبو جهوم رہے دیں
میخانه میں پیتا ہے کوئي طرحدار خاص

زاهد جو مے کے پینے مین کچهه عذر کریگا
بهر دونگا کهڑے پیاله مین گر دو غبار خاص

میخانۂ عالم مین سبهي ایک طرح هین
دیوانه هو مستانه هو هو هوشیار خاص

ہے هنس بنا چشمه کوثر سے تیرا مے
محشر تلک رهیگا یه تیرا خمار خاص

---

† (دیتا ہے لطف جام مے خوشگوار خاص). یه مصرع مظفرپور مشاعره کے علماوں نے سري ١٠٨ سوامي هنس سروپ جی مهاراج کے پاس پورا کرنیکے لئے بهیجا تها جسے سوامي جی مهاراج نے اشعار مندرجه بالا سے پورا کیا

१८

कबतक हंसी कराबगे मुझको ज़लील करके,
क्यों नाक काटते हो मुझको शकील करके।
दरबार में तुम्हारे इन्साफ़ क्या नहीं है,
फिर किसको मैं बुलाऊं अपना वकील करके।
अय शाह दो जहां के मुआफ़ी का आसरा है।
वह कौन है जो जीते तुमसे दलील करके।
मैं अपनी जां बरी को आलम में जुस्तजूकी,
पाया न कोई शाफ़ी लाखों सबील करके।
चर्खे कुहन ने अपनी चक्की में पीस डाला,
शुर्फ़ाय वे गुनाह को पूरा रज़ील करके।
गर्चेह गुनाह मेरे अम्बार से लगे हैं,
पर उनकी तुम सज़ा दो उनको क़लील करके।
इस हंसरूप के दिन क़दमों में तेरे गुज़रे,
अब किसका आसरा ले अपना ख़लील करके।

—o—

१९

کبتک هنسي کراوگے مجھکو ذلیل کرکے کیون ناک کاٹتے هو مجھکو شکیل کرکے
دربار مین تمھارے انصاف کیا نہین ہے پھرکسکو مین بلاؤن اپنا وکیل کرکے
اے شاہ دو جہان کے معافي کا آسرا ہے وہ کون ہے جوجیتے تمسے دلیل کرکے
مین اپني جان بري کوعالم مین جستجوکي پایانہ کوئی شافیع لاکھون سبیل کرکے
چرخ کہن نے اپني چکي مین پیس ڈالا شرفاء بے گناہ کرپورا رزیل کرکے
گرچہ گناہ میرے انبار سے لگے هین پر اونکي تم سزا دو اونکو قلیل کرکے
اس هنس روپ کے دن قدمونمین تیرے گذرے اب کسکا آسرا لے اپنا خلیل کرکے

२०

तौसीफ़ उस सनम की सीने पै क्या लिखूं,
दिलदार वेवफ़ा लिखूं या बावफ़ा लिखूं।
नैरंगियां जो आईं नज़र उसकी ज़ात में,
मैं उनको पुरदग़ा लिखूं या पुरजफ़ा लिखूं।
देखा है जौरो लुत्फ़ लिये दोनों हाथ में,
राज़ी लिखूं मैं उसको या मुझ से ख़फ़ा लिखूं।
दीदार उसकी करती है दरदे जिगरको दूर,
मैं उनको नुसख़ा मर्ज़ लिखूं या शफ़ा लिखूं।
दाख़िल है मुद्दतोंसे अर्ज़ी विसाल की
मर्ज़ी अगर न होवे तो फिर इस्तिफ़ा लिखूं।
हंस स्वरूप रोज़े अज़ल से व हश्र तक,
मैं उस को रास्तो चप लिखूं पेशो क़फ़ा लिखूं।

۲۰

توصیف اوس صنم کي سینه په کیا لکھوں
دلدار بیوفا لکھون یا باوفا لکھوں
نیرنگیاں جو آئین نظر اوس کي ذات مین
مین اونکو پر دغا لکھون یا پرجفا لکھوں
دیکھا ہے جورو لطف لئے دونوں ھاتھه مین
راضی لکھون مین اونکو یا مجھسے خفا لکھوں
دیدار اوسکي کرتی ھے درد جگر کو دور
مین اوسکو نسخه مرض لکھوں یا شفا لکھوں
داخل ھے مدتون سے عرضي وصال کي
مرضي اگر نه هووے تو پھر استعفا لکھوں

هنسا سروپ روز ازل سے وہ حشر تک
مین اوسکو راست وچپ لکھوں پیش وقفا لکھوں

२१

कहो क्यों आज उमडता है कलेजा मेरा,
वस्ल के शौक़ से भरता है कलेजा मेरा ।
शायद आमद है कहीं आज शहेखूबांकी,
पर रक़ीबों से यह डरता है कलेजा मेरा ।
हुक्मा केहते हैं लाहिल है दवा इसकी नहीं,
ज़ख़्मे हिज्र से सड़ता है कलेजा मेरा ।
शेख़ से कहदो कि लेजावे सफ़ीना अपना,
वाज़ शरई से बिगड़ता है कलेजा मेरा ।
वेदो क़ुरआन व तोरेत व अंजील नहीं,
आयते इश्क़ को पढ़ता है कलेजा मेरा ।
आज ही मौत का सामान है अय हंसस्वरूप,
कारे दुनियां से निबड़ता है कलेजा मेरा ।

٢١

کہو کیوں آج اومڑتا ہے کلیجہ میرا
وصل کے شوق سے بہرتا ہے کلیجہ میرا
شاید آمد ہے کہیں آج شۂ خوبان کي
پر رقیبو نسے یہ ڈرتا ہے کلیجہ میرا
حکما کہتے ہیں لاحل ہے دوا اسکي نہیں
زخم ہجرسے سڑتا ہے کلیجہ میرا
شیخ سے کہدو کہ لیجاوے سفینہ اپنا
وعظ شرعي سے بگڑتا ہے کلیجہ میرا
وید و قرآں و توریت و انجیل نہیں
آیت عشق کو پڑھتا ہے کلیجہ میرا

آج ھي موت کا ساماں ہے اے ھنس سروپ
کار دنیا سے نبڑتا ہے کلیجہ میرا

२२

इन दिनों दर्दे जिगरें ज़ख़्म जिगर दोनों हैं,
सच है ये नख़्ले मुहोब्बत के समर दोनों हैं।
दीनो दुनिया को जो माक़ूल नज़र से देखा,
क़ैद करने के यह ज़ंजीर बतर दोनों है।
ज़ेरे आफ़ाक़ के यह ख़ाकी व आबी देखो,
क़ुदरती फ़र्श बिछे वरों बहर दोनों हैं।
तेरी तौसीफ़ बयां करने में सुम्मुम व बकुम,
देख अंगुश्त बलब नज़्मो नसर दोनों है।
जुस्तजू में तेरे हैरान शबो रोज़ सनम,
मशरक़ो मग़रब की तरफ़ माह महर दोनों हैं।
हंस कहता है चलो देर हुई घर अपने,
शबे तारीक है यां ख़ौफ़ो ख़तर दोनों है।

۲۲

ان دنوں درد جگر زخم جگر دونوں ھہیں
سچ ہے یہ نخل محبت کے ثمر دونوں ھہیں
دیں و دنیا کو جو معقول نظر سے دیکھا
قید کرنے کے یہ زنجیر و بتر دونوں ھہیں
زیر آفاق کے یہ خاکي و آبی دیکھو
قدرتي فرش بچھے بر و بحر دونوں ھہیں
تیری توصیف بیان کرنے میں صمم و بکم
دیکھہ انگشت بلب نظم و نثر دونوں ھہیں
جستجو میں تیرے حیران شب و روز صنم
مشرق و مغرب کي طرف ماہ و مہر دونوں ہیں
ھنس کہتا ہے چلو دیر ھوئي گھر اپنے
شب تاریک ہے یاں خوف و خطر دونوں ہیں

२३

गोदे मादर में जिसे सुबुह को रोते देखा
शाम को गोदे लहद में उसे सोते देखा ।

क्या कहूं दारे फ़नाई के तमाशे यारो,
हर बशर को दुरे अफ़गार पिरोते देखा ।

उज्बे शाही से जो दिन रात अकड़ते फिरते,
उनको फिर जामए अफ़लास को धोते देखा ।

इश्क़ कामिल नहीं जादूय बला ख़ेज़ है हंस,
क़ीमती जान जहां लाखों को खोते देखा ।

—◎—

۲۳

گود مادر مین جسے صبح کو روتے دیکھا
شام کو گود لحد مین اسے سوتے دیکھا

کیا کہون دار فنائي کے تماشے یارو
ہر بشر کو در افگار پروتے دیکھا

عجب شاهي سے جو دن رات اکڑتے پہرتے
اونکو پہر جامۂ افلاس کو دھوتے دیکھا

عشق کامل نہیں جادوے بلا خیز ہے ھنس
قیمتي جاں جہاں لاکہون کو کہوتے دیکھا

२४

मय उल्फ़त का तो इक जाम पिलादे साक़ी,
गाऊँ ऐसा न रहै कोई तराना बाक़ी।
ढूँढते ढूँढते सहरा व बियाबान सभी,
हो चुके ख़त्म रहा कूचए जानां बाक़ी।
मुझे उस्तादने सिखलादिये कुरआनो हदीस,
सबके इश्क़ रहा एक पढ़ाना बाक़ी।
मिलचुकी आखें मेरी शौक़से हर फ़र्दो बशरसे,
चश्मे जानासे रहा एक मिलाना बाक़ी।
दूरअन्देशो फ़हीमो बड़े दाना व अक़ील,
गये घर अपने रहा हंस दीवाना बाक़ी।

۲۴

مئے اُلفت کا تو اِک جام پلادے ساقي
گاؤن ايسا نہ رهے کوئي ترانا باقي
ڈهونڈهتے ڈهونڈهتے صحرا و بیاں‌بان سبهي
هوچکے ختم رها کوچۂ جاناں باقي
مجهے اُستاد نے سکهلادے قراں و حدیث
سبق عشق رها ایک پڑهانا باقي
ملچکي آنکهین میري شوق سے هر فرد بشر سے
چشم جانان سے رها فقط ملانا باقي
دور اندیش و فهیم و بڑے دانا و عقیل
گئے گهر اپنے رها هنس دیوانا باقي

२५

मेरे प्यारे मुझे क्यों इस तरह बरबाद करते हो,
तुम अपने बन्दों के बन्दे को क्यो नाशाद करते हो।
गुनहगारों का अफ़सर हूं मुझे ख़िलअत इनायत हो,
सुना है ख़ानमा बिगड़ा हुआ आबाद करते हो।
कभी यक पिश्शह को तुम एक पल में शाह करते हो,
शहन्शाहों को लमह भर में बे बुनियाद करते हो।
दरे दौलत पै मैं रोज़े अज़ल से हूं कमर बस्ता,
बजा लाऊँ सरो चश्मों से क्या इरशाद करते हो।
रिहाई बख़्शते हो गर असीरे दाम दुनियां को,
तो देखूं हंस को फिर किस तरह आज़ाद करते हो।

۲۵

میرے پیارے مجھے کیون اسطرح برباد کرتے ہو
تم اپنے بندونکے بندہ کو کیون ناشاد کرتے ہو
گنہگارونکا افسر ہون مجھے خلعت عنایت ہو
سنا ہے خانما بگڑا ہوا آباد کرتے ہو
کبھی اک پشہ کو تم ایک پل میں شاہ کرتے ہو
شہنشاہون کو لمحہ بھر مین بے بنیاد کرتے ہو
در دولت پہ مین روز ازل سے ہون کمر بستہ
بجا لاؤن سرو چشمون سے کیا ارشاد کرتے ہو
رہائی بخشتے ہو گر اسیر دام دنیا کو
تو دیکھون ہنس کو پھر کسطرح آزاد کرتے ہو

२६

वह कौनसा मज़हब है जो आला है सभों पर,
हर मुल्क में हर क़ौम में बाला है सभों पर।
है इश्क़ हक़ीक़ीका वह मज़हब सुनो यारो,
रिन्दोंने जिसे ढूँढ निकाला है सभों पर।
क्या हिन्दू मुसलमान औ ईसाई यहूदी,
मस्जिद हो या मंदिर हो दुबाला है सभों पर,
जिस मज़हबो मिल्लतका हर इक फ़र्द है क़ायल,
जिस शमअ के जलने से उजाला है सभों पर।
जिस दीनका पैग़म्बर व हामी व रसूल,
उस यारेने ख़ुद बनके सँभाला है सभों पर।
जिस फ़िर्क़े के सब लोग सदा रहते हैं मद होश,
अय हंस ढंग जिसका निराला है सभों पर।

٢٦

وہ کونسا مذہب ھے جو اعلی ھے سبھوں پر
ھر ملک مین ھر قوم مین بالا ھے سبھون پر
ھے عشق حقیقي کا وہ مذھب سنو یارو
رندوں نے جسے ڈھونڈ نکالا ھے سبھون پر
کیا ھندو مسلماں او عیسائي یہودي
مسجد ھو یا مندر ھو دو بالا ھے سبھون پر
جس مذھب و ملت کا ھر اک فرد ھے قایل
جس شمع کے جلنے سے اوجالا ھے سبھون پر
جس دین کا پیغمبر و حامي و رسول
اوس یار نے خود بن کے سنبھالا ھے سبھون پر
جس فرقے کے سب لوگ سدا رھتے ھین مد ھوش
اے ھنس ڈھنگ جسکا نرالا ھے سبھوں پر

२७

किसी दिन एक जा मैं था व तू था,
जो तू तुर था तो मैं भी ख़ुश गुलु था।

मैं आशिक़ था व तू माशूक़ मेरा,
मैं था सादिक़ सहर ख़ुरशीद तू था।

जो तू बाग़े इरम था मैं सबा था,
जो तू गुल था तो मैं भी वाँ पै बू था।

जो तू था हुस्न मैं भी वाँ अदा था,
जो तू ख़ूबी था मैं भी ख़ूबरू था।

रहा करते थे इक मशरब में दोनों,
जो मैं था जाम तू मेरा सुबू था।

जो तू इस्लाम था मैं दीन था वाँ,
जो तू नारा अज़ां था मैं वज़ू था।

जो तू था बहर मैं था मौजे साहिल,
जो तू था नहर मैं भी आबजू था।

जो तू रोज़ा था मैं भी था नमाज़ी,
जो तू सुबहान सिजदा मैं रुकू था।

भुलाईं क्यों ये सारी बातें तूने,
हमेशा "हंस" तेरे रूबरू था॥

کسي دن ایک جا مین تها و تو تها
جو تو سر تها تو مین بهي خوش گلو تها

مین عاشق تها و تو معشوق میرا
مین تها صادق سحر خورشید تو تها

جو تو باغ ارم تها مین صبا تها
جو تو گل تها تو مین بهي وان په بو تها

جو تو تها حسن مین بهي وان ادا تها
جو تو خوبي تها مین بهي خوبرو تها

رها کرتے تهے اِک مشرب مین دونون
جو مین تها جام تو میرا سبو تها

جو تو اسلام تها مین دین تها وان
جو تو نعره اذان تها مین وضو تها

جو تو تها بحر مین تها موج ساحل
جو تو تها نهر مین بهي آبجو تها

جو تو روزه تها مین بهي تها نمازی
جو تو سبحان سجده مین رکوع تها

بهلا تجهے کیون یه ساري باتین تو نے
همیشه همنس تیرے روبرو تها

२८

बुल्बुले नालां से कहदो छोडदे तर्ज़े फ़ुग़ाँ,
फ़िक्र लाखों कर थके बोले नहीं गुल बेदहां ।

धोके से वह फँस गया है इश्क़ में बे रूह के,
लुत्फ़ उल्फ़त का कहां माशूक़ हो जब बे ज़ुबां ।

है मुहब्बत बे मज़ा ज़ीरूहका बेरूह से,
सदमा परवाना शमा पर कुछ नहीं होता अयां ।

इसलिये हरगिज़ मुहब्बत मत करो नादान से,
दर्दे हिज्रां सामने पत्थरे के क्यों करना बयां

हंस भी दुनियां की ऐसी बेवफ़ाई देखकर,
छोडकर मानससरोवर चलचला है लामकां

۲۸

لبل نالان سے کہدو چہوڑدے طرز فغان
فکر لاکہون کر تھکے بولے نہین گل بیدھان

دھوکے سے وہ پھنس گیا ہے عشق مین بے روح کے
لطف اُلفت کا کہان معشوق ھو جب بیزبان

ہے محبت بے مزہ ذي روح کا بے روح سے
صدمة پروانہ شمع پر کچہہ نہیں ھوتا عیان

اسلئے ھرگز محبت مت کرو نادان سے
درد ھجران سامنے پتہرکے کیون کرنا بیان

ھنس بہي دنیا کي ایسي بیوفائي دیکھکر
چہوڑ کر مانسسرور چل چلا ہے لامکان

२६

वे ग़मगुसार मेरे आये चले गये,
वे निगहदार मेरे आये चले गये।
आखें थी ग़र्क़ मेरी दरियाये फ़िक्र में,
देखा नहीं कि कैसे वे आये चले गये।
लाखों शकील नाज़ुक हुस्नो अदा के साथ,
इस दारे बेबक़ा में आये चले गये,
नौशीरवां सिकन्दर दारा से नामवर,
दो दिन के लिये दहर में आये चले गये।
अए हंस रह न ग़ाफ़िल तू भी चलेगा इकदिन,
तुझ से हज़ारों आसी आये चले गये।

۲۹

وے غمگسار میرے آگئے چلے گئے
وے نگہدار میرے آگئے چلے گئے

آنکھیں تھیں غرق میری دریاے فکر میں
دیکھا نہیں کہ کیسے وے آئے چلے گئے

لاکھوں شکیل نازک حسن و ادا کے ساتھ
اس دار بیبقا میں آئے چلے گئے

نوشیروان سکندر دارا سے نامور
دو دن کے لئے دھر میں آگئے چلے گئے

اے ھنس رہ نہ غافل تو بھی چلیگا اک دن
تجھسے ہزاروں عاصی آگئے چلے گئے

३०

इक तरफ़ है मौत इस्तादा सरे बालीन पर,
पायताने की तरफ़ वैदो हकीमो डाक्टर।
दाहिने रोते खड़े सब अपने ख़ेशो अक़रबा,
और बायें दुख़्तरो फ़रज़न्दोहम मादर पिदर।
अपनी हिम्मत भर कोई कुछ बाज़ आता है नहीं,
पर किसी की कुछ नहीं चलती है ताक़त मौत पर।
अलविदा वो अलविदा वो अलविदा वो अलविदा,
हो गया पूरा सुनो अब आज दुनियां का सफ़र।
लीजिये अब दण्डवत आदाब तस्लीमो दुआ,
हंस जाता है अकेला दारेफ़ानी छोड़कर।

۳۰

اک طرف ہے موت استادہ سر بالین پر
پائتانے کي طرف بیدو حکیم وڈاکٹر
داھنے روتے کھڑے سب اپنے خویش و اقربا
اور بائیں دختر و فرزند و ھم مادر پدر
اپني ھمت بھر کوئي کچھ باز آتا ہے نہین
پر کسي کي کچھ نہین چلتي ہے طاقت موت پر
الوداع و الوداع و الوداع الوداع
ھو گیا پورا سنون اب آج دنیا کا سفر
لیجئے اب ڈنڈوت آداب تسلیم و دعا
ھنس جاتا ہے اکیلا دارفانی چھوڑ کر

३१

कुल्फ़ते दुनिया है दुश्मन उल्फ़ते दिलदार का,
दूर कुल्फ़तको करो हासिल हो वस्ल उस यारका।
काफ़ को बदलो अलिफ़ से रखलो फिर सीनेमें तुम,
मश्क़ करलो रोज़ो शब माकूस लफ्ज़े मारका।
जब मुलायम हों तो सारे ऐब छुप जावें दिला,
गुलके ख़्वाहिशमन्दको सदमा नहीं कुछ ख़ारेका।
सोहबते शुरफ़ाय से पुम्बा भी फ़ज़ीलत पाता है,
दर गुलूये बिरहमन रुतबा बढ़ा ज़ुन्नारका।
हंस अपने मानसर में यह सदा देता है रोज़,
अय मसीहा नुस्ख़ाह दे तू इस दिले बीमारका।

۳۱

کلفت دنیا ہے دشمن اُلفت دلدار کا
دور کلفت کو کرو حاصل ہو وصل اُس یار کا

کاف کو بدلو الف سے رکھہ لو پہر سینہ مین تم
مشق کرلو روز شب معکوس لفظ مار کا

جب ملایم ہون تو سارے عیب چھپ جاوین دلا
گل کے خواہشند کو صدمہ نہین کچھہ خار کا

صحبت شرفاء سے پنبہ بہی فضیلت پاتا ہے
درگلوے برھمن رتبہ بڑھا زنار کا

ہنس اپنے مان‌سر مین یہ صدا دیتا ہے روز
اے مسیحا نسخہ دے تو اِس دل بیمار کا

३२

दिले आशिक़ ने कहा साबुने ग़म को मलकर,
हो गया साफ़ जो कुछ दाग़ था पहला मुझपरे।
मैं जो मजनूँ सा मेरे हिज्र में रहता मजनूँ,
कर क्या सकती थी इक ज़र्रा भी लैला मुझपर।
हिज्र से जंग में तो मैं भी हूं रुस्तम सानी,
काम देती हैं मेरी सब्र की सिपरें मुझपर।
नोक मिज़गाने सनम से है छिदा मेरा जिगर,
आहनी तीर चहो जितने चलालो मुझपर।
हंस घबरोता नहीं क़त्ल व क़ुरबानी से,
बार लख तेग़ निगह यार चलाले मुझपर।

—०—

۳۲

دل عاشق نے کہا صابن غم کو ملکر
ھوگیا صاف جوکچھہ داغ تھا پہلا مجھپز

مین جومجنوسا میرے ھجر مین رھتا مجنون
کرکیا سکتی تھي اک ذرہ بھي ليلي مجھپر

ھجرسے جنگ مین تو مین بھي ھون رستم ثاني
کام دیتي ھین میری صبرکي سپرین مجھپر

نوک مژگان صنم سے ہے چھدا میرا جگر
آھني تیر چہو جتنے چلالو مجھپر

ھنس گھبراتانھین قتل و قربانی سے
بار لکھہ تیغ نگہ یار چلالے مجھپر

३२

रोते रोते ये मेरी मर्दमकें बैठ गईं,
सदमय हिज्र से यह सारी रगें बैठ गईं ।
देखकर शहे ख़ूबां के कहीं हुस्नो जमाल,
हूर जन्नत की सभी शर्म से चुप बैठ गईं ।
जादूगर ने कहीं कुछ पढ़के जो फूँका अफ़्सूं,
कौडियां दर्दउड़ीं इश्क़ के सर बैठ गईं ।
तनपै मलते थे शबो रोज़ जो कुमकुम चन्दन,
हड्डियां उनकी तये ख़ाक सभी बैठगईं ।
क्या कहूँ इश्क़ के मैदान में उड़ते उड़ते,
बालो पर हंस की परवाज़ सभी बैठगईं ।

—•—

۳۳

روتے روتے یہ میری مردمکیں بیٹھ گئیں
صدمہ ہجر سے یہ ساری رگیں بیٹھ گئیں

دیکھ کر شہ خوباں کے کہیں حسن و جمال
حور جنت کی سبھی شرم سے چپ بیٹھ گئیں

جادوگر نے کہیں کچھ پڑھ کے جو پھونکا افسوں
کوڑیاں درد اُڑیں عشق کے سر بیٹھ گئیں

تن پہ ملتے تھے شب و روز جو کمکم چندن
ہڈیاں اونکی تہ خاک سبھی بیٹھ گئیں

کیا کہوں عشق کے میدان میں اُڑتے اُڑتے
بال و پر ہنس کی پرواز سبھی بیٹھ گئیں

३४

क़फ़स से अब मुझे आज़ाद करदे, अरेसैयाद मुझको शाद करदे,

करूं परवाज़ जा बैठूं चमन में, कहीं सम्बुल कहीं शम्शाद करदे।

तुझे फिर चहचहे शीरीं सुनाऊं, मेरे आगे मेरा फ़रहाद करदे,

फ़लकने सख़्तियां डालीं जो मुझपर, उन्हें तू एकदम बरबाद करदे।

अरे यो हंस क्यों है पा बज़ंजीर, मन ओ तू दोनों बेबुनियाद करदे।

३४

قفس سے اب مجھے آزاد کردے—ارے صیاد مجھکو شاد کردے

کروں پرواز جا بیٹھوں چمن میں—کہیں سنبل کہیں شمشاد کردے

تجھے پھر چہچہے شیریں سناؤں—میرے آگے میرا فرہاد کردے

فلک نے سختیاں ڈالیں جو مجھ پر—اونہیں تو ایک دم برباد کردے

ارے او ہنس کیوں ہے پا بہ زنجیر—من و تو دونوں بیبنیاد کردے

३५

धोका खाया तो संभलना भी तेरे हाथ ही है,
फँस गया है तो निकलना भी तेरे हाथ ही है।
बहरे उल्फ़त में अगर ग़ोतहज़नी सीखे तू,
दुरे नायाब को ले आना तेरे हाथ ही है।
नज़र आजावे कहीं वह जो तेरा शाह हसीन,
मुख्तसिर सारी कहानी का तेरे हाथ ही है।
कोशिशें लाख करे कोई शहे हफ्त अक्लीम,
जिसे पावे नहीं वो देखो तेरे हाथ ही है।
आने जाने की किसीके तुझे क्या परवाह हंस
मिलना जुलना व मुकरजाना तेरे हाथ ही है।

۳٥

دهوکا کهایا تو سنبهلنا بهي ترے هاتهه هي هے
پهنس گیا هے تو نکلنا بهي ترے هاتهه هي هے
بحر اُلفت میں اگر غوطه زني سیکهے تو
درِ نایاب کو لے آنا ترے هاتهه هي هے
نظر آجاے کهیں وه جو ترا شاه حسین
مختصر ساري کهاني کا ترے هاتهه هي هے
کوششیں لاکهه کرے کوئي شه هفت اقلیم
جسے پاوے نهیں وه دیکهو ترے هاتهه هي هے
آنے جانے کي کسیکے تجهے کیا پروا هنس
ملنا جلنا و مکرجانا ترے هاتهه هي هے

३६

कहीं खंजर है कहीं नेज़ा है तलवार भी है,
इश्क़ ज़ालिम है सितमगर है ओ ख़ूंख़्वार भी है।
इसको छेदो ज़रा सुराख़ करो देखो सही,
इस कलेजे में कहीं सूरते दिलदार भी है।
कोई कहता है जला होता है आशिक़का जिगर,
ख़ाक होनेका कहीं देखो तो आसार भी है।
दर्द बढता है दवा करती नहीं फ़ायदा कुछ,
अय मसीहा तेरी मिहनत क्या बेकार भी है।
क्यों कहा तूने मेरे सामने गर्दनको झुका,
क़त्ल होनेसे मुझे इक ज़रा इन्कार भी है।
हंस ने जाबजा ढूंढा मगर पाया न कहीं,
दहने कोताहमें देखो कहीं इक़रार भी है।

٣٦

کہین خجر ہے کہین نیزہ ہے تلوار بھي ہے
عشق ظالم ہے ستمگر ہے و خونخوار بھی ہے
اسکو چھیدو ذرا سوراخ کرو دیکھو سہی
اس کلیجہ مین کہین صورت دلدار بھي ہے
کوئي کہتا ہے جلا ہوتا ہے عاشق کا جگر
خاک ہونیکا کہین دیکھو تو آثار بھی ہے
درد بڑھتا ھے دوا کرتي نہین فائدہ کچھ
اے مسیحا تیري محنت کیا بیکار بھي ھے
کیون کہا تونے میرے سامنے گردن کو جھکا
قتل ہونے سے مجھے اک ذرہ انکار بھي ھے
ھنس نے جابجا ڈھونڈا مگر پایا نہ کہین
دھن کوتاہ مین دیکھو کہین اقرار بھي ھے

३७

ज़िंदगी ख़ाली गई हाथ न आया कुछ भी,
पचमेरा लाख मगर लुत्फ़ न पाया कुछ भी।
तूबियां जैसे लुभड़ती हैं ब मौज़े दरिया,
ऐसे बेहोश रहा होश न आया कुछ भी,
तान पूरा व पखावज़ व दहेला ताऊस,
साज़ मौजूद रहे पर न बजाया कुछ भी।
गुले रेहां गुले नस्रीन व गुले लाला देखो,
बाग़ में खिलते रहे मुझको न भाया कुछ भी।
हंस क्यों रोता है पछताने से अब होगा क्या,
फ़िक्र उस यारका क्यों दिलमें न लाया कुछ भी।

۳۷

زندگي خالي گئي هاتهه نه آیا کچهه بهي
پنچ مرا لاکهه مگر لطف نه پایا کچهه بهي
توبیان جیسے لگهڑتي هین به موج دریا
ایسے بیهوش رها هوش نه آیا کچهه بهي
تان پورا و پکهاوج و بهیلا طاؤش
ساز موجود رهے پر نه بجایا کچهه بهي
گل ریهان گل نسرین و گل لاله دیکهو
باغ مین کهلتي رهے مجهکو نه بهایا کچهه بهي
هنس کیون روتا هے پچهتانے سے اب هوگا کیا
فکر اوس یار کا کیون دل مین نه لایا کچهه بهي

३८

वादये वस्लको टाले वे लिये जाते हैं,
दिले गमदीदाको धोखा वे दिये जाते हैं।
क्या कहूं किससे करूं अब मैं शिकायत उनकी,
मुर्ग़ बेदानाको बिस्मिल वे किये जाते हैं।
शर्बते वस्ल पिलावें न पिलावें मर्ज़ी,
हमतो ख़ूने जिगर हर रोज़ पिये जाते हैं।
जुब्बए ज़री तो हज़ारोंही सिलाकर पहने,
अबतो हम जामए अफ़क़ार सिये जाते हैं,
हंस मरता है ये सुन करके हज़ारोंही रक़ीब।
क़ब्रसे उठ उठके वे देखो तो जिये जाते हैं।

۳۸

وعدۂ وصل کو ٹالے وے لیے جاتے ہیں
دل غمدیدہ کو دھوکا وے دیجاتے ہیں

کیا کہوں کس سے کروں اب میں شکایت اونکی
مرغ بیدانا کو بسمل وے کئےجاتے ہیں

شربت وصل پلاویں نہ پلاویں مرضی
ہم تو خون جگر ہر روز پئےجاتے ہیں

جبۂ زریں تو ہزاروں ہی سلا کر پہنے
اب تو ہم جامۂ افکار سیئے جاتے ہیں

ہنس مرتا ہے یہ سنکر کے ہزاروں ہی رقیب
قبر سے اوٹھ اوٹھ کے وے دیکھو تو جئے جاتے ہیں

३९

नामा बर नामा चला लेकेतो पछताने लगा,
इसकी सुनता नहीं वह देके करूंगा मैं क्या।
फ़ाड दूं जल्दीसे मैं इसको करूं दो टुकडे,
एक ज़ेरे ज़मीं औ इक अर्शेबरीं जावेचला।
नीचे जाकर के वह यूसुफ़ को जगा देवेगा,
वह अगर जाके उसे देवे तो टलजाये बला।
दूसरे से कहीं नफ़रत न करे अर्शेबरीं,
मैं तो जाऊं नहीं चाहे मेरा कट जावे गला।
हंस को नीयते क़ासिद पै यह शक होता है।
नामए ग़मको कहीं आग में देवे न ज़ला।

—⊛—

۳۹

نامه بر نامه چلا لیکے تو پچھتانے لگا
اسکی ستا نہین وه دیکے کرونگا مین کیا

پھاڑدون جلدي سے مین اسکو کرون دو ٹکڑے
ایک زیرزمین اک عرش برین جاوے چلا

نیچے جاکرکے وه یوسف کو جگا دیویگا
وه اگر جاکے اوسے دیوے تو ٹل جاوے بلا

دوسرے سے کہین نفرت نکرے عرش برین
مین تو جاون نہین چاہے میرا کٹ جاوے گلا

ہنس کو نیت قاصد پہ یہ شک ہوتا ہے
نامۂ غم کو کہین آگ مین دیوے نہ جلا

४०

मेरे गुलशनमें अब गुंचा निकलता है मगर मुर्दा,
नहीं पाती है बू पछता रही है रूहे अफ़सुर्दा ।
चिटख़ती हैं कहीं कलियां तो दिल मेरा चिटख़ता है,
मगर माने न मेरी इमतना दिले नाज़ पर्वर्दा ।
जलादूं बाग़ गर तक्लीफ़ बुलबुल को बहुत होगी,
चहकना जलसए रिन्दोंमें होजयेगा पज़ मुर्दा ।
अरे ओ बाग़वां अब छोड़दे तू फ़र्ज़ काम अपना,
तुझे हिम्मत नहीं औ दिल नहीं औ है नहीं गुर्दा
मुक़ीमे मानसर को क्या ज़रूरत बाग़ से हैगी,
मगर हम दर्दिये हमजिन्स से है हंस आज़ुर्दा ।

—●—

۴۰

مرے گلشن مین اب غنچہ نکلتا ہے مگر مردہ
نہین پاتی ہے بو پچھتا رہي ہے روح افسردہ

چٹختي هين کہين کلیان تو دل میرا چٹختا ہے
مگر مانے نہ میري امتناع دل نازپروردہ

جلا دون باغ گر تکلیف بلبل کو بہت هوگي
چہکنا جلسۂ رندون مین هوجا ویگا پژمردہ

ارے اوباغبان اب چھوڑدے تو فرض کام اپنا
تجھے همت نہین ودل نہین وہے نہین گزدہ

مقیم مان سر کو کیا ضرورت باغ سے هیگي
مگر هم دردئي هم جنس سے ہے هنس آزردہ

४१

चला अब मैं भी हूं मुल्के अदम को,
न रोको दोस्तो मेरे क़दम को।
दरे दौलत पै होकर दस्त बस्ता,
कहूँगा कुछ तुम्हारा भी सनम को।
रहे उश्शाक़ में फिरती मुनादी,
जो आवे यां सहे रंजो अलम को।
हुक्म उस शाह ख़ूबां का यही है,
पिवो ख़ूने जिगर को खाव ग़म को।
अगर है शौक़ मिलने का तुझे हंस,
सहा कर यार के जौरो सितम को।

—o—

۴۰

چلا اب میں بھی ہوں ملک عدم کو
نہ روکو دوستو میرے قدم کو

در دولت پہ ہو کر دست بستہ
کہونگا کچھ تمہارا بھی صنم کو

رہے عشاق میں پھرتی منادی
جو آوے یاں سہے رنج و الم کو

حکم اوس شاہ خوبان کا یہی ہے
پیو خون جگر کو کھاؤ غم کو

اگر ہے شوق ملنے کا تجھے ہنس
سہا کر یار کے جور و ستم کو

४२

दो-दिली दूर हुई दिलको मिलाया दिलसे,
पूछिये चलके असर इसका किसी कामिलसे ।
क्यों ये सूराख़ हज़ारों हैं बसीने ग़िरेवाल,
बार सदहा यह छिदा है निगहे क़ातिलसे ।
बाज़िये इश्क़में मेरी कि तेरी जीत हुई,
चलके इन्साफ कंरालो तो किसी आदिलसे ।
बारहा मैंने अजी राज़े मुहब्बत पूछा,
हल हुआ कुछ भी नहीं आलिमओ हम फ़ाज़िलसे ।
गर तुझे वस्ल का है शौक़ तो अए हंसस्वरूप,
सीखले ज़ुहदो रियाज़त तू किसी आमिलसे ।

۴۲

دودلي دور هوئي دل کو ملايا دل سے
پوچھئے چلکے اثر اسکا کسي کامل سے

کیون یے سوراخ هزارون هين بسينه غربال
بار صدها يه چهيدا هے نگہ قاتل سے

بازئے عشق مين ميري کہ تيري جيت هوئي
چل کے انصاف کرالو تو کسي عادل سے

بارها مين نے اجي راز محبت پوچها
حل هوا کچهه بهي نهين عالم وهم فاضل سے

گر تجهے وصل کا ہے شوق تو اي هنس سروپ
سيکهه لے زهد وریاضت تو کسي عامل سے

४३

यार को मैंने ख्वाब में देखा,
दुरे-तावां हुबाव में देखा।
बिस्मिली से वह यार राज़ी है,
ऐन राहत अज़ाब में देखा।
त्योरियां चढ़ के आंखें लाल हुई,
हुस्ने-तावां इताब में देखा।
सुहबते ख़ारे से हो रंगओ बू,
यह तआज्जुब गुलाब में देखा।
हंस ने अपने ख्वाब का मसला,
कुछ सुना कुछ किताब में देखा।

—❀—

۴۳

یار کو مین نے خواب مینں دیکھا
در تاباں حباب مین دیکھا

بسملي سے وہ یار راضي ہے
عین راحت عزاب مین دیکھا

تیوریان چڑہ کے آنکہین لال ہوین
حسن تابان عتاب مین دیکھا

صحبت خار سے ہو رنگ و بو
یہ تعجب گلاب مین دیکھا

ہنس نے اپنے خواب کا مسلہ
کچھہ سنا کچھہ کتاب مین دیکھا

४४

फिर किसी को अए मरीज़े इश्क़ दिल देना नहीं,
सर पै अपने याद रख रंजो महन लेना नहीं ॥
दिल वह न्यामत है, जिसे तुझको ख़ुदाने बख़्शदी,
इस तख़्तए शफ़्फ़ाफ़ पर फिर तुख़्मे ग़म बोना नहीं ॥
जिसने किसीको दिल दिया वह मुफ़्त में मारा गया,
दाना पानी से गया सुखे चैनसे सोना नहीं ।
भूलसे तुझ में कभी यह दाग़ पड जावे अगर,
तिसके सदमा सख़्तसे सुनलो कभी रोना नहीं ।
इस मजाज़ी दाग़ से हासिल हक़ीक़ी दाग़ है,
बे-बहा यह दुर है इसको हाथसे खोना नहीं
उस मजाज़ी पर है तुफ़ जिससे हक़ीक़ी हल न हो,
हंस के इस जुम्ले को दिलसे सुनो धोना नहीं ॥

۴۴

پھر کسیکو اے مریض عشق دل دینا نہین
سر پہ اپنے یاد رکھہ رنج و محن لینا نہین
دل وہ نعمت ہے جسے تجھکو خدانے بخش دي
اس تختۂ شفاف پر پھر تخم غم بونا نہین
جسنے کسیکو دل دیا وہ مفت مین مارا گیا
دانا پاني سے گیا سکھہ چین سے سونا نہین
بھول سے تجھہ مین کبھي یہ داغ پڑ جاوے اگر
تسکے صدمہ سخت سے سن لو کبھي رونا نہین
اس مجازي داغ سے حاصل حقیقي داغ ہے
بے بہا یہ در ہے اس کو ہاتھہ سے کھونا نہین
اوس مجازي پر ہے تف جس سے حقیقي حل نہو
ھنس کے اس جملہ کو دل سے سنو دھونا نہیں

४५

पैसा नामा

(मनोरंजन के लिये)

:0;

सखे पैसे ने प्रेम बिगाड़ा ।

जबलौं पैसा गांठ में प्रेम करे सब कोय,
गिरगा पैसा गांठ से फिर किसका को होय ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ १॥

बिन पैसा तिरिया नहिं बोले बैठि रहे मुख मोड़,
बेटा आप लड़ैं निशि वासर झगडा जोरम जोर ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ २॥

दूध दही मुख पान चुवावत जबलौं पैसा पास,
बिन पैसा देखोरे सजना ! छप्पर पर नहिं घास

सखे पैसे नैं प्रेम बिगाडा ॥३॥

पैसे मीत मिलैं बहुतेरे हँसि बोलैं दिन रात,
द्वार द्वार पैसे बिन डोलत कोऊन पूछत बात ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥४॥

घोडा हाथी महल अटारी सब पैसे के रंग,
बिन पैसा बेसुरा तान बेताल बजत मृरदंग।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ५ ॥

जब पैसा कमाय घर लावे सूर सपूत कहावे,
खाली हाथ घुसे जो घर में सीधा धक्का खावे।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ६ ॥

शाल दुशाला लाल पिरोजा दमकत चमकत अंग,
बिन पैसे की फटी पगडिया सकल साज बेढंग।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ७ ॥

दाख चिरौंजी लौंग सुपारी मुख दाडिम अंगूर,
जाके पैसा पास नहीं है ताके मुख में धूर।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ८ ॥

जब पैसा आवै है घर में सकल सिद्धि चलि आवैं,
बिन पैसे नहिं पण्डित मुल्ला वेद कुरान सुनावैं।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ ९ ॥

खोवा पूरी दूध मलाई सब पैसे के संगी,
बिन पैसा चूल्हा नहिं जलता सारी थाली नंगी।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाडा ॥ १० ॥

है जहान भूखा पैसे का पैसे की है आस,
हंस प्रेम का भूखा प्यारे पैसा रक्खो पास ।

सखे पैसे ने प्रेम बिगाड़ा ॥१३॥

—×—

سکھے پیسے نے پریم بگاڑا

جب لون پیسہ گانٹھہ میں پریم کریں سب کوے
کرگا پیسہ گانٹھہ سے پھر کسکا کو ہوے

سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

بن پیسہ تریا نہیں بولے بیٹھہ رہے مکھہ موڑ
بیٹا باپ لڑیں نت باسر جھگڑہ زورم زور

سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

دودہ دہی مکھہ پان چباوت جب لون پیسہ پاس
بن پیسہ دیکھورے سجنا چھپر پر نہیں گھاس

سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

پیسے میت ملین بہوکیرے هنس بولین دن رات
درد رسو پیسہ بن ڈولت کوني نه پوچهت باس
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا
گهوڑا هاتهی محل اٹاري سب پیسہ کے رنگ
بن پیسہ بے سرا تان بے تان بجت مردنگ
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا
جب پیسہ کماي گهر لاوے سورسپوت کہاوے
خالي هاتھ گھسے جو گهر مین سیدها دهکا پاوے
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا
شال دوشاله لال فروزه دمکت چمکت انگ
بن پیسہ کي پهٹي پگریا سکل ساز بیڈهنگ
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا
داکهه چرونجي لونگ سپاري مکهه داڑم انگور
جاکے پیسہ پاس نہین ہے تاکے مکهه مین دهور
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا
جب پیسہ آوے ہے گهر مین سکل سدهي چل آوین
بن پیسہ نہین پنڈت ملا وید قرآن سناوین
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا
گهووا پوري دوده ملائی سب پیسہ کے سنگي
بن پیسہ چولہا نہین جلتا ساري تهالي ننگی
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا
ہے جہان بہوکا پیسہ کا پیسہ کی ہے آس
هنس پریم کا بہوکا پیارے پیسہ رکھو پاس
سکھے پیسہ نے پریم بگاڑا

४६

मौत नामा

:0:

मौत हँसती है सर पै नचती है। देखें अब कैसे बुढ़िया बचती है।
फ़िक्र लाखों तरह के रचती है। रातदिन मुफ्त में वह पचती है॥
तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥१॥

हफ्तअक्लीमका हो शाहन्शाह। आसमां पर हों जिसकी हशमतो जाह।
हर तरह ऐशसे करे वह निबाह। मौत करदेगी पर उसे भी तबाह॥
तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥२॥

मलकुलमौत खुद नहीं मरता। गुर्ज़ व ख़ञ्जर से वह नहीं डरता।
ज़ेर शम्शीर सर नहीं धरता। मार कर अपना पेट है भरता॥
तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥३॥

موت نامہ

۳٦.
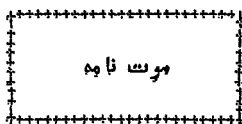
موت ھلستي ہے سر پہ نچتي ہے دیکھیں اب کیسے بڑھیا بچتي ہے
فکر لاکھوں طرح کے رچتي ہے رات دن مفت میں وہ پچتي ہے

تمکو لازم ہے سب سے ہو نیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے

ھفت اقلیم کا ہو شاھنشاہ آسمان پر ھوں جسکي حشمت و جاہ
ھر طرح عیش سے کرے وہ نباہ موت کردیگي پر اوسے بھي تباہ

تمکو لازم ہے سب سے ہو نیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے

ملک الموت خود نہیں مرتا گرز و خنجر سے وہ نہیں ڈرتا
زیر شمشیر سر نہیں دھرتا مار کر اپنا پیٹ ھے بھرتا

تمکو لازم ہے سب سے ہو نیارے
یاد مولا کرو مرے پیارے

ईंट पत्थर का इक जो घेरा है । सुर्खी चूना जहां लभेरा है ।
कौन कहता है घर यह मेरा है । घर नहीं मौत का बसेरा है ॥
तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥४॥

जुब्बह ज़र बफ्तके तले अचकन । शाल कश्मीरी ओढ़ो या अर्मन ।
जब करे मौत ज़ेरे ख़ाक दफ़न । साथ जावे न एक हाथ कफ़न ॥
तुम को लाज़िम है सब से हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥५॥

घी व मक्खन से तनको कर मोटा । पीलो शरबत अनार का घूंटा ।
काम आवें न गोलीओ टोंटा । मौत जब देवे सर पै इक सोंटा ॥
तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥६॥

हिफ्ज़ कर रखो तुम हदीस व क़ुरान । दरे मसजिद पै जाके देलो अज़ान ।
चाहे मन्दिरमें पढ़लो वेद व पुरान । मलकुलमौत पर न छोड़े जान ॥
तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥ ७ ॥

रहेकले तोपोंका लगावे ज़ोर । फौज इकट्ठी करे वह लाख करोड़ ।
ख़ुद वह रुस्तमसा क्यों नहो शहज़ोर । मौत लेजावे हाथ पांव मरोड़ ॥
तुम को लाज़िम है सबसे हो न्यारे,
याद मौला करो मेरे प्यारे ॥८॥

ابنیٹ پتھرکا اک جو گھیرا ہے
سرخی چونا جہاں لیپیرا ہے
گوں کہتا ھے گھر یہ میرا ہے
گھر نہین موت کا بسیرا ہے

تمکو لازم ہے سب سے ھونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

جبہ زربفت کے تلبے اچکن
شال کشمیري اوڑھو یا ارمن
جب کرے موت زیرخاک دفن
ساتھہ جاوے نہ ایک ھاتھہ کفن

تمکو لازم ہے سب سے ھونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

گھي و مکھن سے تن کوکر موٹا
پیلو شربت انار کا گھونٹا
کام آوین نہ گولی و ٹوٹا
موت جب دیوے سرپہ اک سوٹا

تمکو لازم ہے سب سے ھونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

حفظ کر رکھو تم حدیث وقران
درمسجد پہ جا کے دے لو اذان
چاھے مندر مین پڑھلو ویدو پران
ملک الموت پر نہ چھوڑے جان

تمکو لازم ھے سب سے ھونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

ڈھنکلے کو پہونکا لگاوے زور
فوج اکھٹی کرے وہ لاکھہ کروز
خود وہ رستم سا کیوں نہ ہو شہ زور
موت لیجاوے ھاتھہ پاوں مرور

تمکو لازم ھے سب سے ھونیا رے
یاد مولا کرو مرے پیارے

४८

दर्जा उल्फतका सुनाऊँ जिससे तुम धोका न खाव,
दिल जहांतक जो लगावे उससे उतनाही लगाव ।

तीन दर्जह की है यारी आक़िलों का क़ौल है,
एक नानी फिर ज़बानी तीसरी जानी बनाव ।

नानियों को नानदो अन्दर न आने दो कभी,
काम लेकर उन से अपना दर से अपने फिर भगाव ।

एक रत्ती क़न्द से शीरीं नहो आसार आब,
पानीका पानी रहै चाहे उसे कितना मिलाव ।

चादरे कोताह से छुपता नहीं सारा बदन,
टांग ख़ाली ही रहैं चाहे उन्हें कितना छुपाव ।

दूसरे जो हैं ज़बानी चोपड़ी बातें करें,
मीठी २ वैसे ही तुम भी उन्हें बातें सुनाव ।

रंग कच्चा देरतक ठैरे नहीं घुलजावे झट,
फ़ीका पड़जावे चहे तुम कितना ही गहरा रँगाव ।

कांचो हीरे को करो तुम चाहे कितना एक रंग,
बरसरे बाज़ार ये बिकते नहीं हैं एक भाव,

۴۸

درجه الفت کا سناون جس سے تم دهوکه نه کهاو
دل جهانک جو لگاوے اوس سے اوتناهی لگاو

تین درجه کي هے یاري عاقلونکا قول هے
ایک ناني پهر زباني تیسري جاني بناو

نانیونکو نان دو اندر نه آنے دو کبهي
کام لیکر اونسے اپنا درسے اپنے پهر بهگاو

ایک رتي قند سے شرین نهو اتار آب
پاني کا پانی رهے چاهے اوسے کتنا ملاو

چادر کوتاه سے چهپتا نهین سارا بدن
ٹانگ خالي هي رهین چاهے اونهین کتنا چهپاو

دوسرے جو هین زباني جوپڑي باتین کرین
میٹهي میٹهي ویسے هي تم بهي اونهن باتین سناو

رنگ کچا دیر تک ٹهرے نهین دهلجاوے جهٹ
پهیکا پڑ جاوے چهے تم کتنا هي گهرا رنگاو

کانچ وهیرے کو کرو تم چاهے کتنا ایک رنگ
بر سر بازارپے بکتے نهین هین ایک بهاو

जबकि सुर मिलता नहीं है ताल से बेकार है,
चाहें कितने ही सुरीले ख़ुशगुलू से गीत गाव।

फिर जो हैं जानी उन्हें तुम जान दो जल्दी करो,
दोनों फिर तुम एक हो उस यार के क़दमों में जाव।

इस मजाज़ी यार से हासिल हक़ीक़ी यार हो,
यारी ही के ईंट गारों से मकां अपना चुनाव।

याद रक्खो दिलमें अपने "हंस" का तुम यह कलाम
इस से जो ख़ाली हो ऐसे शाह के घर में न जाव।

—×—

جبکه سر ملتا نہین ھے تال سے بیکار ھے
چاھے کتنے ھي سریلي خوش گلوسے گیت گاو

پھر جو ھین جاني اونھن تم جان دو جلدي کرو
دونون پھر تم ایک ھو اوس یار کے قدمون مین جاو

اس مجازي یار سے حاصل حقیقي یار ھو
یاري ھی کے اینٹ گارون سے مکان اپنا چناو

یاد رکھو دل مین اپنے "ھنس" کا تم یه کلام
اس سے جو خالی ھو ایسي شاہ کے گھر مین نه جاو

—※—

रसोई नामा

४६

घर-घरमें सुबह होते ही चढती है रसोई,
फिर सामने यह आपके पडती है रसोई।
जब पेटके खन्दक़को यह भरती है रसोई,
चौथे तबक़की बात यह करती है रसोई॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़द्र है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़द्र है॥१॥

चेहरेको चमकदार बनाती है रसोई,
अर्शबरींकी राह बताती है रसोई।
वेदो क़ुराँ पुरान पढाती है रसोई,
कोसोंसे ब्राह्मणको बुलाती है रसोई

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़द्र है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़द्र है॥२॥

मुज्तहिद— महन्त, महात्मा (Religious Director)

लश्करके आगे आगे यह चलती है रसोई,
लडनेसे पहले फौजको मिलती है रसोई ।
धोके से कहीं आगमें बलती है रसोई,
सब शोर मचाते हैं, कि जलती है रसोई ॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोई की क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमे रसोईकी क़दर है ॥ ३ ॥

जर्मन व रूसको यह लडाती है रसोई,
हर एक क़िले पै तोप चढाती है रसोई ।
लाखों गलोंको रोज़ कटाती है रसोई,
लडनेके लिये बैंड बजाती है रसोई

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥ ४ ॥

जिस घरमें रसोई नहीं वह भूतका घर है,
जिस घरमें रसोई है वह मलकूतका घर है ।
जबरूतका नासूतका लाहूतका घर है,
गर घासका घर होवे तो याकूतका घर है ॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥ ५ ॥

नाज़िमकी निज़ामत है रसोईके लिये,
हाकिमकी सियासत है रसोईके लिये।
नवियोंकी खिलाफ़त है रसोईके लिये,
साहिब व सलामत है रसोईके लिये॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥६॥

एक रोज़ रसोई नहीं तन्दूरमें आवे,
रुस्तमकी रुस्तमीको मिट्टीमें मिलावे।
है यह मसीहसानी मुर्दोंको जिलावे,
जब पेटमें आवे तो तबक़ सात हिलावे॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥ ७ ॥

मरते हैं ये मजदूर रसोईके लिये,
हर एक है मजबूर रसोईके लिये।
करते हैं सब फितूर रसोईके लिये,
सब मुआफ़ है क़ुसूर रसोईके लिये॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी कदर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥ ८ ॥

हर शाहकी शाही भी रसोईपै ख़तम है,
हर मुर्ग़ वो माही भी रसोईपे ख़तम है।
औ यादे इलाही भी रसोईपै ख़तम है,
गर हो न रसोई तो सितम है जी सितम है ॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हर मन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥ ६ ॥

अब द्वारकापुरीमें आता है अन्नकूट,
पंडोंके आगे देखो ! रसोई ही की है लूट।
हिर्समें गर कमी हो तो आपसमें होवे फूट,
एक दूसरेकी थाली व लोढ़ोंको लेवे लूट ॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हरमन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥ १० ॥

महमानके आगे जो रसोई नहीं आवे,
लौटे नहीं वह रूठके घरको चलाजावे।
आबाद रहे वह जो रसोई लिये आवे,
हर सुबह व शाम 'हंस' को भरपेट खिलावे ॥

हर शाह व मुज्तहिदमें रसोईकी क़दर है,
हरमन्दिर व मस्जिदमें रसोईकी क़दर है ॥ ११ ॥
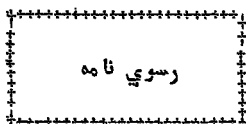
۳۹

———:0:———

گهرگهر مين صبح هوتے هي چڑهتي هے رسوئي
پهر سامنے يه آپ کے پڑتي هے رسوئي
جب پيٹ کے خندق کو يه بهرتي هے رسوئي
چولهے طبق کي بات يه کرتي هے رسوئي

هر شاه و مجتهد مين رسوئي کي قدر هے
هر مندر و مسجد مين رسوئي کي قدر هے

چهرے کو چمکدار بناتي هے رسوئي
عرش برين کي راه بتاتي هے رسوئي
بيد وقران پران پڑهاتي هے رسوئي
کوسون سے برهمن کو بلاتي هے رسوئي

هر شاه و مجتهد مين رسوئي کي قدر هے
هر مندر و مسجد مين رسوئي کي قدر هے

لشکر کے آگے آگے یہ چلتی ہے رسوئي
لڑنے سے پہلے فوج کو ملتی ہے رسوئي
دھوکے سے کہین آگ مین بلتي ہے رسوئي
سب شور مچاتے ہین کہ جلتي ھے رسوئي

ھر شاہ و مجتہد مین رسوئي کي قدر ھے
ھر مندر و مسجد مین رسوئي کي قدر ھے

جرمن و روس کو یہ لڑاتي ھے رسوئي
ھریک قلعہ پہ توپ چڑھاتی ھے رسوئي
لاکھوں گلون کو روز کٹاتي ھے رسوئي
لڑنے کیلئے بینڈ بجاتي ھے رسوئي

ھر شاہ و مجتہد مین رسوئي کي قدر ھے
ھر مندر و مسجد مین رسوئي کي قدر ھے

جس گھر مین رسوئي نہین۔وہ بھوت کا گھر ھے
جس گھر مین رسوئی ھي وہ ملکوت کا گھر ھے
جبروت کا ناسوت کا لاھوت کا گھر ھے
گر گھاس کا گھر ھوے تو یاقوت کا گھر ھے

ھر شاہ و مجتہد مین رسوئي کی قدر ھے
ھر مندر و مسجد مین رسوئي کي قدر ھے

ناظم کي فطامت ھے رسوئي کے لئے
حاکم کي سياست ھے رسوئي کے لئے
نبيون کي خلافت ھے رسوئي کے لئے
صاحب ر سلامت ھے رسوئي کے لئے

ھر شاہ و مجتہد مين رسوئي کي قدر ھے
ھر مندر و مسجد مين رسوئي کي قدر ھے

يکروز رسوئي نهين تندور مين آوے
رستم کي رستمي کو مٹي مين ملاوے
ھے يہ مسيح ثاني مردون کو جلاوے
جب پيٹ مين آوے تو طبق سات ھلاوے

ھر شاہ و مجتہد مين رسوئي کي قدر ھے
ھر مندر و مسجد مين رسوئي کي قدر ھے

مرتے ھين يہ مزدور رسوئي کيلئے
ھرايک ھے مجبور رسوئي کے لئے
کرتے ھين سب فتور رسوئي کيلئے
سب معاف ھے قصور رسوئي کيلئے

ھر شاہ و مجتہد مين رسوئي کي قدر ھے
ھر مندر و مسجد مين رسوئي کي قدر ھے

هر شاه کي شاهي بهي رسوئي په ختم هے
هر مرغ و ماهي بهي رسوئي په ختم هے
اور ياد الهي بهي رسوئي په ختم هے
گر هو نه رسوئي تو ستم هي جي ستم هے

هر شاه و مجتهد مين رسوئي کي قدر هے
هر مندر و مسجد مين رسوئي کي قدر هے

جب دوار کا پوري مين آتا هے انکوٹ
پنڈون کے آگے ديکهو رسوئي هي کي هے چهوٹ
حصه مين گر کمي هو تو آپس مين هوے پهوٹ
ايک دوسرے کے تهالي و لوٹونکو ليوين لوٹ

هر شاه و مجتهد مين رسوئي کي قدر هے
هر مندر و مسجد مين رسوئي کي قدر هے

مهمان کے آگے جو رسوي نهين آوے
لوٹے نهين وه روٹهه کے گهر کو چلا جاوے
آباد رهے جو رسوي لئے آوے
هر صبح و شام "هنس" کو بهر پيٹ کهلاوے

هر شاه و مجتهد مين رسوي کي قدر هے
هر مندر و مسجد مين رسوي کي قدر هے

❁ तत्सद्ब्रह्मणे नमः ❁

हंसहिंडोल

छठवीं मचकी

✻ श्री १०८ स्वामी हंसस्वरूपविरचित ✻

(अँग्रेजी काव्य POETICAL COMPOSITION)

PROSODY OR THE LAWS OF METRE.

There are four kinds of feet "Iambic," "Trochee," "Anapaest" and Dactyl.

An Iambic consists of one unaccented syllable followed by an accented one;

The Iambic metre is the prevailing measure or metre in English poetry, and is more extensively used than any other.

The number of Iambic feet may vary from two to seven.

In scanning a line two short syllables coming together are often pronounced as if they were one for the sake of the metre.

Sometimes in Iambic metre the alteration of the first foot is often a Trochee *i. e.* an accented syllable is followed by an unaccented one.

Sometimes two long or accented syllables come together instead of a short and long. Such a foot is called a *Spondee*; but this is not one of the feet recognised in English poetry.

The Iambic metre is not always perfectly carried out; that is, the alternation of an unaccented syllable with an accented one is not regularly observed.

Sometimes the first foot of an Iambic line consists of a monosyllable:— As

Stay, / the king / hath thrown' /
his war' / der down—

Shakespeare.

Sometimes in order to reduce two syllables to one—the begining, middle or end of a word is omitted. E. g. 'gainst for against, 'scape for escape, e'en for even, ta'en for taken, ope', for open, th' for the. This is known at the begining, as *apheresis*, in the middle *syncope*, and at the end *apocope*.

Sometimes the merging of two syllables into one, may be done with such words as alien, flower, familiar, amorous, murmuring and mouldering.

———(0)———

IAMBIC TETRAMETRE.

O Lord ! I bow thy Lotus feet !
Beneath their soles I seek a seat.
Expel my evils all aside,
For me a place of peace provide.

Adorn my heart, O Lord! with love,
Arouse my soul to world's above;
Remove my follies, make me wise,
Let thoughts of love in heart arise.

When low pursuits attack my brain
To fly afar, then shalt Thou train
The man who does not love Thee well,
Is sure to dwell in lowest Hell.

If I approach thy mercy's shore,
My dreadful deeds can vex no more;
I shall be Ever happy, blest,
And safely at Thy feet shall rest.

Let shine Thy beams of glory soon;
Enlight my heart alike full Moon;
Concede ! O Lord ! from Hansa's heart
Thy shining face may ne'er depart

IAMBIC TEMRATETRE.

O man ! proceed to lovely door—
For trifling things thou care no more.
If worldly charms entice thy heart
From them like, wisemen soon depart.

With holy thoughts comfort thy brain
Then Krishna's feet shalt thou attain.

Tho foes will fly, tho friends will come
Tho Bees of mischief will not hum.

If dreadful floods of banes o'erflow;
And winds of woe all sides do blow,
Thy patience Barque when 'bout to sink,
No fear when Krishna's eyes will wink.

He wipes His children's eyelids sore,
Be sure they feel the pain no more.
For this they thankful sounds should raise
And sing for e'er His ceaseless praise.

O Lord ! let shine Thy Light Divine,
On this benighted soul of mine !
Be kind to hear my chief complaint
That sensual objects make me faint.

Beguile my brain, defile my heart—
Be kind to move them all apart:
Poor Hans shall call upon his Lord
When Earth and Heaven turn to odd.

———:0:———

IAMBIC TETRAMETRE

(Park of love)

Behold ! around the Park of love,
How sweetly coos Affections 'ove
Where amities young and charming spring
Recalls the birds of beauteous wing.

The Cuckoos, Parrots, Nightingales,
Whose song the mongers of love regales.
The Cuckoo's melodious notes define,
The Parrot's blushing charms enshrine

The Nightingale's with fitful call
Enhance full joy in hearts of all;
Where Krishna's mercy's breezes blow
His lover's heart with mirth o'erflow.

The plants of hopes e'er seem fertile
The flowers of pious wishes smile.
Where shines Devotion's sparkling beam
Meanders genial merit's stream.

Kissing the pearly sands of peace
On both the sides of eternal ease.
Reside, O Hans, within this Park
No use to loose your time in cark.

IAMBIC PENTAMETRE

My mind, O Lord ! exults with joy extreme,
When hears in holy texts, Thy words supreme !
My sorrows fly too far and flies my pain,
Thy mercy chides them not to come again

My tongue, when freed from chats, recites Thy name
That soon removes the horrid vicious blame
The fools request their fames, their names and health.
Avert their face from Thee, ever lasting wealth

Thus they their life in vain to trouble expose
But wise do ever research their sweet repose;
And shun the worldly joys too fickle, frail
Endure with patience their destiny's bale—

So saints and angels seek Thy precious love,
Enjoy in full the bliss of Heaven above.

They drink the heavenly nectar fresh and pure
And eat eternal Manna sweet and sure.

Thy Hans, O Krishna, is wrapped with fatal snare,
For freedom wants Thy mercy's little share

IAMBIC PENTAMETRE

Be sure, my friend, thy saviour lives with you,
Observesyour Ins and Outs with keenest view.

The fools destroy their precious life in vain
In talks of pelf and thoughts of worldly gain--
The worldly pains disturbs their heart and mind !
No peace in brain, no happy life they find.

But they who call Almighty's name are brave
And ever prompt the heavenly path to pave.
Enjoy, deveted love that never faints,
With charming gifts, their souls Almighty paints.

Then rain the clouds of joy with rapid fall,
Refresh their plants of hope at every call.
True love controls their heart with mild repose,
No natures wild attack their wills oppose
O Lord ! the light of truth to me display
Strengthen thy Hans to choose celestial way.

IAMBIC HEPTAMETRE.

———:0:———

Adieu ! Adieu ! ye, illusive charms
My heart does crave no more;
My mind dislikes to hear your 'larms
Of risky rolling roar.

When freed from your enchanting traps,
Engaged with holy soul,
That rules the world and smiles on laps
Of saints to pious goal,

When man obtains the golden love
That soothes perplexing heart,
The gulls and guiles, the shames and blames
Like ill winds soon depart;

The hero gaining fields of love
With arms of patience firm.
Inherits gift of world above;
Confutes his mortal germ.

Terrestrial darkness cannot clad
His bright celestial light,
His heart becomes too mild, too glad,
And thirlls with full delight.

The Lord when hears such children's wail
Supplies His mercy's milk,
To dress them, He shall never fail
With shirts of holy silk.

O Hans, research the golden p
Secure and pure to walk,
Salvation sure and free from wrath
That all the prophets talk.

HEPTAMETRE.

Who can conceive Almighty's might
Beyond the reach of brain?
The Prophets gained spiritual light,
But couldn't the truth explain;

The mystics fail to bear in mind
The secrets ne'er revealed;
Philosophers are ashamed to find
The axioms all concealed.

Materia Prima hangs about
But lame to reach the aim;
The Atheists help their reasons out
Destroy their heavenly claim:

Astronomers full descriptions paint
Of nine refracted hues
To find the future life they feint.
The style of truth misuse.

Geographers length and breadth describe
Of countries round the Globe.
But heavenly length they never imbibe
Nor wear the virtuous robe.

Historians talk of war and tribe
But know not fields divine
In vain they various ranks inscribe,
In want of love repine.

Religions all apply full force
To prove each ot'hers Right
But see their partial motive's course
Becomes a source to fight !

The other lib'ral sciences fail
To dive in depths of truth,
O Hail ! Reformers ! Hail and Hail !
Your reasons do not soothe.

O Hans, be free from these zigzags,
Rejoice in Krishna's love,
And try to raise your heavenly flags
O'er all the Worlds above.

पुस्तक मिलने पता

मैनेजर—त्रिकुटीमहल चन्दवारा
मुजफ्फरपुर (बिहार)

Manager—Trikutimahal Chandwara
Muzaffarpur (Bihar)

तथा

मैनेजर—श्रीहंसाश्रम—
अलवर (राजपूताना)

Manager—Shri Hans Ashram
Alwar [Rajputana]